Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

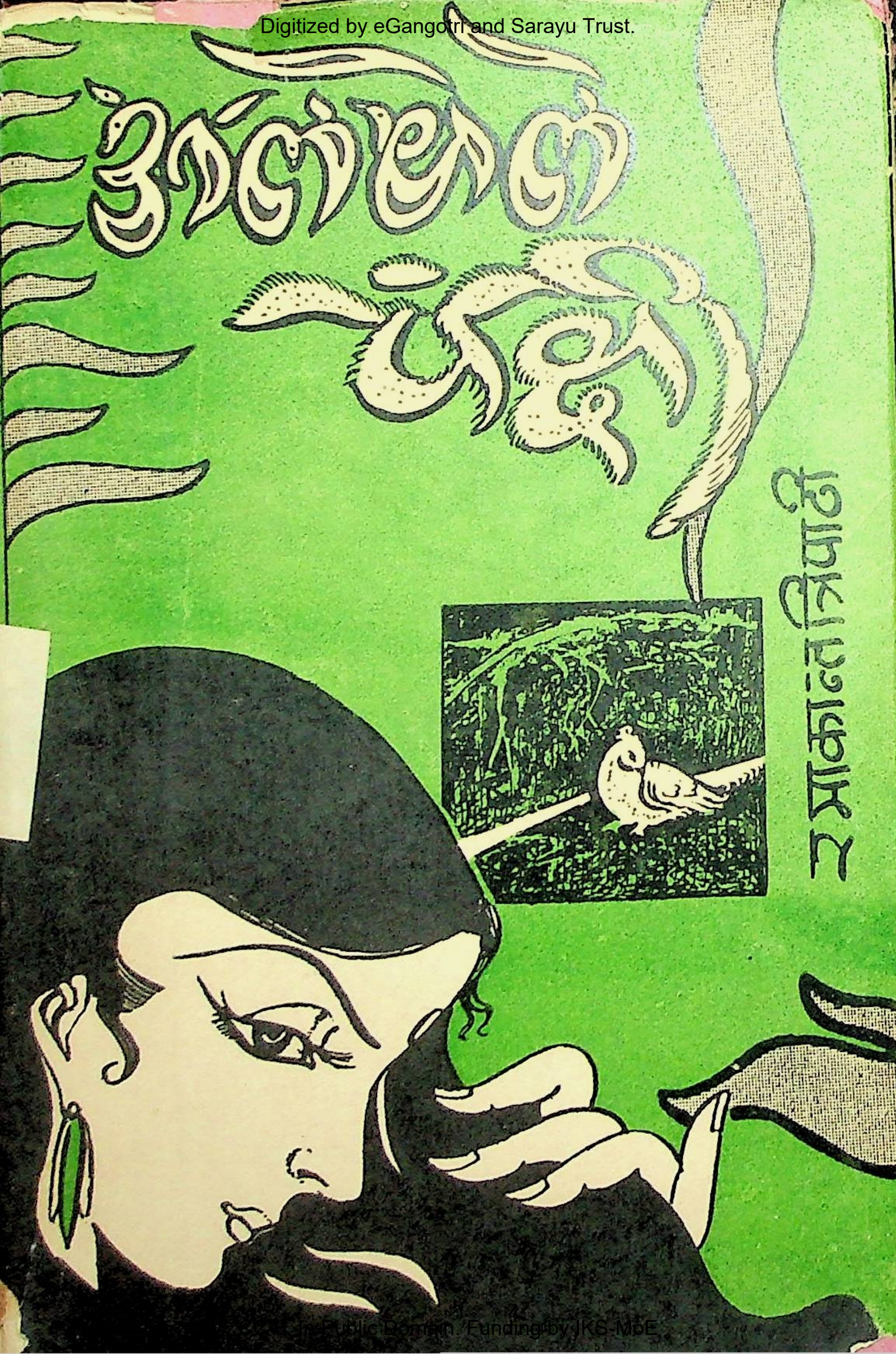

Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अलबेले पंछी

हिन्दी के कथाकारों की प्रसिद्ध एवं
शिक्षा प्रद सुन्दर कहानियों का संकलन

संकलन कर्ता
रमाकान्त त्रिपाठी

प्रकाशक
मंजु प्रकाशन
चौपटियाँ रोड चौक, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकाशिका
श्रीमती पुष्पा त्रिपाठी
मंजु प्रकाशन, चौपटियाँ रोड
लखनऊ।

सर्वाधिकार प्रकाशक के आधीन

प्रथम संस्करण--१९६४
मूल्य ३.५०

चित्रकार -- बी० पी० करुण

मुद्रक
हिन्द प्रेस,
फोन नं० २३०६१, दीन दयाल रोड,
लखनऊ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विषय-क्रम

कहानी	लेखक	पृष्ठ
१—पर्वतों की गोद में	के० डी० शर्मा	५
२—संस्कार	के० डी० शर्मा	१७
३—डाकू	के० डी० शर्मा	२६
४—मान मर्दन	कामता प्रसाद शास्त्री	३६
५—रधिया	कामता प्रसाद शास्त्री	४६
६—सीमा	रमाकान्त त्रिपाठी	५२
७—रोमाँस	कुमुद झिगरन	६५
८—अलबेले पंछी	के० डी० शर्मा	७८
९—जूतियों की बदौलत	जे० एन० कपूरिया	८८
१०—आगे न बढ़ियेगा	जे० एन० कपूरिया	९०
११ अच्छा सोचूंगा	जे० एन० कपूरिया	१०२
१२—नेफ़ा की ओर	कामता प्रसाद शास्त्री	१०४
१३—वीरों की आन	कामता प्रसाद शास्त्री ...	१०६
१४—गर्त की ओर	कृष्णदेव शर्मा	११८
१५—रजनी	उमा कान्त तिवारी	१३५
१६—परीक्षाफल या गोरखधंधा	कृष्णनारायण टण्डन	१४५
१७—टूटेतार दिल की मजार पर	रवीन्द्रनाथ बहोरे 'अज्ञात'	१४८

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकाशिका की ओर से

मैं इन सभी कलाकारों के सहयोग से अलबेले पंक्षी, नामक पुस्तक को हिन्दी साहित्य क्षेत्र में आने के लिए हर्ष व्यक्त करती हूँ। जिन लेखकों ने अपनी लेखनी से शिक्षा एवं भाव पटुता ओर रोचकता का पाठकों के लिए ध्यान रखा है। साथ ही कहानियां एवं सामाजिक हैं जिसे इतनी मनोरंजक शिक्षा पद कि पाठकगण स्वयम् पढ़कर ही निर्णय करेंगे।

इस पुस्तक की सहानुभूति के लिए हम पाठकों को हृदय से धन्यवाद देती हूँ।

व्यवस्थापक
रमाकान्त त्रिपाठी

प्रकाशिका
पुष्पा त्रिपाठी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पर्वतों की गोद में

सुख-दुख, धूप-छाँह तथा शीत-गर्म का साथ है ही। शीत-काल की ठिठुरन में ग्रीष्म के आगमन की प्रतीक्षा करते हैं। जैसे एक अत्याचारी राज्य के विनाश पर नवीन राज्य का स्वर्गिम स्वप्न आन्दोलित कर कर देता है। परन्तु वसन्त की उन खुशियों पर जेठ के मार्तण्ड की प्रचण्डता तुषारापात कर देती है। उत्तर प्रदेश का मैदान तो ग्रीष्म ऋतु में कुम्हार का आँवा बन जाता है। इस प्रदेश की राजधानी तो इन दिनों सूखी ही दिखाई देती है क्योंकि वकील, डाक्टर, मंत्री, सचिव तथा अन्य उच्च पदाधिकारी पहाड़ पर चले जाते हैं। मैं सोचता था कि आखिर वहाँ कौन-सा ऐसा आकर्षण है जो हमारे शासक अंग्रेज छोड़ गए हैं जिसने हमारे राष्ट्र-भक्त नेताओं को भी खींच लिया। दासता के युग में गला फाड़-फाड़ कर जनता के धन का अपव्यय पर्वतों पर करने वाले अंग्रेजों को गालियाँ देते थे। वे ठण्डे देश के निवासी थे परन्तु हमारे कर्णधारों ने उनसे भी आगे एक कदम बढ़ाया। वे नैनीताल तक ही सीमित थे। आज तो उनकी बैठकें, कान्फ्रेंस काश्मीर में होती हैं। मेरा भी ग्रीष्म-कालीन अवकाश था, सोचा अधिक नहीं तो पास नैनीताल ही चल कर देखूं उस अलौकिकता को जो हमारा लाखों रुपया अपनी गोद में खींच रही है।

लखनऊ से नैनीताल पहुँचा। चारों ओर ऊँची-ऊँची बर्फ की पर्वत मालायें तथा घने जंगल प्रकृति का अनुपम रूप लेकर अपनी ओर खींच रहे थे परन्तु नैनीताल में जाकर मैंने कुछ नहीं पाया। वहां प्रतिदिन शाम को फ्लेट पर टहलना तथा दिन भर बैठे रहना। यही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैंने देखा कि यह केवल भोग का स्थान है। बोटिंग, बालडांस, सुन्दरियों के साथ कार में बैठना यही धनी लोगों का काम था। सरकारी कर्मचारी तथा मंत्री सचिव जनता की पसीने की कमाई इस ठंडक में बहा रहे थे। शाम को जगमगाती विद्युत बत्तियां कृषकों और मजदूरों के रक्त की द्योतक थीं। वास्तव में यह स्थान प्रकृति नदी का स्थल न होकर व्यभिचार का स्थान बना हुआ है। दिन भर बैठा-बैठा यही सोचता और अपनी असमर्थता पर स्वयं ही लज्जित होता।

अन्त में मैंने स्वतन्त्रतापूर्वक स्वच्छन्द पक्षी की भांति प्रकृति की गोद में खेलने का निश्चय किया। मैं थोड़ा-सा सामान लेकर ऊपर की ओर चल दिया। सड़क से कुछ दूरी पर नीचे की ओर एक ग्राम के समीप एक निर्झर बह रहा था। चारों ओर ऊँचे शाल के वृक्ष थे। मुझे यह स्थान अत्यन्त रमणीक प्रतीत हुआ। उसी गांव की ओर पग बढ़ाये।

संध्या होने को थी। दिन भर की थकान से शरीर शिथिल हो रहा था। मैंने उसी गांव में कुछ दिन रहकर शान्त वातावरण में समय बिताने का निश्चय किया। गांव में बहुत थोड़े से मकान थे। लकड़ी तथा मिट्टी से बने वह मकान भी बहुत सुन्दर लग रहे थे। कवियों की वाणी इसी मनोरमता पर फूटी थी। जीवनका वास्तविक आनंद तो यही था। मन में आनन्द-विभोर होकर मैं बढ़ा चला जा रहा था। दिनकर दूर पहाड़ी के पीछे विश्राम करने जा रहे थे। उनकी स्वर्णिम रश्मियां बर्फीली चोटियों पर दूर तक पड़ रही थीं। पक्षी भी दिवसान की वेला में अपने नीड़ों को लौट रहे थे और मैं भी विश्राम की लालसा लिए बढ़ा चला जा रहा था। कब गांव में पहुँच गया पता भी नहीं चला विचारों की तरंगों में! वहाँ सामने ही एक-दो मंजिल का छोटा-सा मकान था। मैंने सुन रखा था कि पहाड़ी लोग किराए पर अपने मकान का भाग दे देते हैं परन्तु मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा। जब मैंने देखा कि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुझे देखते ही सारे घरों के किवांड़ बन्द हो गए, किसी ने बात तक नहीं की। मुझे उन लोगों की धृष्टता पर क्रोध भी आया। मैं तो समझता था कि पर्वतीय लोग बड़े ईमानदार और अभ्यागत के प्रति उदार होते हैं परन्तु यहां उसके विपरीत पाया। मैंने साहस करके सामनेवाले मकान का दरवाजा खटखटाया। कुछ देर तक कोई भी उत्तर नहीं मिला। परन्तु मेरे अधिक आग्रह पर द्वार-पट खुले। एक बूढ़ा जिसकी आयु लगभग ६० के ऊपर होगी कमर झुकाए हाथ में हुक्का लिए मेरे सामने खड़ा हो गया। वह मेरी ओर ऐसे घूर रहा था मानो मैंने कोई बड़ा अपराध किया हो। उसकी लाल आँखों में मैंने झांका तो घृणा और प्रतिकार की ज्वाला के दर्शन हुए। मैं भयभीत था। कुछ भी बोलने का साहस नहीं हुआ। मैंने अपनी गर्दन नीची कर ली। कुछ समय पश्चात् उसी ने नीरवता को भंग करते हुए प्रश्न-सूचक शब्दों में कहा :—

"बाबू यहाँ क्या लेने आए हो?"

मेरा कुछ साहस हुआ तुरन्त ही अनायास मुख से निकल गया: "मुझे कुछ आपकी सहायता चाहिए। मैं परदेशी हूँ यहांसे अपरिचित। और यहां के शान्त वातावरण में कुछ दिन व्यतीत करना चाहता हूँ।"

"यहां जगह नहीं मिलती तुम वापस लौट जाओ।"

"मैं किराया दूंगा।"

"यह मैं भी जानता हूँ!" उसके शब्दों में और भी कठोरता थी।

"आप नाराज क्यों हैं? एक परदेशी की मदद करना तो पुण्य का काम है और आप लोगों की तो बहुत प्रशंसा सुनी थी। मुझे केवल रात को सोने के लिए! थोड़ा-सा स्थान चाहिये, बस सारा दिन तो घूमता ही रहूँगा।"

"मैंने तुमसे कह तो दिया कि इस गांव में तुमको पीने के लिए पानी तक नहीं मिलेगा।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"लेकिन क्यों ?....मेरा अपराध ?"

"तुम देशी हो।"

परन्तु हम सब भारतीय हैं और अब तो विदेशों में भी ऐसा व्यवहार नहीं होता।"

"मेरा अधिक समय बरबाद मत करो ! ईश्वर के लिए जल्दी चले जाओ वरना...."

"वरना....क्या आप दंड देंगे।"

"वरना मेरी लड़की आ गई तो...."

मेरी कुछ समझ में नहीं रहा था, कि ऐसा व्यवहार अकारण तो हो नहीं सकता। एक सीधी-साधी जाति के लोगों से, जो नगर की चालाकी मक्कारी, बेईमानी तथा विलासिता से दूर, प्रकृति में पले हों उन लोगों से ऐसे व्यवहार की आशा कदापि नहीं की जा सकती थी परन्तु क्या कारण है, मेरी समझ में नहीं आ रहा था। उसी समय मेरी दृष्टि अनायास ही पीछे मुड़ गई। सिर पर लकड़ी का गट्ठर रक्खे हाथ में हंसिया लिये एक सुडौल शरीर की आकृति मेरे सम्मुख खड़ी थी। लम्बे कच उसकी कंचुकी पर सांप की भांति फुंकार रहे थे। उसके वक्षस्थल की धौंकनी उसके रोष का संकेत कर रही थी। उसकी आंखों से चिनगारियां निकल रही थीं। मेरा मन बैठा जा रहा था ईश्वर से प्रार्थना कर रहा था कि इस परेशानी को दूर करो। उसने गट्ठर को पृथ्वी पर पटक दिया उसी समय घर के अन्दर से एक नन्हीं बच्ची दौड़ती हुई आई और उस बाला से लिपट गई। उसका सुकुमार भोला मुख मुझे चुम्बन को विवश कर रहा था परन्तु वहां तो दृश्य ही उल्टा था। चोट खाई नागिन की भांति उसने उस बूढ़े से पूछा, "बापू यहां कैसे आए ? इनको अभी यहां से जाने को कह दीजिए।" "मैं तब से कह रहा हूँ, बेटी तेरे आने के पहले ही मैं चाहता था कि यह चले जाय।"

"अब आप देर न कीजिए। इनको अभी गांव से दूर नीचे तक पहुँचा दीजिए, मैं तब तक खाना बनाती हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रात होने को थी। कुछ ही देर में अंधेरा हो जाता। पहाड़ी स्थान पर चारों ओर वन्य पशुओं की कल्पना ही कंपा देती है। मैं एक ओर से सभी देवी-देवताओं को स्मरण कर गया। राम के सहायक हनूमान को तो बार-बार बुलाने लगा, परन्तु उधर कुछ भी प्रभाव न पड़ा। मुझे वापस चलना ही पड़ा। परन्तु जैसे ही मैंने पग उठाये एक सुरीली किन्तु कर्कश वाणी कानों में पड़ी।

"बापू अब रात हो गई है। मैं अभी खाना बना कर पड़ोस में जाकर सो जाती हूँ। आप इनको रात यहां काट लेने दें, लेकिन सुबह तड़के ही यह चले जायं। सुबह को कोहरे के बीच ही यह गांव के बाहर हो जांय जिससे इनके सफेद कपड़े और काले दिल की किसी लड़की पर परछाई भी न पड़े।" यह कह कर वह बच्ची को गोद में ले तीर की भांति अन्दर चली गई।

उसने खाना बनाया। एक थाली में वह बूढ़ा खाना लिये मेरे पास आया और थाली रखते हुए बोला—"आज रात को आप मेहमान बन ही गए तो जो रूखा-सूखा है, खा लीजिए।"

अब उसके स्वर में वह क्रोध न था मुझे भूख लगी है आपने आश्रय दिया उस अहसान को कभी नहीं भूलूंगा।" उसी समय बाहर चौके से आवाज आई—"थाली वापस ले आइये बापू। हमनेअपना फर्ज पूरा कर दिया।"

मुझे अपने व्यवहार पर ग्लानि हुई। मैं जानता था कि मुझे भूख लगी थी फिर भी एक लोकाचार। मैंने खाना शुरू किया। दिन भर की थकान के बाद उन रोटियों तथा घास के साग में जो स्वाद आया वह जीवन में कभी भी खाने को न मिला। खाना खाकर मैं लेट गया। सर्दी काफी थी। मैंने कम्बल ओढ़ लिया परन्तु नींद नहीं आ रही थी मैं अपने मन में अनेकों कारण सोच रहा था। इतना निरादर फिर मेहमान के प्रति कर्तव्य भी याद रहा परन्तु मेरी समझ में कुछ नहीं आ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रहा था। सुबह जल्दी ही उठ कर जाना था इसलिए सोना भी चाहता था। कब निद्रा देवी ने आ दबोचा नहीं जानता।

....

छम-छम-छम पायल की आवाज। कौन ? एक सुन्दरी बिलकुल वही इस मकान के स्वामी की बाला-सी परन्तु इतने सुन्दर वस्त्र धवल वस्त्र उसके कान्ति बदन पर ऐसे प्रतीत हो रहे थे माना भूल से किसी रजत मेघ ने सुधाकर को ढक लिया हो। हृदय में एक सिहरन-सी उठी। मेरी आंखें उसके मुख पर गड़ गईं। वह मेरे निकट आती गई, परन्तु अब उसके मुख पर वह क्रोध न था बल्कि गम्भीरता अवश्य थी। आकर वह मेरे सम्मुख खड़ी हो गई।

"परदेशी नाराज हो गए ?"

"नहीं तो मैंने तो बिलकुल बुरा नहीं माना !"

"सैर करने आए हो ?"

"हां !"

"आओ मेरे साथ चलो।"

"कहां ?"

"जहां मैं कहूँ।"

"परन्तु तुम्हारे पिता जी........"

"वह कुछ नहीं कहेंगे। आप डरें नहीं मैं अब आज़ाद हूँ।"

"कल तो तुमसे मुझे भय लग रहा था।"

"वह मैं नहीं थी मेरी छोटी बहिन थी 'रानी'।"

"तुम कौन हो ?"

"मैं वासन्ती हूँ, रानी की बड़ी बहिन।"

"लेकिन मैंने तो तुमको कल नहीं देखा।"

"मैं यहां नहीं रहती हूँ, जहां रहती हूँ वह जगह तुमको दिखा दूं, जल्दी करो। मैं यहां अधिक नहीं ठहर सकती।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैं उठकर स्वत: उसके पीछे पीछे चल दिया। कुछ ही देर में, मैं एक ऊंची पहाड़ी के पास पहुँच गया यह स्थान बहुत ही ऊंचा था, नीचे देखने में भय लगता था।

"देखो यह जगह है जहां मैं रहती हूँ।"

"किसके साथ ?"

"अकेली !"

"मेरी समझ में नहीं आता कि तुम ऐसी बातें क्यों करती हो, यह एक निर्जन स्थान है, अकेली रहने का मतलब ?"

"यह एक लम्बी कहानी है परदेशी, सुनोगे ?"

"यदि तुम चाहो........"

उसने एक गहरी सांस ली। उसका चेहरा लाल पड़ता जा रहा था। उसने एक ओर अपने दोनों पैर फैला रखे थे। वायु के झोंके से वक्षस्थल की चुनरी खिसक गई, शरीर की गठन मेरे मन को बलात् ही आकर्षित कर रही थी परन्तु मैं मनरूपी अश्व की लगाम खींचे था। उसी समय उसने अपनी कहानी सुनाना आरम्भ किया—

अब से पांच साल पहले तुम्हारी ही तरह एक परदेशी सफेद कपड़े पहिने यहां आया। मेरे बापू इस गांव के मुखिया हैं। वह मेरे ही दरवाजे पर पहुँचे। बापू ने उनको अपने घर ठहराया। कुछ दिनों तक मैं संकोच में ढंकी उनको खाना दे आती थी। मेहमान-निवाजी करना हम लोगों का फर्ज रहा है। मैं अपना फर्ज निबाह रही थी परन्तु उसका उन्होंने कुछ गलत अर्थ लगाया। एक दिन मैं उनको खाना खिला रही थी। खाना समाप्त होने पर रोज की तरह मैं थाली उठा कर चली। उस दिन बापू रानी को लेकर नैनीताल गए हुए थे। उन्होंने मेरा हाथ पकड़ लिया।

"यह आप क्या कर रहे हैं ?"

"जो करना चाहिए !"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"छोड़ दीजिए मेरा हाथ। आप मेरे केवल मेहमान हैं इससे ज्यादा समझना आपकी भूल है।"

"यदि न छोड़ूं तो........"

"मुझे लाचार होकर कुछ और कदम उठाना पड़ेगा!" मेरा चेहरा तमतमा उठा। मुझे उनका इस तरह से हाथ पकड़ना अच्छा न लगा। मैं सुना करती थी कि परदेशी लोग अपनी प्यास बुझाने के लिए हम जैसी भोली लड़कियों को भ्रष्ट करके चले जाते हैं। मैंने हाथ छुड़ाने की कोशिश की लेकिन उन्होंने हाथ नहीं छोड़ा। मैं अपने गुस्से पर काबू न पा सकी और मेरी पांचों उंगलियां उनके गालों पर जा पड़ीं।

"बस ? एक और !"

मैं वहां से भाग गई परन्तु जाने क्यों जाने के बाद मुझे बड़ा दुख हुआ। उनकी सहनशीलता पर मुझे आश्चर्य हो रहा था। उन्होंने एक शब्द भी नहीं कहा।

"फिर क्या वह चला गया ?" मैंने उत्सुकतापूर्वक पूछा।

"नहीं, दूसरे दिन मेरा साहस नहीं हो रहा था कि उसके सामने जाऊं। मैं अपने किए पर पछताती रही और आंसुओं को बहा कर जी हल्का करती रही। उन्होंने दोपहर का खाना भी नहीं खाया। शाम को लाचार होकर मुझे जाना पड़ा। मैं अपराधी की तरह खड़ी रही।

"मुझे माफ कर दो परदेशी। मैं गंवार जो ठहरी।"

"इसमें तुम्हारा क्या दोष ? यदि तुम इतनी रूपवती न होतीं तो क्यों मेरा हृदय नगर की युवतियों से हट कर तुम्हारी ओर आता।"

उनकी भाव-मुद्रा ने मुझे द्रवित कर दिया। मैं उनके पास बैठ गयी उनकी आंखों में आंसू छलक आए थे। मैंने अपने आंचल से उन को पोंछते हुए कहा--

"आप जो कुछ कर रहे हैं उसका अंजाम जानते हैं ?"

"अच्छी तरह !"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"क्या आप मुझे जीवन भर अपनी सेवा करने का मौका देंगे ?"

"मैं जन्म भर तुम जैसी देवी की पूजा करने में अपना सौभाग्य समझूंगा और फिर है ही मेरा कौन ? तुमको खोकर शायद मैं अपने को ही खो दूं।"

"ऐसा न कहिए !"

"फिर ?"

"मैं तैयार हूँ आप बापू से बात करें।"

"उनसे अभी बात करने की जरूरत नहीं। मैं शहर जाकर सारा प्रबन्ध करके लौटूंगा और एक सप्ताह बाद ही तुमको रानी बनाकर ले जाऊंगा।"

"पुरुष जो कुछ भी कहता है स्त्री उस पर पूर्ण विश्वास कर लेती है। वह जिसपर विश्वास करती है उसको अपना सब कुछ समर्पण कर देती है परन्तु पुरुष का हृदय शन्तरे की भांति होता है जो ऊपर से एक और अन्दर से खायें। परन्तु नारी का हृदय खरबूजे की तरह है। वह ऊपर से अलग भी हो परन्तु भीतर से एक और निर्मल होता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि पुरुष ने अपनी काम-पिपासा को शान्त कर नारी को उस मिट्टी के बर्तन की भांति फेंक दिया जो दूकान पर दूध पीने के पश्चात् फेंक दिया जाता है। मैंने उनकी बातों पर विश्वास कर लिया। मैं उनके एकाकीपन के दुख से सहानुभूति रखने लगी। मुझे यकीन था कि वह जो कुछ भी कह रहे थे सच है उनको देवता मानकर मैंने अपने आपको उनको समर्पित कर दिया। कुछ दिनों बाद वह मुझे ढांढ़स बंधाकर एक सप्ताह में लौटने का आश्वासन देकर चले गए।

यह कहते-कहते उसकी आंखें भर आईं, फिर एकाएक वह गंभीर हो उठी। मैंने प्रश्न किया।—

"फिर वह आया लेने ?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"नहीं ! एक, दो, तीन....करके कई सप्ताह बीत गए। मैं रोज छत पर चढ़कर उनके आने की बाट जोहती। जब बरसात भी बीत गई और जाड़ा आ गया फिर मैंने उनका आसरा छोड़ दिया किंतु उनके पाप का फल मेरे गर्भ में था उसे कहां छिपाती ? आखिर मैंने बापू से सारी बात कह दी। उन्होंने मेरी नादानी पर अफ़सोस भी जाहिर किया और मुझे लेकर लखनऊ पहुँचे। उन्होंने जो पता मुझे दिया वह गलत था। मैं कई दिन तक भटकती रही। एक दिन शाम को मैंने उन्हें एक सिनेमा हाल से निकलते देखा। मैं दौड़ी हुई खुशी में मस्त उनके पास पहुँची, लेकिन मेरे पैर अचानक ठिठक गए क्योंकि उनके साथ एक औरत और तीन बच्चे भी थे। मैं सब कुछ समझ गई किंतु फिर भी मैंने जीवन भर उनकी तथा उनकी पत्नी की आया बन कर रहने को तय कर लिया। उन्होंने मेरी ओर देखा और आगे चल दिये।

"बाबू जी, आपने मुझे पहचाना नहीं ?"

"तुम कौन हो ?"

"मैं हूँ बासन्ती ! याद है आपको जब आप पहाड़ पर आए थे तो मेरे यहां ठहरे थे ?"

उन्होंने कुछ रूखेपन से कहा–

"मैं तुमको नहीं पहचानता।"

उनकी बीवी ने पूछा—यह कौन है" "होगी कोई, मैं नहीं जानता। यह पहाड़ी लोग तो गले पड़ जाते हैं। मैं नैनीताल घूमने चला गया था देख लिया होगा इसने कहीं।"

मेरी आंखों में खून उतर आया। मुझसे नहीं रहा गया, मैंने कहा–

"आप मुझे नहीं जानते ?"

"नहीं !"

"बाबू जी यह पाप आप सबको ले बैठेगा जो आपने किया है एक भोली लड़की को फांस कर, उसे मरने के लिए छोड़कर यहां चले आए।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"चल हट !" कहकर वह चले गए। वहां पर जमा हो गई भीड़ मुझ पर हंस रही थी। वह कोई ऊंचे अफसर थे। पुलिस के एक सिपाही ने मुझे वहां से हटा दिया।

मैं बापू के साथ लौट आई। बापू मेरी वजह से बहुत दुखी रहते थे। कुछ ही दिनों में मेरे पाप की चर्चा सारे गांव में फैल गई। मैं कहीं मुंह नहीं दिखा सकती थी। गांव के मुखिया होने के नाते बापू को भी बहुत शर्म आ रही थी लेकिन वह मुझसे कुछ नहीं कहते थे। मां के मरने के बाद उन्होंने मुझे बड़े प्यार से पाला था। मैं उनका दुख समझती थी। मेरे सामने अब एक ही रास्ता था और फिर एक रात मैं चुपचाप घर से निकल कर यहां चली आई और इस पहाड़ी पर से............

"बासन्ती ! ठहरो बासन्ती............

'बाबू जी ?"

"ऐं आप ?"

"हां आप चौंक पड़े थे, कोई ख्वाब देखा होगा।"

"हां ख्वाब था या हकीकत यह नहीं जानता लेकिन आपकी लड़की तो अच्छी तरह है ?"

"हां !" इतने में वह भी मेरे निकट आ गई बिलकुल वही वैसा ही रंग रूप, चेहरा, वही मादकता, अल्हड़पन लिए यौवन हंस रहा था; परन्तु चेहरे पर थकान थी।

मैं हतप्रभ उसकी ओर देख कर फिर स्वप्न को स्मरण करने लगा। मैंने मुश्किल से पूछा, यदि "आप क्षमा करें तो एक बात पूछूं यदि ?"

"पूछिये !"

"यह बासन्ती कौन है ?"

"है नहीं, बल्कि थी।" यह कहते हुए उनकी आंखों में आंसू छलक आए।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैंने उनको अपना स्वप्न बताया तो वह अधिक न कह कर यही बोले "हां बाबू यह सब सच्चाई है। आप शहर के रहनेवाले दिन-रात औरत जात से खिलवाड़ करते रहतेहैं और हम कुदरत की गोद में पले भोले-भाले इन्सान आपके शिकार बन जाते हैं। वासन्ती भी ऐसे ही एक इन्सान की शिकार थी। उसने उसी पहाड़ी से कूद कर आत्महत्या कर ली थी लेकिन उसकी रूह अब भी भटक रही है। जब से वासन्ती मरी है हम लोग किसी भी देशी को गांव में रहने नहीं देते। आपको मजबूरी से रात को ठहराना पड़ा। अब सुबह होने को है चलिए मैं आपको गांव की हद के बाहरतक पहुँचा दूं। मैं तुरन्त ही वहां से चल दिया परन्तु मेरा मन वहीं था। काश उस शैतान के स्थान पर मैं होता............

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

संस्कार

"बहू, मेरी पूजा की धोती धो दी?" "हां माता जी, पूजा के कमरे में टांगी है!" "फलों की टोकरी कहाँ है?" कुछ तेज स्वर में प्रश्न हुआ।

"अभी लाई!" कहकर विमला शीघ्र ही रसोई घर से हाथ धो कर फूल देने चल दी, इतने में छोटे अरुन ने कहा:—

"भाभी मेरे नेकर पर प्रेस कर दिया?" "अभी नहीं, सुबह बिजली चली गई थी, मैं खाना बना रही हूं। तुम्हारे भाई साहब को बैंक जाना है, तुम अपनी दीदी से करा लो।"

"क्या? कहा दीदी से करालो वह बांदी है न इस घर की। तुझे तो सूरत देखने को लाए थे। हाय-हाय इस बहू ने तो लाज-शरम खो दी। ननद काम करती रहे और यह मटकती रहे।" ऊंचे कर्कश स्वर में पूजा गृह से आवाज आ रही थी "क्या बात है माता जी?" विनोद ने बाथरूम से निकलते हुए ही पूछा?

"बात क्या है खूबसूरत बीबी ढूंढ के लाया था न, जिस काम को कहो बहाना बनाती रहती है।"

"हां भइया, भाभी ने मेरे नेकर पर प्रेस नहीं किया, मैं स्कूल पहन कर क्या जाऊं?" अरुण ने रुआसे स्वर से कहा, इतने में मंजू भी आ गई। उम्र १८ के लगभग होगी परन्तु लाड़ प्यार के कारण स्वभाव १० साल की लड़की सा है। दिन भर मौज उड़ाती है। क्या मजाल जो एक गिलास पानी भी हाथ में लेकर कभी पिया हो अब तब! मां पर हुकूमत जताती पहले भी, अब उसका भाई एक दासी ले आया। विमला बेचारी सुबह से रात तक सबकी हुकूमत बजाती है परन्तु उसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बदले में ताने और झिड़कियां ही मिलती है। मंजू ने आते ही अपना स्वर मिलाया "भइया, भाभी लखनऊ की हैं न, नजाकत तो होना ही चाहिए, यह देखिए मेरी साड़ी कितनी खराब धोई।"

"क्या बात है विमला, मेरी समझ में नहीं आता तुम क्या चाहती हो ? यह गृहस्थी है चार काम करने हीं पड़ते हैं। फिर इस घर में तो कोई काम ही नहीं है सिर्फ दो समय खाना बनाना और ऊपरी काम लेकिन तुम्हारी रोज शिकायतें सुनने को मिलती हैं।" विनोद ने प्रश्नात्मक स्वर में कहा।

"जी मुझसे भूल हो गई. मेरी कल से तबियत ठीक नहीं थी। वैसे तो मैं जितना भी हो सकता है, करती ही रहती हूं अगर बीबीजी भी मदद करादें तो...." विमला ने अंगूठे से फर्श को कुरेदते हुए उत्तर दियो।

विनोद कुछ नम्र हुआ। उसी समय विमला को मलकिन सास ने भगवान को जल्दी से नमन कर अपनी लड़की का पक्ष लिया।

"देख विनोद मैं कहे देती हूँ कि मेरी बेटी के लिए बहू कुछ न कहे। जैसे तैसे तो ५ भाइयों के बीच एक बहिन है, उसको देख यह कुढ़ती रहती है।"

विनोद को बैंक जाने की जल्दी थी। उधर विमला भी रसोई घर में चली गई। बात यहीं समाप्त हो जाती परन्तु जैसे ही विनोद ने पहिनने की कमीज निकाली तो बटन गायब !

"विमला यहां आओ!" फिर एक तीव्र स्वर आया।"

"जी !"

"इसमें बटन कहां है ? इसे कैसे पहन कर जाऊं अगर तुमको इस घर में नहीं रहना है तो साफ क्यों नहीं कह देती ?"

"जी कल बीबी जी ने कपड़े मिलाए थे। रात में इतनी थक गई थी कि याद न रही। मैंने बीबीजी से कह दिया था कि अपने भइया की कमीज देख लेना।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"वह क्या तेरी नौकरानी है जो काम है बीबी जी करें आप यहाँ सिंहासन पर बैठी रहें।"

"बहू कान खोलकर सुन ले। मैं मंजू की सगी मां हूँ सौतेली नहीं। तेरी सौतेली मां थी, उसने तुझे नौकरानी बनाकर रक्खा होगा।" फिर वही कर्कश स्वर विमला के कानों में पड़ा। कोई क्या जाने विमला की सौतेली मां ने उसे सगी मां से बढ़कर माना। कभी भी विमला ने घर पर तिनका नहीं डुलाया। आज वही विमला सबका काम करती और ऊपर से झिड़कियाँ सुनती है। उधर रसोई घर से धुंआ निकलने लगा। जल्दी में वह रोटी तवे से उतारना भूल गई थी। अब भला उसकी मलकिन सास कब चूकने वाली थीं।

"देख बेटा, रोज इसी तरह अन्न बर्बाद होता है, जला-फुंका सबको खिलाती है। कहीं बड़े बाप की बेटी होती तो हम लोगों को निकाल बाहर किया होता।" विमला चुपचाप रसोई घर में जाकर काम में लग गई।

"सुनिये आज आप जल्दी आ सकते हैं?"

"क्यों कोई खास बात है?।"

"आज मेरा जन्म दिन है, चाहती हूं कि आज आपके साथ सिनेमा चलूं और उधर से ही एक साड़ी ले आऊं।"

विनोद की हंसी निकल पड़ी बोला, "तुम जानती हो विमला कि मुझे रोज ओवर टाइम करना पड़ता है। अगर न करूं तो घर का खर्च पूरा न हो। मैं नही आ सकूंगा, तुम चाहो तो माता जी को साथ लेकर जा सकती हो।"

विमला के हृदय में ऐसा लगा जैसे डी० सी० करेन्ट के तार पर हाथ पड़ गया हो। उसकी सभी आशाएं अरमान समाप्त हो चुके थे। विवाह से पूर्व सोचा करती थी एक वह होंगे और मैं। वह शाम को घर आया करेंगे और प्यार से पूछेंगे "विमला यह अखबार देखो बोलो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कौन सी पिक्चर चलना है ?" मैं नकारात्मक उत्तर दूंगी, नहीं मैं सिनेमा नहीं देखती। वह मुझे मनाएंगे। उनके पैरों की आहट पाकर मैं मौन किए बैठी होऊंगी। वह पीछे से एक हाथ से मेरी आखें मूंद कर पूछेगें "विमला बताओ मेरे हाथ में क्या है ?"

"मैं नहीं जानती !"

"यह देखो यह साड़ी पसन्द है, अगर नहीं भी हो तो मेरी पसन्द समझ कर ले लो। मैं तुम्हारी पसन्द का सूट बनवा लूंगा !" और मैं कुछ न बोल सकूंगी। किसी दिन वह एक बन्डल लाकर मेरे सामने रक्खेगे और कहेंगे "इसे खोलो देखो क्या है?" मैं उस बंडल को खोलने लगूंगी तो उसमें से निकलेगा ऊन और खिलौने। मैं शरमा कर दोनों हाथों से अपने नेत्र मूंद लूंगी।

परन्तु आज उसकी कलपना लुप्त हो चुकी थी। विमला के अरमानों का खून करने वाली वह स्वयं ही थी। उसने न जाने कितने रिश्तों को ठुकराया। कितने लड़कों की मजाक बनाई। कितने ऊंचे महल बनाए। उसे याद है कि एक दिन दर्पण के सामने कंघी कर रही थी, उसी समय उसकी सहेली बीना ने टोका "विमला आज यदि अलाउद्दीन तुमको इस दर्पण में देख लेता तो पद्मिनी को भूल जाता।"

कितना गर्व किया था उसने अपनी सुन्दरता का। वह सोचा करती थी कि जब वह अपने पति के साथ घूमने को निकला करेगी तो लोगों को उसने भाग्य पर ईर्ष्या होगी परन्तु काश....

हम समय की प्रतीक्षा करते हैं परन्तु समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। वह अविरल गति से परिस्थितियों को रौंदता हुआ चला जाता है। जो उसके साथ चलते हैं बढ़ते जाते हैं, जो नहीं चलते पिछड़ जाते हैं। विमला ने वैवाहिक जीवन की पाँच बरसातें काट दी। इसी प्रकार उसके मा॑ पाँच ग्रीष्म और शीत ऋतुएं भी आई परन्तु उसके जीवन में सभी ऋतुओं का समन्वय हो चुका था। उसकी आखें सदा ही बरसती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रहीं। उसका भयातुर मन सदा ही कोसता रहा और उसके मन में अरमानों की तेज़ लपटें उठती रहीं। इन पाँच वर्षों में उसके जीवन में कोई भी परिवर्तन नहीं आया। हाँ शरीर में अवश्य आ गया था। आज न उसके जीवन में कल्पना की चंचलता थी, न अठखेलियाँ। आज की विमला को कोई देखकर कह नहीं सकता था कि यह वही विमला है जो एक दिन रति का रूप लिए थी। आज वह दो बच्चों की माँ थी। जीवन में वैसे ही कौन फुरसत थी जो दो और मेहमान आ गये परन्तु विमला को यह वरदान न होकर अभिशाप थे। मंजू का विवाह हो चुका था। जब भी मंजू अपने पति के साथ आती तो विमला को अपने भूले दिन याद आ जाते। कितनी सुखी थी वह मंजू जिसका पति उसे इतना चाहता था। जब वह अपने पति के साथ आभूषण पहनकर चलती तो उसका पति कहता "अपनी भाभी को ले लो।" तुरन्त आवाज आती—"तुम जाओ बेटा बहू को घर पर काम है।" और विमला मन मसोसकर दिल ही दिल रोकर रह जाती।

वह जानती थी कि घर पर एक की कमाई से खर्चा पूरा नहीं पड़ता इसलिए उसने पढ़ने की इच्छा प्रकट की थी परन्तु विनोद ने साफ कह दिया था "मैं कुछ नहीं जानता माता जी से पूछ लो यदि वह आज्ञा दे दें तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है।" परन्तु विमला जानती थी कि उसकी सास उसे क्या उत्तर देती।

दोपहर का समय था। विनोद बैंक गया हुआ था। बच्चे सो गये थे और विमला की सास पड़ोस के परोजन में गई थी। विमला चुपचाप पलंग पर लेटी अपनी डायरी के पन्ने पलट रही थी। एक एक घटना चलचित्र की भाँति उसके मस्तिष्क पटल पर आ रही थी। कितना अल्हड़ जीवन था उसका? अपनी माता का प्यार न पा सकी परन्तु विमला की सौतेली माँ ने उसे उसका अभाव न महसूस होने दिया। वह सदा स्वयं घरका सारा काम करती थीं विमलाको कभी किसी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कामके लिए कहतीं तो उसके पिताजी रोक देते "खबरदार जो लड़कीसे कोई काम करवाया जितना कर सकती हो कर लो।" "लेकिन जिसके घर जायगी वहां करेगी या नहीं ?" माँ कभी चिढ़ने को कह देतीं।

विमला अपने नटखट स्वभाव को नियंत्रित न रख पाती कह ही बैठती "फिक्र न करो मम्मी मैं जहाँ जाऊंगी वहाँ काम ही न होगा होटल से खाना मंगा लिया करूंगी।"

जब कभी वह माता पिता को शादी की चिंता करते देखती तो तपाक से कह देती "बाबू जी आप चिंता न करें, जिसकी सौ बार अटकेगी इस दरवाजे पर आयेगा।" उसके पिता जी उसकी सुन्दरता देख कर सराहते, एक बार किसी ने दहेज मांगा जिसको देने में वह असमर्थ थे तो उन्होंने यही कहा था "मेरी लड़की इतनी सुन्दर है उसे रिश्वत देकर नही ब्याहूँगा।" विमला को याद आया कि उसको पाने के लिए एक महाशय ने कितने चक्कर काटे थे और कितना प्रलोभन दिया था परन्तु विमला तो कुछ और ही स्वप्न देख रही थी। उसे अपने पर गर्व था परन्तु आज वह क्या है। पांच वर्ष में ही उसके मुख का सौंदर्य तेज समाप्त हो गया। हिरनी की भाँति उछलने वाली विमला आज पल-पल पर पराधीन है। कौन है उसकी पीड़ा सुननेवाला और किसके आगे रोये अपना दुखड़ा क्योंकि उसने स्वयं ही यह सम्बन्ध स्वीकार किया था। उसे स्मरण हो आया कि किस प्रकार वह राधा के ऊपर हंसी थी। राधा उसकी सहेली थी, उसने एसा संबंध किया जिसे समाज अच्छा नहीं समझता। कितनी मजाक बनाई थी उसने राधा की उसने पूछा था "तुमको मालूम है उनके..."

"हां मैं सब कुछ जानती हूँ।"

"फिर भी तुम तैय्यार हो।"

"यह पूर्व जन्म के संस्कार होते हैं विमला। कौन अपना अहित सोचता है फिर भी हित में अहित और अहित में हित निहित रहता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भविष्य के गर्भ में क्या है कोई नहीं जानता फिर भी हमको भाग्य के सहारे छोड़ देना पड़ता है। भरा घर खाली हो जाता है और खाली भर जाता।" परन्तु विमला को उस दिन राधा की मूर्खता पर हंसी आई थी और ताने के रूप में कह ही दिया था "आगे कुछ भी हो लेकिन जिन्दा मक्खी कोई नहीं निगल सकता।" इसी प्रकार विचारों में डूबी अपने अतीत में खोई वह कब सो गई पता नहीं लगा।

* * *

विमला शाम का खाना पका रही थी उसी समय अरुन ने आकर पुकारा "भाभी जी कोई आया है।" विमला ने आंटे के हाथ धोकर आंचल से पोछे और बाहर आई देखा राधा हाथ में मनीबेग हिलाती इधर उधर देख रही थी। विमला को देख कर उससे लिपट गई "ओफ़ यह क्या हालत बना रक्खी है। तुम इतनी बदल गई, मैं तो पहचान भी न सकी।"

"हां राधा समय ही ऐसा है जब मैंने स्वयं अपने को नहीं पहचाना तो दूसरे क्या पहचानेंगे। लेकिन तुम यहां कैसे; आओ ? बैठो।"

"नहीं विमला फिर कभी आऊंगी। अभी एक इंगेजमेंट है। अभी मैं लखनऊ गई थी। तो चाची से तुम्हारा पता लेती आई। उन्होंने तुम्हारे बारे में सब कुछ बता दिया था, वह स्वयं दुखी हैं।"

"यह सब तकदीर का खेल है, तुम तो कहती थीं न, कि पूर्व जन्म के संस्कार होते हैं। खैर छोड़ो इन बातों को यह बताओ यहां कब से हो ?"

"मुझे दिल्ली में तीन साल हो गये। तुम्हारे जीजा जी पी० एच० डी० करने के बाद यहां एक कालेज में प्रोफेसर हो गए हैं।"

"पहिले तो तुम इलाहाबाद गईं थी ?"

"हां, लेकिन वहां से कुछ महीने बाद यहां आ गए।"

"कहो कैसे समय कटता है ?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"बड़े मजे से। तुम जानती हो उनको पढ़ाई का बहुत शौक है। उन्होंने मुझे एल० टी० करा दिया और मैं भी यहां करौल बाग के एक कालेज में पढ़ाती हूं, घर पर मक्खी मरने से तो अच्छा ही है समय भी कट जाता है और पैसा भी मिल जाता है।"

"और क्या अभी तक ऐसे ही हो!" विमला के मुरझाये चेहरे पर एक बारगी ही बचपन की चंचलता झर पड़ी।"

"नहीं एक बच्ची भी है, दो साल की, घर पर नौकर उसको रखता है! तुम कभी जीजा जी के साथ आना यह है मेरा पता"—कहते हुए राधा ने एक कार्ड दे दिया। आज विमला को ऐसा लग रहा था मानों उसकी सारा परिवार मिल गया हो। शादी से केवल एक बार घर गई थी चार साल हो गये किसी ने कहीं भेजा। घर में चिट्ठी सेंसर हो कर ही उस तक पहुँचती है इसलिए उसमें सिवाय राजी खुशी के कुछ नहीं होता।

राधा को जाने की जल्दी थी। उसने इधर उधर देख कर पूंछा। "जीजा जी कहां हैं?"

"वह अभी बैंक से नहीं लौटे हैं!"

"अब तक, अब तो सात बजा है?"

"हां वह देर से आते हैं।" राधा सब कुछ समझ गई। वह विमला की गुप्त स्मतियां जाग्रत करना नहीं चाहती थी। उसी समय विमला की सास भी आई। राधा ने उनको प्रणाम किया "जीती रहो बेटी कहां से आई हो?"

"यहीं रहती हूं पहाड़ गंज में। विमला मेरी बचपन की सहेली है। हम दोनों एक दूसरे को बहन की तरह समझते हैं।"

सुनते ही विमला की सास का सारा शरीर भुन गया. वह कभी पसंद नहीं करती थी कि विमला का कोई भी संबंधी उससे मिले फिर फिर भी ऊपर से दिखावा करती हुई बोली—"यहां कबतक खड़ी रहोगी जाओ बैठकर बातें कर लो। बहू जा खाना मैं बना लूंगी।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राधा ने रुख पहिचान लिया विमला पर उसे तरस आ रहा था। उसने एक मिनट भी वहां रुकना ठीक न समझा, उसी समय विमला के दोनों बच्चे भी आ गए। विमला ने उनसे कहा "बेटा नमस्ते करो मौसी जी को।"

बच्चों ने नमस्ते किया। राधा ने पाँच रुपये का नोट बच्चे को मिठाई के लिए विमला की सास को दिया जिसे उन्होंने दो एक बार मना करने के बाद रख लिया।

राधा नमस्ते कहकर चल दी। विमला के नेत्रों में दो बूंद आंसू झलक पड़े और राधा के यह शब्द उसके कानों में गूंज रहे थे विवाह पूर्व जन्म का संस्कार होता है विमला।"

——

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

डाकू

न्यायलय का कमरा खचाखच भरा था। कमरे के बाहर भी काफी भीड़ थी। उसी समय पुलिस के घेरे में कुछ बन्दियों को लाया गया। ये बन्दी वे विद्रोही थे जिन्होंने कुछ समय पूर्व आचार्य विनोवा के सम्मुख आत्म समर्पण किया था। न्यायलय के कमरे में उनको लाकर खड़ा किया गया। उनमें मुख्य अभियुक्त का नाम 'राना' था वह अपने दल का सरदार था। आज उसी के अभियोग की सुनवाई हो रही थी। सरकारी वकील ने न्यायधीश के सम्मुख अभियोग पत्र पढ़ते हुए कहा—

"योर अनार! राना के ऊपर अनेकों डाकों, हत्याओं तथा लूट के अभियोग हैं जिनमें मुख्य ये हैं:—

१. राना ने डाकू का जीवन शुरु करने से पहले एक ठेकेदार श्री.... की हत्या की और फरार हो गये।

२. इस हत्या के बाद उसने अपना गिरोह बनाया और चम्बल की घाटियों में रहने लगा। इसके बाद उसने एक सबइन्स्पेक्टर....को गोली मारकर हत्या कर दी।

३. राना ने....की रात को लाला...के घर में डाका डाला और लाला तथा उनके पुत्र की हत्या कर दी।

४.....की रातको राना ने....नदी पर बननेवाले पुल के समीप इंजीनियर....के घर डाका डाला और कई हजार का माल लूट कर ले गया।

५. ....तारीख को दिन के समय राना वेष बदल कर आगरा अस्पताल में आया और वहाँ से अपनी बहन की बीमारी का बहाना बनाकर डा० ....को ले गया। रास्ते के जंगल में राना ने डा० ....की हत्या कर दी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

६. ....की रात को राना अपने साथियों सहित....तहसील के प्रमुख कार्यकर्त्ता....एम० एल० ए० के घर में घुसा। उसने कई हजार की सम्पत्ति लूटी और उसके लड़के का अपहरण किया।

७. ....की रात को राना के गिरोह में तथा डिप्टी .... के नेतृत्व में गये पुलिस दस्ते में गोली चली जिसमें एक सिपाही....मारा गया तथा दो डाकू....मारे गये, राना बच निकला।

८. राना ने अपने बहनोई श्री ....की हत्या कर दी और स्वयं अपनी बहन को विधवा बना दिया।

इसके अलावा और भी अनेकों संगीन जुर्म राना और उसके साथियों के विरुद्ध हैं इस लिए योर आनर! मैं अदालत से प्रार्थना करता हूँ कि राना जैसे क्रूर 'बेरहम' हत्यारे को मौत से भी ज्यादा कड़ी सजा अगर हो तो दी जाय।

इसने न जाने कितनी माँओं के पुत्र छीने, कितनों का सिन्दूर मिटाया, कितने लोगों को भिखारी बना दिया, कितने बच्चों को अनाथ बना दिया। राना इन्सानियत के नाम पर कलंक है!" कहते हुये सरकारी वकील अपने स्थान पर बैठ गया।

लोगों ने देखा कटहरे में एक लम्बे कद का, बड़ी बड़ी काली मूछें, गठा बदन तथा सिंह की सी छाती ताने एक व्यक्ति खड़ा है उसके चेहरे पर मुस्कराहट थी, मौत से खेलने वाला भला क्या डरता? चपरासी ने राना को शपथ दिलाई उसी समय जज साहब ने राना से पूछा—

"राना वकील सरकार ने जो अभियोग तुम्हारे ऊपर लगाये हैं तुमको उसकी सफाई में कुछ कहना है।"

राना ने सिर ऊपर उठाया "मैं कुछ कहना नहीं चाहता क्योंकि मैं जानता हूँ कि जो अपराध मैंने किये हैं उनके लिए आपके विधान में दण्ड नहीं। मैं मौत का आलिंगन करने को तैय्यार हूँ फिर भी मरने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से पहले अपने लिए नहीं बल्कि मुझ जैसे नौजवानों के लिए मैं कुछ कहना चाहूँगा जो मेरी तरह नरक के कीड़े की मौत मरते हैं।"

"तुमको अपने ऊपर लगाये अभियोग के विषय में कुछ कहना है ?"

"हां !"

"क्या यह सच है कि तुमने ठेकेदार....की हत्या की ?"

"हां सच है।"

"तुमने ऐसा क्यों किया ?"

"जज साहब, मैंने अपने जीवन में जघन्य अपराध किये, परन्तु मेरी आंखों में एक आंसू भी नहीं आया। जीवन के लिए गिड़गिड़ाते लोगों पर मैंने कभी रहम नहीं खाया परन्तु आज मुझे अपनी गाथा स्वयं सुनाते आंसुओं का सामना करना पड़ रहा है। उसमें आप मेरे दुर्बलता न समझें, जज साहब। डाकू पैदाइशी नहीं होते, डाकुओं की कोई जाति नहीं होती, जिस तरह जजों की, वकीलों की तथा डाक्टरों की कोई जाति नहीं होती वह बनाये जाते हैं। इसी तरह हम भी डाकू बनाये जाते हैं यह जरूरी नहीं कि डाक्टर का पुत्र भी डाक्टर ही हो, उसी तरह यह भी जरूरी नहीं कि डाकू का पुत्र डाकू ही हो। मैं भी एक उच्च ब्राह्मण वंश में जन्म लेकर अपने भविष्य को बनाने की आशायें लेकर चला। स्वतन्त्रता मिलने के बाद हम लोगों ने आशा की कि हमारा देश ऊपर उठेगा, हमारा प्रदेश जहां दूर-दूर तक कोई विद्यालय नहीं था अब भी उपेक्षित रहा। सरकार ने इस प्रदेश को डाकुओं का प्रदेश घोषित कर रक्खा है उसने हमें मारने के लिये पुलिस पर करोड़ों रु० खर्च किये हैं लेकिन हमारी दशा सुधारनेके लिए क्या किया ? हमारे बच्चों के लिए क्या किया रावण के सर की तरह एक डाकू को मारनेपर दूसरा पैदा हो जाता है लेकिन नाभि में अमृत को सोखने का प्रयत्न नहीं किया गया। आप यदि उस प्रदेश में जाकर देखें तो समझ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सकेंगे कि हम लोग किस तरह अपना जीवन बिताते हैं। दो जून सूखी रोटी भी नहीं मिलती। आजादी के बाद सारी दौलत गांवों से खिंच कर शहरों में जा रही है। कर में लिया रुपया पानी की तरह बहाया जा रहा है। लेकिन पिछड़े इलाकों की ओर ध्यान भी नहीं दिया गया।"

"हम सिर्फ यह जानना चाहते हैं कि तुमने ठेकेदार की हत्या की।"

"यह सब उसी का प्रसंग है हत्या करने का कारण क्या था यह भी तो समझिये। मैं डाकू हूँ, ठीक है। परन्तु मैंने सिर्फ डाकुओं को ही मारा है। लूटा है। अन्य नागरिकों पर हाथ भी नहीं उठाया। आपके सरकारी वकील ने जो अभियोग लगाये हैं सभी सही हैं परन्तु मैं अपने को दोषी नहीं मानता! मैंने लूटने वालों को लूटा है कोई पाप नहीं किया मैंने जीवन में यदि हत्या की है तो इन लोगों ने हजारों को मारा है उनके लिए आपका कोई कानून नहीं। सुनिये मैंने ठेकेदार की हत्या क्यों की ?

ठेकेदार ने हमारे प्रदेश में....नदी पर पुल बनाने का ठेका लिया था यह वहीं रहते थे। हमारे यहां के लोग मजदूरी करके अपना पेट भरते थे। मेरा बाप भी वहीं पर मजदूरी करता था उसी के साथ मैं भी जाने लगा। ठेकेदार मेरे काम से प्रसन्न था। उसने मुझे अपने विश्वास पात्रों में ले लिया! मैं सदा उसी के साथ रहता था लेकिन जो कुछ मैं देखता था मेरी जवानीका रक्त उसे सहन नहीं कर पाता था। ठेकेदार के डेरे पर रोज नई लड़कियां लाई जाती थीं जो चन्द चांदी के टुकड़ों पर अपना सर्वस्व दे जाती थीं ये काम ठेकेदार के दलालों द्वारा होता था। ठेकेदार के कैम्प में शाम को ओवरसियर, इंजीनियर तथा अन्य अधिकारी भी आते, मदिरा का दौर चलता और रात के अंधेरे में भारत में सीता कहलाने वाली देवियों का सतीत्व लूटा जाता। मैंने देखा कि हमारे ही पैसे से हमारी ही लाज लुट रही है। ठेकेदार सीमेंट तथा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लोहे को ब्लेक में बेंच देता तथा सीमेंट के स्थान पर बालू का प्रयोग होता। लाखों रुपए का सरकार को धोखा दिया जाता। ठेकेदार और अधिकारी मिलकर सरकारी पैसे का अपव्यय करते और सरकार को लाखों रु० का धोखा देते थे। क्या ये डाकू नहीं थे ? एक ओर एक जून पेट भरने के लिए लाज लुट रही हो दूसरी ओर पैसेको बौछार हो रही हो यह मुझसे सहन न हो सका उन्हीं दिनों एक घटना ऐसी हो गई कि जिसने मुझे नियंत्रण में न रहने दिया। एक रात को ठेकेदार के दलाल एक ऐसी लड़की को लाये जो मेरी मंगेतर थी। उसको यह लालच दिया गया कि यदि ठेकेदार से मिल ले तो वह इतने दयालु हैं कि मेरी तन-ख्वाह बढ़ा देंगे वह बेचारी चली आई; मुझे ठेकेदार ने कहीं अन्यत्र काम से भेज दिया परन्तु मुझे सन्देह हो गया अत: मैं वहो बाहर छिप गया। रात को मैंने अंदर से चीखने की आवाज सुनी। देखा ठेकेदार जबरदस्ती मेरी मंगेतर की लाज लूटने का प्रयत्न कर रहा था, वह शराब के नशे में था मैंने उसे सावधान किया पर उसने पिस्तौल उठा ली। अपनी जान तथा एक नारी की लाज खतरे में देख कर मैंने साहस से काम लिया। मैं बाहर चला गया और पीछे से आकर मैंने ठेकेदार के सिर में एक फावड़ा मारा जिसकी चोट से उसकी मृत्यु हो गई; मेरे सामने फांसी का फन्दा लटक रहा था मैं उसी अंधेरे में जंगल की ओर चला गया अब आप ही न्याय करें कि एक पापी को मारना, किसी की लाज बचाना, क्या पाप है ?

अपराध है ?"

"क्या यह सच है कि तुमने सबइन्स्पेक्टर ....की हत्या की ?"

"हां सच है। उन दिनों पुलिस बड़े जोर से डाकुओं की खोज में थी डाकू अपनी जान हथेली पर रक्खे रहता है परन्तु पुलिस तो पैसे की दास है पुलिस का साहस न था कि बीहड़ घाटियों में आकर हम लोगों से मोर्चा ले वह सीधे साधे गांव वालों को परेशान करती है उन पर यह अभियोग लगाया जाता है कि वह हमको मदद करते हैं उनकी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पुलिस बुरी तरह पीट कर हमारा पता पूछती है परन्तु वो बेचारे स्वयं नहीं जानते हैं। मेरे फरार होने के बाद मेरा मकान पुलिस ने अपने अधिकार में ले लिया; मेरे पिता को बन्दी बना लिया गया। मेरी बीमार माँ तड़प तड़प कर मर गई। पुलिस के सबइन्स्पेक्टर....ने मेरे पिता जी को इतना मारा कि कुछ दिन बाद उनकी मृत्यु हो गई यह समाचार मैंने सुना तो पिता के हत्यारे से बदला लेने की शपथ खाई और समय पाकर मैंने पिता का बदला चुकाया।"

"क्या यह सच है कि तुमने अपने साथियों सहित ....रात को लाला....के यहां डाका डाला और उनके पुत्र की हत्या कर दी?"

"हां सच है।"

"मैंने एक लाला और उसके पुत्र की हत्या की और सैकड़ों हत्याओं के करने वालों को सदा के लिए समाप्त कर दिया। लाला........कर्ज पर रुपया देता था उसके पास सूद का धन इकट्ठा था मेरे प्रदेश में सैकड़ों मजदूर लाला के कर्जदार थे जब मैं पुल पर काम कर रहा था तो देखता था लाला के आदमी हर पहली तारीख को आकर बैठ जाते मजदूरों की पसीने की कमाई ब्याज में चली जाती, मेरा एक साथी था जिसे मैं चाचा कहता था उसका लड़का सख्त बीमार था लड़की भी बिदा होने को थी उसने लाला से मिन्नत की कि वह उस महीने किश्त का रुपया न ले परन्तु उस कसाई ने यह कहा, "इस महीने लड़का बीमार है इसलिए न लूं अगले महीने लड़का मर जाय तो न देना यही बहाना तुम लोग करते हो, मुझे अपना रुपया चाहिए।" और जबरदस्ती ले लिया। सचमुच उसका जवान लड़का दवा न मिलने से मर गया। डाकू बनने के बाद मुझे वह पुरानी घटना याद आई। मैंने लाला....के यहाँ जाकर प्रोनोट माँगे और कहा लाला अब पसीने से कमाई करो रुपया से रुपया पैदा करने के दिन चले गये। परन्तु उसने नहीं दिये और शोर मचाया उसी समय मेरे एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साथी ने उसका काम तमाम किया। लाला का लड़का बन्दूक चलाने ही वाला था कि मेरी गोली का शिकार बना। मैंने तिजोरी तोड़ कर सभी प्रोनोट फाड़ दिये और उनके अनेकों प्रोनोट कई वर्ष से अंगूठे लगे कोरे रक्खे थे मूलधन का कई गुना ब्याज में पहुँच चुका था। इस प्रकार समाज का खून करने वालों का खून करना कोई पाप नहीं। "मैंने लाला का सारा धन लूट कर गरीबों को बांट दिया। अब आप ही न्याय करें सबसे बड़ा डाकू मैं हूँ या वह लाला था।"

न्यायधीश ने चौथा अभियोग सुनाते हुए कहा:—

"क्या वह सच है कि तुमने .... की रात को इन्जीनियर ....के यहां डाका डाल कर हजारों की सम्पत्ति लूटी ?"

"यह भी सच है। मैं आपसे केवल यह कहना चाहूँगा कि इंजीनियर साहब दो वर्ष से ....पर काम कर रहे थे इतने थोड़े काल में उन्होंने एक लाख की कोठी अपनी पत्नी के नाम बनवा ली हजारों का बीमा कर दिया और जैसे कि पुलिस रिर्पोट में है २० हजार का डाका पड़ा। क्या श्रीमान जी इजीनियर साहब से पुंछवा सकते है कि दो साल में इतना धन इनके पास कहाँ से आया जबकि उनका वेतन खर्च से अधिक नहीं है यह सब राष्ट्रीय सम्पत्ति थी मैंने राष्ट्र में उसका फिर वितरण कर दिया। एक राष्ट्रद्रोही को सम्मान मिले और उसे लूटने वाला डाकू कहलाये यह पुराना न्याय था अब प्रेम और अधिकार का न्याय चलेगा। श्रीमान जी हत्या सबकी समान है चारपाई में पड़े खटमल का सभी रक्त बहा देते हैं चाहे कितना ही अहिंसा वादी क्यों न हो। फिर ये सब समाज का रक्त पीने वाले खटमल हैं जो छिप कर रक्त पीते हैं। आप जो दंड मुझे दें स्वीकार है।

"तुम पर पाँचवा अभियोग डाक्टर....की हत्या का है तुमको स्वीकार है।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"हाँ मैंने डाक्टर—की हत्या की। उसकी हत्या मैंने अपना पुराना बदला चुकाने के लिये की जब मैं साधारण शरीफ नागरिक था मेरी छोटी बहन बहुत बीमार थी मैं उसे लेकर आगरे पहुँचा सुबह से शाम तक वह डियूटी रुम में बाहर पलंग पर पड़ी रही किसी ने ध्यान नही दिया मैं कई डाक्टरों से मिला परन्तु किसी ने न सुना जिन डाक्टर की डियूटी थी उनको फोन कराया परंतु वह आराम कर रहे थे मेरी बहन अंतिम श्वासें ले रही थी फिर मैं दौड़ा उनकी कोठी पर शाम को अपनी बहिन को लेकर गया। मैंने डाक्टर के पैरों पर अपना सिर रख दिया "डाक्टर मेरी बहन को बचा लिजिये मैं गरीब आदमी हूँ भगवान तुमको इसका बदला देगा।"

परन्तु डाक्टर ने रुखाई से पूछा "१६) फीस के लाये हो।" मेरे पैरों के तले से जमीन सरक गई। मेरे पास सिर्फ १०) थे मैंने कहा "बाकी फिर दे दूंगा अभी आप इसे देख लीजिये।" परंतु वह यह कहकर अन्दर चले गये "जब पूरी फीस हो जाय तब आना, मुझे उस देवता के भीतर राक्षसपन की बू आने लगी। सरकार से वेतन पानेवाला डाक्टर ६) के लिए एक जान नहीं बचा रहा है, मैं ईश्वर का भरोसा लेकर वहाँ से चल दिया कुछ घण्टों बाद मेरी बहन ने दम तोड़ दिया वैसे तो जीवन व मौत ईश्वर के हाथ है लेकिन मुझे यह लगा कि समय पर उसे दवा मिल गई होती तो बच जाती। वह प्रतिकार की अग्नि मेरे भीतर धधक उठी। अस्पताल गरीबों के लिए बनवाये जाते हैं परन्तु गरीबों को वहां मौत मिलती है वहाँ की कीमती दवाइयां, इंजेक्शन डाक्टर की कोठियों पर पैसा बनाते हैं या किसी ऊंचे मंत्री या अधिकारी के काम के काम आते हैं। क्या ये डाक्टर हमारे उन प्राचीन बच्चों के प्रतीक हैं जो दूसरे के मुख से भी किसी के बीमार होने का समाचार पाकर दौड़े जाते थे। इन डाक्टरों को पैसा चाहिये रहम नहीं जिस दिन मैं डाक्टर को लेने गया उस दिन वह एक दम तोड़ते मरीज

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

को छोड़कर १००) के लालच में मेरे साथ चल दिये ऐसे डाक्टरों से देश का, राष्ट्र का, तथा समाज का भला नहीं हो सकता। ये गरीब जनता के साथ खिलवाड़ करते हैं जो चन्द कागज के टुकड़ों के लिए जीवन-दान नहीं देता। उसका जीवन लेकर मैंने समाज के साथ कौन-सा अपराध किया ?"

"क्या यह सच है कि तुमने सामाजिक कार्यकर्त्ता श्री........के घर पर डाका डालकर उनके लड़के का अपहरण किया ?"

"मुझे यह अपराध भी स्वीकार है परन्तु मैं इसे अपराध नहीं मानता, मैंने एक भूले राही को मार्ग दिखाया। मुझे याद है जब मैं छोटा था वे महाशय हम लोगों को साथ लेकर सरकारी कर्मचारियों के विरुद्ध आन्दोलन कराते थे 'अंग्रेजी सत्ता का नाश हो कांग्रेस जिंदाबाद' के नारे हमने लगाये। कई बार पुलिस के डण्डे भी हमारे ऊपर पड़े परन्तु आजादी के सुनहरे स्वप्न वह पीड़ा अनुभव नहीं होने देते थे। आजादी आई। हमने उनको प्रतिनिधि चुनकर भेजा परन्तु उन्होंने क्या किया। आजादी पूर्व उनकी छोटी-सी झोपड़ी थी परन्तु आज वही आलीशान कोठी बनी है, उनके पिता के पास चार बीघा भी भूमि न थी परन्तु आज उनका कई एकड़ का फार्म है, जिन पुलिस वालों ने कभी उनपर डण्डे चलाये अब उनकी कोठी में ठहरते हैं उनके लड़के अंग्रेजी स्कूलों में पढ़ते हैं लड़कियों का विवाह मिल मालिकों के लड़कों से हो गया। आज उनके घर में लक्ष्मी का वास है न जाने कितने विरोधियों के नाम उन्होंने डकैती में लिखवा दिये पुलिस ने उनका चालान कर दिया, कई घर उजड़वा दिये मैंने कई बार उनसे प्रार्थना की कि कहीं नौकरी दिलवा दीजिये परन्तु उन्होंने मुझे यही कह कर टाल दिया कि हम सरकारी अफसरों से सिफारिश करके अपने पद का मान घटाना नहीं चाहते।" उन्होंने अपने लड़के को एक मिल का मैनेजर बनवा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दिया जो बी० ए० में ३ वर्ष फेल हुआ, अपने डाकू जीवन में मैं प्राचीन घटना न भूल सका। जनता का प्रतिनिधि बन कर उन्होंने जो रुपया सिफारिश से कमाया था मैंने लूट लिया और प्रतिकार के तौर पर उनके लड़के का अपहरण किया। आज जिस माया में वह फंस गये थे छूट गये और अपने वास्तविक रूप को पहचान कर सर्वोदय कार्यकर्ता के रूप में कार्य कर रहे हैं। मैं नहीं समझता कि एक गुमराह को राह पर लगाना भी अपराध है।"

"........ता० को पुलिस की यह मुटभेड़ में तुम्हारे दो साथी मारे गये और एक सिपाही हताहत हुआ। यह तुम स्वीकार करते हो।"

"नहीं मेरी पुलिस से कभी मुटभेड़ नहीं हुयी पुलिस को हमारे सभी अड्डों का पता है। लेकिन वह वहां कभी नहीं जाती बहुत से पुलिस अधिकारी हमसे चौथ वसूल करते हैं जब कभी ऊपर से दबाव पड़ता है तो एक कृत्रिम मुटभेड़ दिखा दी जाती है। किन्हीं भी दो-चार नागरिकों को जिन पर कुछ शक होता है रात के अंधेरे में किसी बहाने से जंगल में बुला लिया जाता है। वहां उनको गोली मार कर हत्या कर दी जाती है। चारों ओर फायर करके एक दृश्य बना लिया जाता है। कभी धोखे से किसी सिपाही के गोली लग जाती है। इस प्रकार समाचार-पत्रों में पुलिस की वीरता की गाथा प्रकाशित होती है सिपाही की अन्त्येष्ठि क्रिया बड़े सम्मान के साथ की जाती है, और उनके निर्दोष नागरिकों को खींच कर कुत्तों की तरह डाल दिया जाता है। मैं आपको अनेक उदाहरण दे सकता हूँ जहां डाकू की हत्या उसके साथी ने की और पुलिस ने इनाम पाने के लिए वह सेहरा अपने सिर बांधा। पुलिस कभी नहीं चाहती कि डाकू दल समाप्त हो यदि वह चाहे तो हम लोग डाका डाल ही नहीं सकते हम लोगों ने जब आचार्य विनोबा के सम्मुख जब आत्म-समर्पण किया तो पुलिस दल में तहलका

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मच गया उनको भय हो गया कि हम उनकी पोल खोल देंगे क्योंकि यदि हम पुलिस के हाथ लग जाते तो वह कभी जिन्दा नहीं रखती, वह किसी भी डाकू पर न्यायालय में लाकर मुकदमा चलाने की परेशानी से उसे मार डालना अधिक पसन्द करती है। यदि हमको पहले उचित अवसर दिया जाता तो हम अपना यह जीवन कभी का बदल चुके होते अतः यह झूठ है कि पुलिस से पहले कभी मुटभेड़ हुई।

"क्या यह सच है कि तुमने अपने बहनोई की हत्या की ?"

"हाँ मैंने अपनी बहन का सुहाग अपने हाथों उजाड़ा। जिस सुहाग के लिये मैंने दर दर ठोकरें खाईं जिस बहन को मैंने प्राणों से ज्यादा प्यारा समझा उसको मैंने स्वयं विधवा बनाया। आप जानते हैं क्यों? मेरा बहनोई बड़ा लालची था वह जानता था कि मैं डाकू हूं वह मेरी बहन को सदा यातनायें देता रहता और मुझसे रुपया माँगने को कहता परंतु मैंने कभी भी एक पैसा नही दिया। मैं नहीं चाहता था कि मेरी इस कमाई में बहन साझीदार हो, मैं इस पैसे का उपयोग अपनी बहन के बच्चों पर भी नहीं होने देना चाहता था मेरा जीवन तो नष्ट हो ही चुका था इस पाप की कमाई में मैं उन मासूम बच्चों को भागी नही बनाना चाहता था लेकिन मेरे बहनोई का लालच यहाँ तक बढ़ गया कि उसने मेरे साथ विश्वासघात किया। मैं दुइज को अपनी बहन से टीका कराने गया। मेरे बहनोई ने पुलिस को सूचना दे दी क्योंकि मेरे सरपर हजार का इनाम था मुझे समय से पूर्व ही पता लग गया उस विश्वास घाती को मेंने यमलोक पहुँचा दिया।

अब आप जो भी निर्णय करें मुझे स्वीकार है। पापा, समाजद्रोही, देश द्रोही, सूदखोर, विश्वास घाती लोगों को मारना और लूटना यदि अपराध है तो मैं अवश्य अपराधी हूं। रक्षक होकर भक्षक बनना, धन से लाज पर डाका डालना, पद का दुरुपयोग करना जनता के प्रतिनिधि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बनकर उसी का अमंगल करना, जीवन दाता बनकर जीवन ले लेना यदि अपराध नहीं मैंने भी फिर कोई अपराध नहीं किया। तो आज संसार में एक तूफान मचा है कि भारत के उत्तर में भूटान पर चीनी फौजें जमा हो रही हैं ऐसे समय में भी हमारे देश के भीतर भ्रष्टाचार और स्वार्थ का ही बोल बाला है यदि मुझ जैसे दस वीर डाकुओं को फाँसी दे दी गई तो राष्ट्र पवित्र नहीं होगा यदि राष्ट्र को पवित्र करना है तो पहले इन सरकारी वकीलों को फाँसी दीजिये जो यह जानकर भी अमुक व्यक्ति निर्दोष है पुलिस के कहने पर झूठे मुकदमें चलाकर फाँसी दिलाते हैं। इन पुलिस वालों को दण्ड दीजिये जो एक डाकू को मारने में लाखों रुपया व्यय करते हैं यह पैसा यदि हमारी उन्नति में लगाया जाता तो शायद हम डाकू न बनते। हमारे बच्चे दर-दर भटक रहे हैं। मकान, जमीन सरकार के कब्जे में है। मनुष्य पुलिस के अत्याचारों से भागे हुये हैं, जवान औरतों को अपनी लाज बचाना मुश्किल है। आप हमारे प्रदेश में जाकर देखिये आपको हृदय-द्रावक दुख भरी कहानियां सुनने को मिलेंगी। जिनको पुलिस ने भूखे रक्खा कई दिन तक पीटा, जाड़ों में बर्फ की सिलों पर सुलाया, औरतों को नंगा किया छोटे बच्चों को बेंतों से मारा। ये सब अत्याचार आज अपने देश में अपनी ही सरकार के द्वारा हो रहे हैं। मुझ जैसे कितनों को आप फांसी देंगे ?" चार मरेंगे चालीस पैदा होंगे हर इन्सान शान्ति चाहता है सबको प्यार चाहिये ! हमारे बच्चे बाप का प्यार नहीं जानते हम बच्चों का स्नेह नहीं जानते फिर यह अत्याचार हम पर क्यों, आखिर हम भी तो इन्सान हैं। बुराई हम जन्म से लेकर नहीं पैदा होते और बुरा सदा बुरा ही नहीं रहता यदि ऐसा होता तो बालमीकि जैसा डाकू ऋषि न बनता, वेश्यागामी सूर इतना बड़ा कवि न बनता, नारी के सम्मोहन में फसा तुलसी और जन्म के मूढ़ कालिदास इतने बड़े कवि न होते ! हमको समाज कितनी बुरी दृष्टि से देखता है अनेकों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निर्दोष की जान लेने वाला, अनेकों गरीबों से रिश्वत लेने वाला इन्सपेक्टर सम्मानित होता है और हमको वीर कहने में सरकार को भी लज्जा आती है आखिर सभी डाकू है तो डाकू डाकू में अन्तर ही क्या, केवल हम छोटे डाकू है वह बड़े हैं।"

तीन दिन बाद न्यायधीश ने अपना निर्णय सुनाते हुए कहा,

"राना और उसके साथियों ने जो अपराध किये हैं इसके लिये केवल वही दोषी नहीं, हम सभी उसके उत्तरदायी है। राना ने जिन परिस्थितियों में अपराध किये हैं वह किसी भी व्यक्ति को बाध्य कर सकते हैं। फिर भी कानून अन्धा होता है वह ईश्वर की दृष्टि से नहीं देखता। ईश्वर अपराध को क्षमा कर देता है पर कानून एक बार किये गये अपराध को कभी क्षमा नहीं करता वह दंड देता ही है। यदि कानून अपनी आंखों से काम ले तो देश में अराजकता फैल जाय हर व्यक्ति अपराध करने के बाद क्षमा मांगे ऐसा कभी नहीं हो सकता। मनुष्य के बनाये कानून कभी क्षमा नहीं करते वह दंड अवश्य देते हैं फिर भी राना जैसे अपराधी अपने कुकृत्यों पर पश्चाताप करते हैं तो उनके साथ कानून को कुछ सहानुभूति अवश्य हो जाती है अतः मैं राना को आजीवन कैद की सख्त सजा देता हूँ साथ ही सरकार से अनुरोध करता हूँ कि राना के बच्चों की समुचित व्यवस्था की जाय।"

बाहर जज साहब के न्याय की प्रशंसा हो रही थी और जयकार गूंज रही थी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मान मर्दन

ले० कामता प्रसाद 'प्रसाद'

उसका नाम था दीना। गाँव के बाहर फूस की झोपड़ी छोटी २ टहनियों पर टंगी हुई। दीवार नाम की कोई वस्तु उसमें नहीं थी। केवल चारो ओर अरहर की टट्टियां मिट्टी और गोबर से लिपी थी। यही था उसका राज प्रासाद।

भोजन बनाने के लिये, चद्दर की हांडी, दो कटोरे सिलवर के, एक लोटा, और पीतल का एक तसला, काठ का चम्मच, फूटा तवा फावड़े का मोघा निकालकर बना लिया था। सभी बर्तन अजर अमर होने की डींग हांक रहे थे। क्योंकि उनकी जन्म तिथि अज्ञात थी।

दीना की घरनी सुक्खों को तीन महीने का शिशु छोड़कर अनन्त सुख की तलाश में कहीं किसी सरोवर में गोता लगा गई थी। बच्चे ने पिता की गोद में ही माता का सुख भोग किया। और उसका नाम पड़ गया पच्चू।

दीना वह था मजदूर दुनियां के दुख द्वन्दों से दूर अज्ञात रूप से वह गीता के कर्म योग का सफल कर्मयोगी था। "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन" उसका कहना था रोजी रिजक देने वाला तो वही एक मालिक है, केवल मजदूरी करना हमारा काम है। वह प्रातः चार बजे राम धुन के साथ जागता, टट्टी मैदान के बाद, मुंह धोता, बच्चे को बकरी का दूध पिलाकर अपनी पीठ पर बाँध लेता और लोटा ले कर काम पर चला जाता। पास पड़ोस के गाँवों में वह जाता, काम मिलता वह करता, अन्यथा "सन्तुष्टः", "येन केनचित्" ईश्वर को धन्यवाद देकर वापस चला आता।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपने बच्चे को टहनियों में कपड़ा बाँधकर उसी पालने में झुलाता हुआ, टूटी फूटी भाषा में दिन भर गुन-गुनाता रहता था "करम गति टारे नाहि टरी"

समय चक्र अपनी कीली पर निरन्तर घूमता रहा, घड़ियों ने घंटे, घंटों ने दिन, दिनों ने सप्ताह, सप्ताहों ने मास, मासों ने वर्ष बना डाले। पच्चू अब सात वर्ष का था। पिता के साथ जाता, पिता मजदूरी करता और वह खेलता रहता, सायंकाल पिता के साथ ही घर आता और दो रोटी खाकर सो जाता, न कोई चिन्ता, न कुछ लालसा, न मान न अपमान मानो उसने गीता का समत्व योग प्राप्त कर लिया हो।

" सबै दिन जात न एक समान "

गाँव की गली में कोई गुनगुनाता जा रहा था। रात का समय कुछ वर्षा और अन्धेरा भी था। पच्चू के पिता दीना ने पूछा, कौन हो, महतो? कहाँ जा रहे हो, बड़ा अन्धेरा है।

उसने उत्तर दिया, काका आज ठाकुर के चौपाल पर नाच है। देखई जात हन्, का चलि हो। दीना ने कहा मनु तौ हमरौ रहा, मुलु पच्चू कै मारे मजबूर हन्। महतो ने कहा चलौ हुआँ, ओसारे मां सोवाय दिहौ। थाव ठाकुर कै मामिला भैय्या न जानै का सोचैं अपने मा।

" राजा योगी अगिन जल इनकै उल्टी रीति" महतो के साथ दीना पच्चू को लेकर चौपाल पर पहुँच गया। ठाकुर की आज्ञा लेकर बच्चे को ओसारे में सुला दिया और स्वयं मेहमानों के हुक्का चिलम में लग गया। वेश्या गा रही थी।

" रमैया तेरी दुलहिन लूटै बाजार " एक ओर से आवाज आई, ठाकुर साहब हुक्का, दीना ने सुनते ही चौपाल के नीचे कदम बढ़ाये और आग भरने के लिये हाथ बढाया ही था, कि काले विषियर ने सूँघ लिया। बच्चे की ममता त्यागकर बुड्ढा चल बसा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

" को का को रखवार " संसार की रंगीनियाँ किसी के लिये स्वर्णिय स्वप्न लातीं ; और किसी को दुःख भरी उच्छवास से। पच्चू जगा तो बप्पा की रट मुंह से निकली. दीना की लाश नदी में फिकवा दी गई। पच्चू को भगा दिया गया। " काल काहि ना खाय "

पच्चू अब अकेला था, घर में आया, सुनसान में उसे अच्छा न लगा। पड़ोसियों के घरों की ओर गया, किन्तु किसी ने उसके आँसू न पोछे, बाप को खा लिया अभागे ने इत्यादि कटु बातों से वह और रोया दुनिया ऐसी ही है। एक ओर से आवाज आई।

" स्वारथ मीत सकल जग माहीं "

पच्चू कुछ सोचने लगा बापू तो कहते थे, सभी के दुःख सुख एक समान है। अभी उसी दिन की बात है। चतुरी की लड़की मरी. सब रो रहे थे बापू ने उन्हें लिट्टी खिलाई, और दिन रात वहीं बैठकर उनका जी बहलाते रहे। किन्तु,

" सबै नर होत न एक समान "

अर्द्धरात्रि का सन्नाटा, झीगुरों की झनकार कभी २ कुत्तों के भौंकने की आवाज, पच्चू की ध्यान मुद्रा भंग कर देती। वह कभी रोता कभी सोचता, कभी घर की हर एक वस्तु की ओर देखता। किन्तु उसे सभी पराये लगते।

पच्चू के मनी राम ने क्रान्ति की. और वह अब घर से बाहर था। कुछ दूर पर उसे गाँव का चौकीदार मिला, उसने कहा, पच्चू बेटा आधी रात को कहाँ निकल पड़े, जाओ घर में सो जाओ। क्या भूख लगी है। सहानुभूति पूर्ण बातें सुनकर पच्चू का गला भर आया और रुद्ध कण्ठ से बोला, नहीं।

चौकीदार ने हाथ पकड़ा झोपड़ी में लाकर बिठा दिया, और चला गया। दूर से सुनाई दिया " जागते रहो "

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सिद्धार्थ की मनोवृत्ति भी गृह त्याग में ऐसी ही हुई थी। पच्चू ने कुछ सोचा और घर से निकल कर गाँव के बाहर का रास्ता पकड़ा। केवल एक कुत्ता मिला, उसे देखकर दुम हिलाने लगा। पच्चू आगे बढ़ा।

" ममता त्याग करहिं जिमि ज्ञानी "

वह निरन्तर चलता रहा और रोता रहा। प्रातःकाल हो गया। मन्द समीर के झोंकों ने उसका ध्यान भंग किया। देखा तो सामने एक मन्दिर था। भगवान के हाथ जोड़े और मन्दिर में घुस गया। बैठा रहा हाथ जोड़े। प्रार्थना तो आती न थी। बापू के साथ कभी कभी मन्दिरों में गया था, और वही उसे याद था उसने अनुकरण किया। मन्दिर के पीछे कोई गा रहा था।

" तुम विन नाथ कौन अब मेरा "

पच्चू बैठा रहा तब तक जब तक कि पुजारी साधु न आ गया। साधु ने देखा, मैला वस्त्र पहने दीन हीन अबोध बालक भगवान आशुतोष के हाथ जोड़े ध्यान मग्न बैठा है।

साधु ने कहा कौन हो बेटा ? बड़े सबेरे आ गये, क्या कष्ट है। बालक का ध्यान भंग हुआ, और बोला—

बाबा पा लागी, गरीब हूँ, बापू मर गये माँ जन्मते ही चली गई। घर में अच्छा नहीं लगा चला आया अब घर न जाऊँगा। वहाँ मेरा कोई नहीं। मुझे कल से रोटी भी न मिली।

" जाऊँ कहाँ तजि चरन तुम्हारे "

साधु के गुणों में एक ज्वार आया, आँसू बनकर पृथ्वी पर दो बिन्दु " टप टप " गिर पड़े। उसने सोचा चलो एक से दो हुये। आसुतोष ! आपकी लीला अपार है। संसार में जिसका कोई नहीं उसके आप हैं।

" अविगत गति कछु कहति न आवै "

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साधु बोला बेटा ? तुम कहाँ के निवासी हो किस जाति के हो। बालक ने उत्तर दिया, बाबा ? यहाँ से बहुत दूर गोपालपुर का मैं रहने वाला हूँ। दीना चमार का पुत्र हूँ। मेरा नाम पच्चू है। इससे अधिक मैं नहीं जानता। साधु ने कहा बेटा ?

" जाति पांति पूंछै ना कोई।
हरि का भजै सो हरि का होई " ॥

जिस प्रकार द्रुत गति से घूमने वाले रेल के पहिए। गन्तव्य मार्ग पूरा कर विराम लेते हैं। और पुनः पाथेय लेकर दूसरी ओर चल देते हैं।

पच्चू भी अब प्रेमदास था। तिलक छापा से लैस, गले में कण्ठी, राम नामी दुपट्टा, पैर में पादुका। बाबा से पहले जागता, सो जाने पर सोता भगवान की जूठन प्रसादी पाता, दिनभर आश्रम की गौयें चराता। यही था उसका पूजा पाठ।

" हम, दीननि के, दीन हमारे "

समय ने करवट ली प्रेमदास अब युवक था। बलिष्ठ शरीर प्रत्येक अंग व्यायाम से सुगठित, सुन्दर गौरवपूर्ण, भगवान की सेवा से और भी दे दीप्य मान हो उठा। साधु बाबा बड़े आदर से उसे शिक्षा देते। प्रेमदास की गुरू में अपार श्रद्धा थी। अब वह प्रसिद्ध सन्त था।

" मूक होंहि बाचाल पंगु चढ़ै गिरिवर गहन "

वह वन में गौयें चराता, वंशी बजाता। उसकी वंशी की मधुर तान सुनते ही गौयें मुग्ध होकर चारों ओर से उसे घेर लेतीं। विहङ्ग अर्द्ध निमीलित नेत्रों से उसके ऊपर आकर बैठ जाते। मृग और सिंह स्वाभाविक वैर छोड़कर उसकी वंशी सुनते। जब वह वंशी बजाना बन्द कर देता सब अपने मार्ग लगते।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शनैः शनैः वह बंशी बाबा के नाम से प्रसिद्ध हो गया। सभी उसके दर्शन को आते। मन इच्छित बरदान पाते। साधु बाबा अपने शिष्य को देखकर फूले न समाते।

" दीन चलै सिर छत्र धराई "

गोपालपुर के ठाकुर एक दिन बंशी बाबा के दर्शन करने आये। उसके कोई संतान न थी। मन्दिर पर आकर पता चला कि बंशी बाबा अब वन में ही रहते हैं। बड़ी खोज करने पर बंशी बाबा मिले।

ठाकुर चरणों में लोट पोट हो गये। महाराज मेरे कोई सन्तान नहीं है। कृपा हो।

" आरत काह न करई कुकरम् "

बंशी बाबा ने देखा वही ठाकुर गोपालपुर का जो हम लोगों को बराबर न बैठने देता था। आज चरणों पर वह मस्तक टेके पड़ा है। बापू मर गया उसे नदी में फिकवा दिया, मुझे दुत्कार कर भगा दिया। प्रतिहिंसा जाग्रत हुई। किन्तु साधु स्वभाव ने दबा दी।

वरद हस्त पीठ पर था। ठाकुर तुम्हें पुत्र मिलेगा। प्रसन्नता से विभोर ठाकुर चरणरज लेकर चला गया।

" इतते वे पाहन हनें,
उतने वे फल देंहि। "

ठीक एक वर्ष के पश्चात्। आज गोपाल पुर में बड़ी धूम धाम है। द्वार २ पर मङ्गल गीत। गरीबों को दान, पंडितो को सम्मान। जो जिसने मांगा तुरन्त पाया। सभी प्रसन्न थे! ठाकुर फूले न समाते। क्योंकि बाबा की दया से आज वंश घर का मुंह देखा था (दोनों हाथ सम्पत्ति लुटाते थे। दिन भर यही रंग रलियां रही।

दूसरे दिन हाथी घोड़े सजाकर, सोने चाँदी के थालों में भेंट लेकर पैदल नङ्गे पाँव वंशी वाले की मनौती चढ़ाने ठाकुर श्रद्धा से जा रहे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थे। मध्यान्ह काल ऊपर से सूर्य का ताप नीचे पृथ्वी की तप्तवा लुका नङ्गे पैर, किन्तु श्रद्धा उत्साह वर्द्धन कर रही थी।

सायंकाल बाबा के चरणों में भेंट रखकर ठाकुर मत्था टेक हुये। बाबा आपका आर्शीवाद सफल हुआ। हम किस योग्य हैं। पुत्र पुष्प स्वीकृत हो।

"दीन बन्धु सम होय"

गोपालपुर के किसी वृद्ध ने वंशी वाले की नाक पर ध्यान से देखकर कहा। क्या यह पच्चू तो नहीं है। क्योंकि उसके भी नाक पर मस्सा था। काना फूसी के पश्चात् बंशी बाबा ने कहा, ठाकुर मैं वही दीन हीन निराश्रित दीना चमार का पुत्र पच्चू हूँ। ठाकुर अवाक् थे। चरण रज लेकर बोले पच्चू तो मर गया। मेरे बंशी वाले। बाबा ने कहा ठाकुर किसी गरीब का तिरस्कार आज से न करना गांधी जी कहते थे।

"हरिजन हमारे प्राण और मान हैं"

— —

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रधिया

ले० कामता प्रसाद 'प्रसाद'

गंगा भागीरथी के वक्षस्थल पर वेग से तैरती हुई एक नौका आज प्रातः काल ही घाट पर रुकी। कई माझी कूद कूद कर उतर पड़े और नौका तट पर लगाने के लिये लङ्गर खीचने लगे। रामू नाविक वृद्ध था; और यह महा नौका उसी के पूर्वजों की थाती थी।

जैसे ही वह उतरा पैर फिसल गया, और वह सदा के लिये गंगा का प्यारा हो गया। लोगों ने कई दिन तक खोजने के असफल प्रयत्न किये, किन्तु उसे गङ्गा माई ले गई पर ले गई।

रामू का बेटा किसना लगभग १२ वर्ष का था। अपनी वृद्धा मां के साथ वही गङ्गापुर में निवास करने लगा। समय चक्र अनवरत अपनी कीलीपर चक्कर लगाता रहा। किसना अब सुन्दर नवयुवक था नाव चलाने में चतुर, मां का एकलौता बेटा। कभी कभी सायंकाल बालू के ऊंचे टीले पर वृक्ष के नीचे डुबते रक्तवर्ण सूर्य की ओर बैठ कर अपनी बंशी की अलाप लेता था।

एक दिन ननकू माझी की बेटी रधिया पानी भरने आई। उसने किसना को मस्ती में बंशी बजाते सुन लिया। कुछ इधर उधर देख कर वह मन्त्र मुग्ध सी किसना के पास आकर बैठ गई किसना बंशी बजाने में तन्मय था, वह जान न सका। जब अलाप समाप्त हुआ तो सामने देखा रधिया थी।

रधिया ने कहा किसना, बंशी बजाने में तुम्हें कमाल हासिल है। किसना ने कहा नहीं रद्धो योंही जी बहला लेता हूँ। बड़े बड़े उस्ताद

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पड़े हैं मैं क्या........ । योंही नित्य कभी नदी किनारे, कभी नाव पर, कभी टीले पर, किसना बंशी बजाता और रधिया वहीं पहुँच जाती दोनों समवयस्क थे।

एक दिन रधिया ने कहा किसना मुझे कुछ हो गया हैरे। किसना ने कहा क्या हो गया है तुझे। रधिया ने कहा क्या बताऊ जब तुझे देख नहीं पाती हूँ तो हियरा मा दरद जस होत है का जानूं उ का बलाय है किसना। किसना ने कहा रधिया ऐसा मत बोल, नहीं तो तबाह हो जायेंगे हम दोनों संसार अकारण ही हमारा तुम्हारा शत्रु बनजावेगा। बंशी सुनना हो तो सुन अन्यथा भाग जा। मैं उस पचड़े में नहीं पड़ता।

रधिया के अधर फड़के, कुछ बुद-बुदाई और भाग गई। कई दिन बीत गये रधिया नहीं आई। किसना ने कुछ सोचा और चुप हो गया।

एक दिन ऊषा बेला में – किसी बियोगिनी का स्वर दूर से सुनाई पड़ा—

"कौने बनगई थी होऽऽऽ मोरा सँवारिया"

हो मोर सावरिया की मधुर स्वर लहरी सरिता की तरङ्ग बात का आघात पाकर मधुर तर हो गई। वीणा विनिन्दित कण्ठ से निस्सृत शब्द शर किसना के कर्ण कुहर में टकराये, उसने पतवार चलाना बन्द कर दिया। तरणी निश्चल थी।

किसना ने एक क्षण कुछ सोचा और सहसा बुदबुदाने लगा। यह छोकरी भी कितनी नटखट है। ऊषा बेला में ही घाट पर आ जाती है, और इसी गीत पंक्ति को दुहरा कर घट भरने लगती है। क्या कोई अन्य गीत उसे नहीं आता। अथवा उस पद में कुछ रहस्य अन्तर्हित है।

वायु के झकोरे से वह सावधान हुआ, वेग से डाँड़ मारता हुआ वह तट पर आ गया। जैसे ही ऊपर दृष्टि डाली तो सामने रधिया थी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आँखें नचाती हुई बोली "कहाँ गइलवाटै किसना अत्तामोरै" किसना ने कहा रधिया "आकेलवा परा नवाँय जइसल घर तइसल घाट" मुला एकरे बात तूसन पूछ लवाय, ई गितवा तू ही गायन वाटै" "याकर मानै तोके इसर गितवा नाहिन सुरतियान" रीधया ने कहा हुश्श—और सिर पर घट रख कर सर्पाकार पगडेडियां लाँघती हुई, अपने फूस के घरौंदे में त्वबरा से प्रवेश कर गई। किसना कुछ देर निस्तब्ध अपलक दृष्टि लगाये रधिया को देखता रहा। जब वह आँखों से परोक्ष होगई तो वह बुदबुदाया हुँः। बड़ी आई नखरे वाली, एक छोटी सी बात का उत्तर भी न दिया। "नदी में रहकर मगरमच्छ से वैर" देख लूँगा कितने मान वाली है। सारा गाँव खेत लुनने नदी पार जाता है। मैं ठहरा गाँव का नाविक।

यही चक्र चलता रहा "नित नई ऊषा आती और वही गीत की स्वर लहरी किसना के कानों में आघात करती। और वह बड़े वेग से उत्तेजित होकर डाँड मारता हुआ नदी के दूसरे तट पर चला जाता।

किसना जो पैसे कमाता सायंकाल गाँव में आकर अपनी वृद्धा माँ के कम्पित करों पर रख देता। और रूखी सूखी खाकर घाट की ओर चल देता। पुत्र वत्सला माँ कहती बेटा? आज शीत है आज वर्षा है, आज अन्धेरा अधिक है, कहाँ जावेगा घर में ही सोजा। किन्तु किसना का वीतराग जैसा मन माता की बातों की उपेक्षा करता हुआ, नदी तट पर बन्धी नौका पर जाकर ही सन्तोष पाता।

बसन्त आया आम मञ्जरी पर कोकिला बोल उठी कूSSSकूSSS। रधिया ने आँख उठाकर देखा। एक काली कलूटी चिड़िया फुर से उड़ गई। रधिया चिढ़ गई। आवेग से बोली अरी कलमुँही तेरे पर नोच डालूँगी, और कई बार उस पक्षी की ओर मुँह बिचका कर कहा। बाबा से कह कर इस रसाल को कटवा दूंगी। देखें फिर कहाँ बैठकर मुझे चिढ़ाये गी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होली आयी और राग लाई गाँव के सभी युवक टोली बनाकर फाग गाते हुये निकले। अबीर गुलाल की झोलियाँ बरसने लगीं। रधिया भी अपनी सहेलियों के साथ देखने गई? आज यह बूढ़ा खूसट ढप बजा रहा है किसना कहाँ गया, ताल ठीक से नहीं आ रही है।

एक सहेली ने हंस कर व्यग किया क्यों रद्धो? किसना आखों में बसा है। वह बेचारा तो होली पर भी घर नहीं आया, सुनते हैं उसकी वृद्धा माँ पुत्र प्रेम में कातर होकर मृत्यु शैय्या पर पड़ी है।

इधर किसना जब से होली आयी, नदी के दूसरे तट पर ही खोया खोया सा बैठा रहता, न किसी से बात करता न घर आता। उसने नाव चलाना भी बन्द कर दिया। माँ ने कई दिन प्रतीक्षा की, अन्त में विवश हो कर खाट ले ली। किसना के एक अनन्य मित्र ने जाकर उसे माता का समाचार दिया और भतर्सना भी की। तब किसना रात में ही घर आया माँ की दशा देख कर बिलख बिलख कर रोने लगा। वृद्धा के कानों में पुत्र की मृतसञ्जा बनी वाणी पड़ते ही वह उठ बैठी और पुत्र को गोद में भर कर बोली।

मेरे लाल भूखों नहीं मर रही हूँ। तुम्हारे दर्शनों की भूखी आँखें इस होली को ही चिता बनाने के लिये झगड़ रही थीं। किसना बाजार गया माँ के लिये दूध और अपने लिये कुछ रोटी लाया। एक दो दिन में जब माँ स्वस्थ हो गई। तब किसना पुनः नाव पर जाने लगा। अब वह रात में आता और प्रातः ही चला जाता।

गाँव के सभी युवक तथा सम्बन्धी आश्चर्य में थे कि किसना जैसा हँसमुख और चंचल नव युवक गंभीर कैसे हो गया किन्तु बात आई गई हो गई। गाँव के भोले मनुष्य स्वार्थवश गड़े मुर्दे उखाड़ना नहीं जानते। वह प्रत्यक्ष पर ही कुछ विचार विमर्श करने के पश्चात् मौन हो जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उधर रधिया ने लगभग एक मास से किसना को जब न देखा, तो आतुरता बढ़ी। और उसका हृदय मूक प्रेरणा देने लगा। काश तेरे उस दिन के हुश् शब्द ने ही तो नहीं किसना को अपमानित कर दिया। जिसके आघात से तिलमिलाया हुआ भावुक किसना संसार से विरक्त हो गया हो। जब प्रेम अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच जाता है, तब प्रेमास्पद स्वतः प्रेमी और आकर्षित हो जाता है। संसार का यह स्वतः सिद्ध प्रमाण है। अतीत का इतिहास इसका साक्षी है।

"समय ने मोड़ली" एक दिन रधिया ऊषा वेला में जब घाट पर आयी। उसकी निगाह किसना पर पड़ गई। उसने देखा किसना अपनी नाव खोल रहा है। सहसा उसे विश्वास ही न हुआ, कि यह किसना है। वह बरगद जैसा लम्बा हृष्ट पुष्ट शरीर सुन्दर श्यामल वर्ण, सिर पर जैपुरी पगड़ी, रेशमी कुर्ता, मखमली किनारी का तहमत, कलकतिया चप्पल, बाईं ओर कमर में खुँसी बाँसरी। चार डाँड़ मारे और नदी पार। वही किसना, कृशगात, फटे वस्त्र अस्त व्यस्त आः प्रेम तू बड़ा ही निष्ठुर है।

रधिया ने घट रख दिया, दौड़ कर किसना के निकट गई, और करुणा भरी दृष्टि से अप्लक उसे देखने लगी। चार आँखें हुईं। रधिया के नेत्र लज्जा से अवनत हो गये, कुछ बोल न सकी। किसना के हाथ से पतवार गिर गया मूर्छित होकर नाव पर ही ढुलक गया घाट पर कोलाहल मच गया, सभी दौड़े आगये। किसना को उठाया। देखा तो सर फट गया था, रूधिर से नाव के तखते भीग गये थे। साधारण उपचार से रुधिर स्राव तो रुक गया लोगों ने उसे घर भेज दिया।

माँ ने जो किसना को देखा मूर्छित हो गई, एक तो गरीबी का नग्न नृत्य दूसरे पुत्र की यह दशा। कई लोग तीर पड़ोस के आये, और झूँठी संवेदना प्रकट कर के चले गये। दिन व्यतीत हुआ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रात्रि की बारी आयी। वृद्धा माँ कांपते हाथों से उपले जला कर पुत्र का सिर सेंक रही थी। और पुत्र की शुभ कामना से कभी कभी हाथ ऊपर उठ जाते थे।

सहसा द्वार पर किसी ने दस्तक दी वृद्धा उठी और कपाट खोल दिये। बुढ़िया ने दीपक के मन्द प्रकाश में देखा, रधिया खड़ी सिसक रही थी। और उसका पिता ननकू उसके पीछे खड़ा पश्चात्ताप कर रहा था। आँखों में आँसू लिये बुढ़िया ने कहा। बेटी रद्धो आजा मेरे बड़े भाग गाँव के महतो की बेटी मेरे झोपड़े में। बेटी मैं अति निर्धन हूँ, तेरे बिछाने के लिये एक पीढ़ा भी तो नहीं। अच्छा बेटी ? खाट पर ही बैठ जा।

प्रेम का बांध टूट गया और रधिया फफक फफक कर रोने लगी। रोने का स्वर कानों में पड़ते ही किसना की मूर्छा जगी, आँखें खोल कर देखा रधिया चरणों पर मस्तक रखे रो रही थी। मेरे मालिक मुझे क्षमा कर दो।

किसना ने कहा रद्धो तुझे दूसरा गीत आता है ? अथवा वही एक पंक्ति। रधिया ने उत्तर दिया नाथ मुझे बहुत से गीत आते हैं। सुनाऊँ। किसना ने कहा रधिया शीघ्रता कर अन्यथा प्रतिहिंसा की ज्वाला से कहीं प्राण न झुलस जावे। रधिया तन्मयता से गाने लगी

"माझीरे भरि आये बदरा"

किसना उठ बैठा और खिल खिला कर हंस पड़ा "मेरी विजय" इतना कह कर रधिया के कपोलों पर दो चुम्बन अङ्कित कर दिये।

वृद्ध ननकू महतो और बुढ़िया अवाक् अपलक इस प्रेम लीला को देख कर हँस रहे थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सीमा

रमाकान्त त्रिपाठी

"कौन......यह कौन है........ठहरो ! खबरदार जो आगे बढ़े। जानते नहीं यह श्मशान है"।

"मैं........मैं........मैं........एक आदमी हूँ

यह तो मैं भी देख रहा हूँ। तुमने क्या सोचा

मैं तुमको........भूत समझ रहा था" !

"लेकिन आप कौन हैं"?

"मैं भी एक मनुष्य हूँ तुम्हारी ही तरह। डरने की कोई जरुरत नहीं तुम वापिस चले जाओ। दिन में आना इस समय रात काफी हो चुकी है। यहाँ रात में आना अच्छा नहीं। देखते नहीं चारों ओर कोई भी जानदार दिखाई दे रहा है"।

"अगर आप मेरी ही तरह मनुष्य हैं तो मुझे सहारा दीजिये मेरी मदद कीजिये"।

"अच्छा सीधे चले आओ डरना मत"।............"इतनी रात को तुम यहां क्यों आए"? "कुछ न पूछो बाबा ! मैं रुक न सका उसके वियोग में मुझे एक पल भी काटना कठिन है उसने मेरे लिए जान देदी मैने भी अपने इस जीवन का अन्त करने का फैसला कर लिया है लेकिन मरने से पहले उसकी समाधि पर सिर झुकाना चाहता था"। "पागल न बन नौजवान, मरना सहल है परंतु जीना मुश्किल। मरना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कायरता है जीना वीरता। किसी के साथ विश्वास घात करके जान देना क्या पाप नहीं ?

"लेकिन मैंने तो किसी के साथ विश्वासघात नहीं किया"!

"तुम झूठे हो तुम उस परमात्मा को क्या उत्तर दोगे जिसने तुमको इस दुनिया में भेजा। क्या इसी लिए पैदा हुए थे"?

मेरे सामने और दूसरा रास्ता भी तो नहीं" "आँख खोल कर देखो-तुकको रास्ते दिखाई देंगे, भावना से कर्त्तव्य ऊंचा होता है मेरे भाई। जो भूल एक ने की तुम भी उसी को दोहरा रहे हो। दुनिया में जो आया वह एक न एक दिन जाएगा ही परंतु बिना बुलाए जाने पर आदर नहीं मिलता। मैं सब कुछ समझ गया तुम किसी के प्रेम में ब्याकुल हो यह आघात तुम सह नहीं सकते इसी से तुम आत्महत्या करना चाहते हो"।

"हाँ बाबा मैं नहीं कह सकता। कल तक जो मेरे साथ थी जिसने मुझे नया जीवन दिया। मुझे राक्षस से मनुष्य बनाया मुझे याद है-हम दोनों यूनीवर्सिटी में पढ़ते थे मेरे पिता साधारण स्थिति के हैं वह कठिनाइयां सह कर भी मुझे पढ़ा रहे थे लेकिन मैं उनको धोका देता रहा मैं सारे दिन इधर उधर लड़कियों के पीछे घूमता, मेरे कई साथी मेरे एक इशारे पर मरने को तैय्यार थे सारी लड़कियाँ मुझसे डरती थीं मैंने जिसे चाहा उसे पाकर ही रहा। लेकिन एक दिन मैंने किसी को अपना पीछा करते पाया मैं ठिठका वह मेरे करीब आ गई मैंने देखा और चौक पड़ा।

"कौन ? वीणा"

'हाँ'

"तुम यहां क्या लेने आई"?

"मैंने सोचा कि देखूं किसी का पीछा करने में क्या मजा आता है लेकिन तुम इस तरह मेरी ओर क्या देख रहे हो ! मैं भी तो और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लड़कियों से कम सुन्दर नहीं जिनके पीछे तुम सारे दिन धूप में रहते रहते हो"।

"तुमको इन सब बातों से मतलब"?

"हां मुझे तुमसे मतलब है"

"तुम नही जानती कि मैं अच्छा आदमी नहीं हूँ"।

"जानती हूँ। अच्छे से तो सभी मतलब रखते हैं। मैं जानती हूँ कि तुम क्यों बुरे बने हो"।

"लेकिन मैं जानता था कि वह मुझसे अत्यंत घृणा करती थी। युनीवर्सिटी में वीणा ही एक ऐसी लड़की थी जिसकी ओर आंख उठाने की किसी की हिम्मत नहीं हुई उसके दिल में मेरे प्रति घृणा भरी थी; मैं था एक बदमाश अवारा जिसने न जाने कितनी लड़कियों को पाविभता को मिटाने का प्रयत्न किया हो उसके प्रति कोई भी लगाव होना असम्भव ही था मुझे विश्वास न हुआ मैं वहां से चला गया। उसके बाद वह प्रति दिन ही मिलती और दो चार वातें करती मुझे अब भी अपने विश्वास पर संदेह न था। एक दिन............

"एक बात पूछूं रमेश"?

'क्या'?

तुमने इन्टर कौन से डिवीजन में पास किया ?

'फर्स्ट'

"और बी० ए० में कौन सी डिवीजन लाना है ?

"उम्मीद तो नहीं है अगर थर्ड आ जाए तो अच्छा है"।

"अगर तुम चाहो तो फर्स्ट नहीं आ सकते"?

"आ क्यों नहीं सकते लेकिन मेरी तबियत पढ़ने में नहीं लगती"।

"अच्छा तुम किसी का कुछ उपकार कर सकते हो"।

"मैं किस योग्य हूँ"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तुम मेरे बंगले पर आया करो मैंने पिता जी को तुम्हारे विषय में सब बता दिया है वह बहुत खुश हैं कि तुम जैसा होनहार लड़का मेरे साथ में स्टडी करे"।

"लेकिन मैं.........."

"मैं कुछ नहीं शाम को ६ बजे तुम्हारा इन्तजार करूंगी"।

उसी दिन से मैं उसके बंगले पर जाने लगा मुझे ऐसा लगा कि मैं बहुत बड़ी सजा पा रहा हूं वीणा के पिता ऊंचे अफसर थे मुझे वीणा जैसी लड़की के साथ पढ़ने को मिला यह मेरा सौभाग्य था मुझे अपने पर गर्व होने लगा और अपने कार्यों से घृणा। मैंने धीरे धीरे सब से मिलना छोड़ दिया। मैं वीणा और पुस्तक यही काम चलता रहा। परीक्षा हुई। परिणाम घोषित हुआ। हम दोनों ही फर्स्ट डिवीजन पास हुए। वीणा के पिता जी ने मुझे छाती से लगा लिया उनकी मां ने मिठाई खिलाई मैंने देखा कि वीणा को अपने पास होने का उतनी प्रसश्नता न थी जितनी मेरे। मैं उससे पराजित हो चुका था उसको विजय हुई वीणा के पिता जी ने हम दोनों को प्रणय-बन्धन में बांधने का निश्चय कर लिया परंतु दो वर्ष बाद जब एम० ए० कर लूं। यह मेरी बल परीक्षा थी हम दोनों एक दूसरे के बहुत पास पहुँच गये। वीणा की घृणा प्रेम में बदल चुकी थी हम दोनों ही पूरी लगन से पढ़ाई करने लगे एक दिन वीणा ने पूछा।

रमेश तुमने रामायण पढ़ी है"?

"हां पढ़ी तो नहीं लेकिन थोड़ी याद है"।

"सीता राम को चाहती थी न"?

'हां'

'लेकिन राम को सीता को पाने के लिए क्या करना पड़ा'?

"राजा जनक की प्रतिज्ञा पूरी करनी पड़ी"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"क्या तुम मेरे पिता जी की प्रतिज्ञा पूर्ण नहीं कर सकते ? क्या एम॰ ए॰ में फर्स्ट नहीं आ सकते ?

"लेकिन उमा मेरा मन अब किताबों से अधिक तुम में लगता है जब भी पुस्तक खोलता हूँ तुम्हारा चित्र उसमें भी दिखाई देता है क्लास में भी मैं कभी तुम्हारे बैठने का पोज, कभी बाल, कभी मुख कभी ओंठ देखता रहता हूं, डाक्टर साहब क्या पढ़ाते हैं मुझे पता नहीं रहता ।"

"इसका मतलब है तुम्हारा प्यार एक दिखावा है तुम मुझे धोखा दे रहे हो ।"

"यह तुम क्या कहती हो उमा ? मेरे हृदय में तुम्हारे सिवा और कौन है तुम नहीं जानती जब से माँ का स्वर्गवास हुआ है पिता जी उधर दुखी रहते हैं मैं तो तुम्हारे सहारे ही जीवित हूँ तुमने ऐसा क्यों सोचा ? तुमने ही मुझ लोहे को सोना बनाया ।"

"इसीलिए कि यदि तुमको मुझे पाना है तो M. A. में फर्स्ट डिवीजन लाना होगी पिता जी तुमको I. A. S. के कम्पटीशन में बिठाना चाहते हैं यदि तुम्हारा फर्स्ट क्लास नहीं आया तो उनकी सभी आशाओं पर पानी फिर जायगा, हो सकता है, वह अपना निश्चय बदल दें ।"

"ऐसा नहीं होने दूंगा उमा ।"

उस दिन से मैं जी लगाकर पढ़ने लगा दो वर्ष कितने शीघ्र बीत गए पता भी न लगा । एम. ए. में मेरा फर्स्ट डिवीजन तथा उमा का सेकेन्ड आया क्योंकि मेरा डिवीजन बनाने के लिये उसने अपनी पढ़ाई की ओर अधिक ध्यान नहीं दिया । उसे मेरी ही चिन्ता थी । जिस दिन मेरा परीक्षा फल निकला मेरे पिता जी की खुशी का ठिकाना न रहा उन्होंने कहा—बेटा अब मैं आगे नहीं पढ़ा सकता मैं अब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रिटायर होने वाला हूँ चाहता हूं तुम कहीं लग जाते मेरा अब क्या भरोसा तेरी माँ के मरने के बाद मेरी कमर टूट गई। अब तो चाहता हूं घर में बहू आ जाय तो चैन से मर सकूं।"

"यह आप कैसी बातें करते हैं पिता जी आपको चिन्ता करने की क्या जरूरत है समय आने पर सब हो जायगा।"

तो सुन, मेरे एक मित्र की लड़की है पढ़ी तो अधिक नहीं है लेकिन लड़की सुशील है। घर के काम काज में बहुत होशियार है। मैं उसको चिट्ठी लिख कर बुलाए लेता हूँ तू लड़की देख ले मैं पुराने विचारों का अवश्य हूँ लेकिन शादी के मामले में लड़के लड़की की पसंद जरूरी है।"

"लेकिन पिता जी आप बुरा न माने तो एक बात कहूं ?"

"क्या ? उसमें बुरा मानने की क्या बात है ?"

"मैंने लड़की देख ली है मेरे साथ ही एम. ए. पास किया है उसके पिता जी रिटायर्ड जज हैं।"

"क्या नाम है उनका ?"

"पी० एन० दुबे।"

"बेटा तूने अभी तक पढ़ा है दुनिया नहीं देखी है शादी हमेशा अपने से कम हैसियत वाले की लड़की से करनी चाहिये क्या तू समझता है कि वह तुझसे शादी कर देंगे ?"

"हां पिता जी उन्होंने दो वर्ष पूर्व ही वचन दे दिया था जब वह रिटायर भी नहीं हुए थे।"

"उनको मालूम है कि तू एक मामूली क्लर्क का लड़का है जो उन्हीं के नीचे काम करता रहा।"

"यह मैं नहीं जानता लेकिन इससे क्या, मैं फर्स्ट क्लास M. A.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हूं यदि भाग्य ने जोर मारा तो I. A. S. के कम्पटीशन में निकल जाऊँगा।"

"यह सब ठीक है लेकिन यह तेरा भ्रम है। मेरा कहना मान और जो कुछ हुआ उसे स्वप्न समझ कर भुला दे।"

उस समय मैं पिता जी की बातों को अनसुना कर केवल दिया। मैंने सारी बातें उमा को बता दी उमा को भी अपने विश्वास पर सन्देह था लेकिन उसके पिता वचन दे चुके थे आखिर वही हुआ। मुझे उमा के पिता जी ने बुलाया।

"बेटा अब मैं सोचता हूँ कि तुम्हारा विवाह कर दूं। मैंने यह तो कभी पूछा ही नहीं कि तुम्हारे पिता जी किस पोस्ट पर हैं मैं उनसे मिल कर सब तय कर दूँ तुम अपनी कोठी का नम्बर दे दो मैं आज शाम को ही उमा की माँ को लेकर चला जाऊं और सब तय कर दूं।"

मेरे एक धक्का सा लगा कोठी, पोस्ट मैं तो एक छोटे से मकान में रहता था वह भी किराए का।

"जी आप कहें तो मैं पिता जी को आपके पास ही भेज दूं।"

"नहीं बेटा हम लड़की वाले हैं हमको ही जाना चाहिये। तुम संकोच मत करो मैं उनको तैय्यार कर लूंगा। उमा ने बताया था कि तुम्हारे पिता जी बड़े आफिसर हैं इसीलिये मेरी कोठी पर उमा के साथ पढ़ने को तुमको नहीं आने देते थे लेकिन उमा मुझसे लेटर लिखवा कर ले गई तब उन्होंने परमीशन दी। वह कितने ही बड़े क्यों न हों मैं उनको राजी कर लूंगा। मैं रिटायर हो चुका हूँ फिर भी चालीस हजार से कम की शादी नहीं करूंगा यदि वह अधिक डाउरी मांगेंगे तो उसका भी प्रबन्ध कर दूंगा। तुम सोच न करो उमा को पता दे देना मैं अभी बाहर जा रहा हूँ।"

अब मेरी समझ में आया कि उमा के पिता जी क्यों शादी करने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

को तैय्यार हो गए। उमा ने उनसे झूंठ बोला। उसने मुझे अपनी कोठी पर बुलाने के लिए किसी आफिसर का पुत्र बताया क्योंकि ऊंचे लोगों की दृष्टि में शराफत रईस घरानों में ही है गरीबों के पास कुछ भी नहीं। मैंने देखा उमा अपने कमरे में पड़ी सिसक रही है मैं पास जाकर बैठ गया उसका कन्धा हिलाते हुये कहा,

"क्या बात है उमा ?"

"कुछ नहीं रमेश मुझसे बड़ी भूल हो गई मैंने तुम्हारा सब कुछ छीन लिया मैं नहीं जानती थी कि पिता जी तुम्हारी योग्यता से अधिक खानदान को महत्व देंगे तुम क्या किसी खानदानी से कम हो जिन लोगों ने रिश्वत लेकर, ब्लेक मार्केट कर दूसरों का खून चूस कर धन इकट्ठा किया वह शरीफ हैं और जो मनुष्य सुबह से शाम तक ईमानदारी से चार पैसे कमा कर अपना गुजारा करता है अपना पेट काटकर बच्चों को पढ़ाता है वह खानदानी नहीं।"

"अब रोने से क्या लाभ ? जो होना है होगा।"

"तुम मुझ पर संदेह न करना रमेश ! मैंने तुमको अपना बना लिया है हिन्दू नारी केवल एक ही को हृदय में बसाती है मैं जज की लड़की जरूर हूँ और M. A. तक पढ़ी भी है परन्तु मेरी धमनियों में सीता और सावित्री का ही रक्त है यदि मैं तुमको न पा सकी तो यह शरीर अब और किसी के अपर्ण न होगा।"

"ऐसी बातें करके तुम मुझे फिर कायर बना रही हो उमा ! तुमने मुझ जैसे आवारा और बदमाश को इस योग्य बनाया। याद है कालिदास पिक्चर ! एक मूर्ख को विद्वान बनाने का शौर्य पुष्पावलि का ही तो था। तुम्हारी प्रेरणा पाकर ही मैं वह बन सका जो आज हूँ वरना वही नरक का कीड़ा बना रहता।"

"अब इसका उपाय ही क्या है पिता जी पुरानी लकीर नहीं तोड़ सकते वैसे मैं कोशिश करूँगी।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

× × ×

'उमा'

हाँ पिता जी

तुझको मालूम है कि रमेश का पिता एक मामूली क्लर्क है जो मेरे मातहत काम कर चुका है।

'हाँ'

"फिर तूने मुझे धोखे में रक्खा मुझे यह मालूम होता तो ऐसे आवारा कुत्ते को घर में न घुसने देता।"

"लेकिन पिता जी आप शादी तो रमेश से कर रहे हैं मुझे तो उसी के साथ जीवन काटना है।"

इससे क्या ? हम लोग खानदानी हैं एक मामूली क्लर्क के लड़के को अपनी लड़की देकर समाज में नाक कटवा दूँ। नालायक मुझे तुझसे ऐसी उम्मीद न थी।"

"क्या गरीब इन्सान नहीं होते यह ऊँच नीच का भेद तो हम लोगों ने बनाया है। समाज—आप उस समाज की बात कर रहे हैं जो दूसरे को रोते देखकर हँसता है और हँसने पर जलता है जिस समाज में पाप से धन कमाने वाला पूजा जाता है और ईमानदारी से धन कमाने वाला दुतकारा जाता है। रमेश के पिता उन लोगों से लाख दर्जे अच्छे हैं जिनकी कोठियाँ, कारों पर मोहित होकर जिनके शराबी नालायक लड़कों से आप मेरा जीवन बांध देंगे, मैं भारतीय लड़की हूँ पिता के सामने जुबान नहीं खोल सकती पढ़ा अवश्य हूँ, परन्तु पढ़कर सीखा यही कि ऐसा विद्रोह न करूँ जिससे आपकी आत्मा को दुख पहुँचे। अपनी आहुति दे दूँगी परन्तु आपकी नाक नहीं कटने दूँगी।

× × ×

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और उस दिन से उमा की दशा गिरती गई वह मुझसे नहीं मिल सकती थी। उसके पिता अपनी जिद पर अडिग ही रहे उन्होंने उसका रिश्ता अपनी ही हस्ती के एक इन्जीनियर के लड़के से तय कर दिया जो ३ साल से M. A. में फेल हो रहा था लेकिन इन्जीनियर साहब के पास राष्ट्र की गाढ़ी कमाई से बचाया हुआ धन था, कोठियाँ थीं, कारें थीं। बरात आई शादी की तैय्यारी हुई लेकिन उमा........उसके लगन मण्डप में जाने से पहले ही प्राण पखेरू उड़ चुके थे उसने हीरे की कनी खा ली थी। उसका अंतिम पत्र मुझे मिला।

रमेश—मेरे रमेश !

मैं सदा के लिए जा रही हूँ। चाहती थी कि मरते समय तुम मेरे पास होते। लेकिन शायद मेरे झूठ बोलने का फल परमात्मा ने दिया कि ऐसा सौभाग्य न मिला। मैं इस जीवन में तुमको न पा सकी। समाज के इन झूठे बन्धनों ने मुझे लाचार कर दिया लेकिन मेरी अंतिम इच्छा तुम पूरी कर देना तुम शादी जरूर कर लेना। तुमको मेरी कसम मेरे प्यार की सौगन्ध। यदि तुमने कुछ कर लिया तो मेरी आत्मा को शान्ति न मिलेगी।

तुम्हारी ही—उमा

अब आप ही बताइये बाबा, मैं क्या करूँ जिसने मेरे लिये जींवन दे दिया मैं कैसे उसे भुला दूँ।

"तुमने उससे प्यार किया था ?"

'हाँ'

'झूठा यदि प्यार होता तो उसकी अन्तिम इच्छा पूरी न करते। तुमको अब अपने जीवन पर क्या अधिकार है तुमको उसकी इच्छा पूरी करना है। जाओ अपने कर्त्तव्य का पालन करो जो ज्ञान तुमने प्राप्त किया है उसको नष्ट न करो जिस कारण उमा ने जान दी समाज में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रह कर उन बन्धनों को दूर करो समाज को बदलने के लिए स्वयं अपने को बदलना होगा व्यक्ति के बदलने से समाज बदलेगा समाज के बदलने से व्यक्ति नहीं इकाई बदलती है समूह नहीं।"

"लेकिन मैं अकेला क्या कर सकता हूँ"

"तुम अपने को अकेला मत समझो। हजारों तुम्हारे साथ हैं उनका पथ प्रदर्शन करो जो तुम्हारी तरह अपने को अकेला समझकर समाज में आघात सह रहे हैं, पीड़ा सहते हैं परन्तु आह तक नहीं करते, उमा देवी थी वह तुमको एक मार्ग बता गई उस पर चलो उसकी प्रेरणा लेकर समाज को बदलो देश को बदलो, राष्ट्र को तुम जैसे युवकों की आवश्यकता है। वह प्रेम नहीं वासना थी जिसके पीछे तुम दौड़ रहे थे। प्रेम मिलन नहीं विरह चाहता है। प्रेम आत्मा से होता है, हृदय से होता है उसका सम्बन्ध शरीर से नहीं होता, उमा जीवित है, वह मरी नहीं, वह तुम्हारे लिए कभी नहीं मर सकती। उसका शरीर नहीं है जिससे तुम अपनी वासना की तृप्ति कर सको। वह देखो ध्यान से देखो उमा तुम्हारे सामने खड़ी मिलेगी एकाग्र चित्त से·······हाँ बाबा····बिलकुल वही···· यह तो सचमुच खड़ी है वही गोल गोरा चेहरा, कानों में कुन्डल, सफेद साड़ी और माथे पर घुँघराली लट·······उमा·······उमा······ लेकिन बाबा यह पास क्यों नहीं आती वह घूरकर क्या देख रही है········ उमा देखो मैं हूँ रमेश तुम्हारा रमेश मुझे और न रुलाओ·······उमा ·······मुझे और न रुलाओ मेरा अब कौन है इस दुनिया में? मेरे नजदीक आओ। एक बार मुझे कुछ कह लेने दो। मैं जाने क्या क्या कहना चाहता हूँ मेरा दम घुट रहा है उमा! मैं मर जाऊँगा। याद है एक दिन मैं कुछ देर से पहुँचा था तुम मान किये बैठी थी आखिर मैं पाँच बार कान पकड़ कर उठा बैठा आज फिर मुझे सजा दे रही हो— यह देखो मेरी क्या दशा हो गई है तुम मुझे कभी भी उदास नहीं होने देती थीं आज मेरे आसुओं पर भी तरस नहीं खाती। सचमुच मैं इसी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लायक हूँ मैंने तुमको मार डाला उमा – मैं हत्यारा हूँ, पापी हूँ, तुम्हारी मौत का कारण मैं ही तो था मैंने तुम्हारी जान ले ली लो मैं भी अपनी जान दिए देता हूँ इसी नदी में कूद कर........।

रमेश........

हाँ बाबा........उमा........बाबा........उमा कहाँ गई ? वह अभी यहीं खड़ी थी।

वह बहुत लजीली थी एम० ए० तक पढ़ने पर भी उसमें लज्जा गाँव की लड़कियों के समान थी वह कहा करती थी "हमारी शिक्षा हमको निर्लज्ज होना नहीं सिखाती; लज्जा ही नारी का भूषण है और प्रणय सुहाग। ये दोनों नहीं तो नारी ही क्या ? यूनिवर्सिटी में कभी किसी की ओर आँख उठा कर भी उसने नहीं देखा. हम दोनों इतने समीप थे फिर भी लाज का पर्दा उसने बीच में रक्खा। मैं सदा ही भावों में बह जाता था कभी उसका हाथ पकड़ता तो वह झटके से छुड़ा लेती "नहीं दूर---यह अधिकार तुमको नहीं है यह हाथ तो पिता जी तुमको पकड़ाएँगे तभी खींचकर ले जाना मैं कुछ न कहूँगी।"

एक बार हम दोनों एक अंग्रेजी लेखक का नावेल पढ़ रहे थे जिसमें प्रेमी को उसकी प्रेमिका डाइवोर्स कर देती है उसने टीका करते हुए कहा था "कितना अन्तर है हमारे और पश्चिमी आदर्शों में। पश्चिम में सुबह विवाह होता है शाम को तलाक परन्तु भारतीय नारी के जीवन में एक ही बार विवाह होता है जाने या अन्जाने।"

मैंने एक दिन उसका दुपट्टा खींच दिया वह कुछ तीखे स्वर में बोली यद्यपि उसमें प्यार की झलक थी "सीमा का अतिक्रमण करने का फल जानते हो ? तुमने तो बी० ए० में पालिटिक्स ली थी हम दोनों को अपनी सीमा में ही रहना है अनाधिकार चेष्टा ठीक नहीं।"

"लेकिन दोष तो तुम्हारे रूप का है"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"इसका मतलब है तुम मेरे रूप को प्यार करते हो सदा तो रूपवती रहूँगी नहीं फिर तुम ठुकरा दोगे।

"तुम लज्जित न किया करो। मेरा यह मतलब थोड़े ही था।"

"सुनिये मि० रमेश एम० ए० तुम पर अभी पिछला नशा कभी-कभी चढ़ जाता है सिनेमा में जिस प्रेम को दिखाया जाता है वही हमारे नवयुवकों और युवतियों पर प्रभाव डालता है। शादी से पूर्व मिलन, छेड़-छाड़ और पतन यही भारत में भी चल पड़ा है पश्चिमी सभ्यता ने हमारे देश को मिटा दिया। हम दूसरों से घृणा न करें बल्कि उनकी अच्छी बातों को लें।"

मैं और भी लजा गया और क्षमा माँगने लगा उसने मुस्करा कर कहा—अच्छा माफ किया परन्तु आइन्दा ऐसी भूल न करना जानते हो मेरे पिता जी जज है फैसला मेरे पक्ष में ही होगा।

लेकिन आज........आज वह जज अपने घर में ही न्याय न कर सके उनके अन्याय ने उन्हीं की लड़की की जान ले ली। सजा मुझे मिलनी थी, दी उसे। लेकिन बाबा उमा अब दिखाई क्यों नहीं देती उमा........

"रमेश तुम्हारा भ्रम था यहाँ उमा नहीं थी। तुम भ्रम में थे इसी लिए तुमको वह सब दिखाई दे रहा जो तुम्हारे मस्तिष्क में था मैंने तुमको पुकार कर तुम्हारा भ्रम तोड़ दिया अब तुम घर जाओ और उमा की अन्तिम इच्छा पूरी करो—"जैसा आप कहें बाबा लेकिन कभी भी जब मेरी उमा आपको मिले तो आप उसको बता दें कि आपने ही मुझे उसके पास जाने से रोका।"

× × ×

प्रति वर्ष एक निश्चत दिन एक मोटर आकर श्मशान पर रुकती है उसमें से एक दम्पत्ति उतर कर समाधि पर पुष्प चढ़ाते हैं दो मिनट तक मौन रह कर, एक गहरी साँस लेकर चले जाते हैं। बाबा अब भी वहीं हैं जो स्वयं वहाँ किसी खोई हुई वस्तु को पिछले तीस वर्षों से खोज रहे हैं।

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'रोमांस' !

लेखिका कुमुद झिगरन

नीला घर के सभी कामों से निपट कर तैयार हुई तो घड़ी की ओर देखा तीन बज चुका था. किन्तु जाना भी आवश्यक था क्योंकि सुमन ने कहा था, नीला मैं छः बजे तक तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगी आना अवश्य। करीब दो वर्ष के बाद तो आज उसने सुमन के पास जाने की सोची है, उसमें भी अड़चने, कहाँ तो दोनों में इतनी मित्रता थी हर महीने दो एक बार जाना-आना हो ही जाता था, किन्तु इधर एक वर्ष की दूरी बहुत हो चुकी थी। नीला बड़ी उत्सुकता से सुमन के होस्टल पहुँची, पर सुमन कहीं जाने को तय्यार हा रही थी, नीला को देखते ही बाला अरे नीला तुमने आने में बहुत देर कर दी, अभी-अभी एक साहब का फोन आया है उन्होंने मुझे बहुत जरूरी काम से बुलाया है। 'मैं तो समझी कि तुम अब नहीं आओगी उनसे मैंने पाँच का समय दे दिया है'। 'तो अभी मना कर दो न कि मैं नहीं आ सकती, जब तुमने मुझे बुलाया था तो फिर किसी और को समय ही क्यों दिया।' सुमन ने कहा चलो तुम भी मेरे साथ कुछ बाजार से सामान आदि खरीदना है।

नीला ने एक गिलास पानी माँग कर पिया फिर कहा सुमन पहले जीजा जी का कुछ हाल चाल बतलाओ कब तक आ रहे हैं, अकेले ही आयेंगे या बच्चों को साथ लायेंगे। सुमन बोली—तुमतो जानती हो मैं यहाँ बच्चों को संभालू तो सरविस कैसे कर सकती हूँ, उनका तो वहीं रहना ठीक है, हाँ जीजा जी अगले हफ्ते में आयेंगे, इस समय तुम्हें मैं जीजा जी का और बच्चों का फोटो दिखाती हूँ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुमन से कुछ फोटो कार्ड लेकर नीला ने देखा जीजा जी के बाद बच्चों का फोटो देखा जो ऐसा मालूम होता था कि सुकुमार फूल जल के अभाव से कुम्हला रहे हों, नीला ने कहा सुमन इन भोले बच्चों का मुख माँ के ममता रूपी जल के अभाव से कुम्हलाया सा प्रतीत होता है, इन्हें अपने ही पास रखो, या तुम्ही वहाँ जाकर रहो क्या वहाँ सरविस नहीं मिल सकती ? सुमन को नीला की यह बातें नीरस सी लग रही थीं इस समय क्योंकि उसे देर हो रही थी। बात बदलते हुए नीला के साथ बाहर आई। दरवाजा बन्द करके ताला लगाया और चल दी कुछ सामान बाजार से खरीदने के बाद उस स्थान पर पहुँची जहाँ वह साहब उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

नीला ने समझा कुछ देर बातें कर लेने के बाद लौट चलेंगे किन्तु यहाँ तो पहले से ही प्रोग्राम बने थे, सुमन ने कहा आप कितनी देर से यहां कार लिये खड़े होंगे। माफ करियेगा मुझे आने में ज़रा देर हो गई। उस व्यक्ति ने कहा जी नहीं मैं अभी अभी आया हूँ, मुझे बिलकुल प्रतीक्षा नही करनी पड़ी आइये बैठिये ! सुमन ने कार का दरवाजा खोला और नीला को साथ लेकर अंदर जा बैठी, नीला बड़े असमंजस में पड़ गई, चुपचाप बैठ जाने के सिवा और कोई चारा ही न था। सुमन ने कहा, नीला चलो आज तुम्हें बहुत अच्छी जगहें घुमायेंगे जहां शायद तुम कभी न गई होगी। यह स्थान बड़ा ही सुन्दर है। नीला ने देखा दोनों ओर बड़े बड़े वृक्ष प्रहरी के समान कतार बनाये मीलों तक खड़े थे यह रास्ता नहर पार करता हुआ किसी गाँव को मुड़ गया नहर के किनारे कार रुकी सब लोग उतरे। स्थान बड़ा ही रमणीक थी सचमुच नीला ने कभी यह जगह नहीं देखी थी। चारों ओर जंगल थे बीच में नहर और उसका पुल, नहर काफी चौड़ी थी जल भी स्वच्छ था, संध्या के समय भगवान भास्कर अपनी अपूर्व छटा बिखरा कर अस्त होने जा रहे थे। वृक्षों के नये नये पत्तों पर छिटकी हुई किरणों की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आभा बहुत भली लग रही थी। आकाश में तरह तरह के रंग बिरंगे चित्र न जाने कौन चितेरा छिप कर बनाता और मिटाता जा रहा था। वातावरण बिल्कुल शांत था। लहरों के कल्लोल की मधुर आवाज आ रही थी। चारों ओर निर्जन स्थान में एक अजनबी व्यक्ति को देख कर नीला का हृदय पहले से ही धड़क रहा था। सुमन कुछ सामान लेने कार तक गई थी सहसा उस व्यक्ति ने नीला के पास टहलते हुये कहा—कितना सुहाना समय है यहां टहलने का, आप तो आकर बैठ ही गई। जरा देखिये तो उठकर।

किन्तु नीला जल के प्रवाह को देखने में व्यस्त थी वह सोच रही थी, 'मनुष्य का हृदय क्षण पर बदलता रहता है किन्तु प्रकृति का नियम एक है ! इस प्रवाह में कितनी दृढ़ता है ! इसी बीच सुमन आई नास्ते निकालती हुई पास बैठ कर बोली नीला। इतनी तन्मयता से क्या देख रही हो ? ओह ! तुम तो कवियत्री हो तुम्हें तो कविता याद आ रही होगी। कुछ सुनाओ भी ! नीला ने उसी तरह बैठे हुए कविता की कुछ पंक्तियाँ कहना शुरू की जो कल ही उसने अपनी मित्र की एक पत्रिका में पढ़ी थी।

"प्रकृति वधू की प्रत्थामा में क्या प्रतिविम्ब तुम्हारा ही है !
संध्या के ढलते सूरज में तरुवर के नूतन किसलय में
सरिता के अविरल प्रवाह में क्या प्रतिविम्ब तुम्हारा ही है !"

बहुत सुन्दर कविता है नीला !

पवन की अठखेलियों से लहरों की छलकन देखकर सुमन ने भी कुछ गाना शुरू किया शायद किसी फिल्मी गीत की पंक्ति थी। तभी एकाएक उस व्यक्ति ने आकर प्रश्न किया। 'यह पंछी इतनी तेजी से कहाँ जा रहे हैं !' सुमन ने कहा इनका भी कही घर होगा, साथी होंगे। नीला ने कहा हाँ और क्या उनके अबोध बच्चे होंगे जो घर पर प्रतीक्षा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर रहे होंगे; कितने सचरित्र मालूम पढ़ते हैं प्रकृति का कोई भी रोमांश इन्हें नहीं रोक सकता, बच्चों से मिलने का प्रबल उत्साह है घर का स्नेह है इसीलिये इतनी तेजी से चले जा रहे हैं।

कुछ क्षण तक सब मौन रहे, फिर उसी व्यक्ति ने मौन तोड़ते हुए कहा चलिये शाम हो रही।' आप लोग तो अपनी अपनी भावनाओं में ही व्यस्त हैं। नीला ने कहा सुमन ! काश यहीं कहीं पर छोटा सा बंगला होता कितना अच्छा था मैं तो अवश्य खरीद लेती या किराये पर ही ले लेती। सुमन और व्यक्ति ने हँसते हुए कहा—मकानों और घरों के वातावरण से उकताकर तो लोग यहाँ जी बहलाने आते हैं सुमन ने कहा इन्हीं बेचारों को देखो ना घर पर रिश्तेदारों की महमानदारी करते करते ऊब गये हैं। तभी तो आज एकांत भ्रमण को निकले हैं। घर पहुँचते ही बीबी की चिड़चिड़ाहट, खर्चे की माँग बच्चों का शोर गुल भयानक सिर दर्द पैदा कर देता है। नीला ने विषय को बदलने के तात्पर्य से कहा—सिर दर्द का नाम सुनते ही मेरे सिर में दर्द पैदा हो गया सुमन ! अब चलना चाहिये। घर पहुँचने तक काफी देर हो जायगी सुमन उठते हुए बोली हाँ हाँ चलो लेकिन पहले तो मेरे होस्टल चलना होगा, वहाँ चाय पीकर खाना खाकर तब घर जाना ! नहीं सुमन, मुझे घर पर औरों के भी भोजन का प्रबन्ध करना है। तुम्हारी इच्छा ही है तो शहर चल कर कहीं चाय पिला देना वही से बस ले लूँगी।

सुमन तो चांहती भी यही थी, तभी उस व्यक्ति के सुमन के कानों के पास मुँ ले जाकर कुछ कहा—और मुस्कराकर टहलने लगा किन्तु बोला अब रुकने को बिलकुल तैयार न हुई। आखिर तीनों कार में बैठने लगे, इस बार नीला ने सुमन से अपने पास ही बैठने को कहा— उस व्यक्ति ने कहा—'आपको यह स्थान बहुत ही पसंद आया है। तो फिर किसी दिन आने का प्रोग्राम रखा जाय। नीला ने कहा प्रोग्राम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बनाने की कोई आवश्यकता नहीं मैं उनके साथ मोटर न सही तो मोटर साइकिल पर जाऊँगी वहाँ उन्हें भी यह स्थान बहुत पसन्द आयेगा। हाँ इस स्थान का नाम तो नोट कर लूँ और हाँ रास्ता भी शायद न याद रहे। नीला ने अपनी डायरी निकाली और सब कुछ नोट कर लिया।

शहर आ गया नीला, सुमन कार से उतरीं और एक होटल में बैठ कर चाय नास्ता किया, फिर बाहर आकर नीला ने घर के लिए बस पकड़ी और सुमन से बिदा ली।

रास्ते में न जाने कितने ही विचार नीला के हृदय को मथे डाल रहे थे। वह सोचती रही (वाह रे पुरुष तूने तो अपने जी बहलाने का साधन ढूँढ़ निकाला पर कभी उस बेचारी स्त्री की ओर भी ध्यान दिया जो दिन भर घर के काम काज, बच्चों की देख-रेख और मेहमानों की खातिर करने बाद भी चैन नही पाती और तू भी उसे सिर दर्द समझता है। क्या उसका जी नहीं ऊबता होगा उस वातावरण से। जिससे उकता कर तू रोमांस करने जाता है। इसी बीच एक मोटर की आवाज ने उसकी भाव भंगिया को तोड़ दिया, अरे यह तो उसके पतिदेव ही थे जो दिन भर के बाद घर जा रहे थे। उसका हृदय क्षोभ से भर उठा क्या वह यहां का आना उनसे छिपा सकेगी ? कदापि नहीं वह छल कभी नहीं कर सकती भले ही उसे कटु-व्यंग सहने पड़ें। उसका हृदय तो उसे सांत्वना देगा। घर जाकर उसने सारी बातें बातों बातों में कह डालीं, उसके पति ने कुछ नाराजी के स्वर में कहा—अच्छा तो आज रोमांस करके आई है ! हम गरीबों के साथ तुम्हें मोटर कहां मिल सकती है ! नीला ने कभी कल्पना भी न की थी कि वह इस रोमांस समझेगा। निर्दोश नीला को पति का यह रूखा व्यवहार असहनीय हो गया, जितनी ही वह सच्चाई साबित करने की कोशिश करती परिणाम उतना ही विपरीत होता।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसने अपनी डायरी निकाली और पन्ने पर पन्ने भरती चली जा रही थी उसी समय मैं उसके घर पहुँची उसे इस तरह लिखने में व्यस्त देख कर मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा, मैंने पास जाकर पुकारा नीला जी क्या लिख रही हो इतनी लगन से। नीला ने जल्दी से डायरी बन्द कर दी, और फीकी मुस्कान होठों पर लाकर बोली आओ तुम्हारे लिये कहानी के प्लाट तैयार कर रही हूँ। पर अभी अधूरी है। मैंने लपक कर उसके हाथ से डायरी छीन ली, जिसके पन्नों पर बड़े विचित्र ढंग से लिखा था—'रोमांस'!

————

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"भूला पथिक"

ले० कामता प्रसाद शास्त्री

हरिद्वार की शिवालिक पर्वत श्रेणियाँ अपनी भयंकरता के लिए प्रसिद्ध हैं, सुनते हैं अब भी रात में चण्डी वाहन वहां दर्शन देते हैं। चण्डी देवी से ऊपर एक फर्लांग चलकर अंजना देवी का दर्शन करके दो नवयुवक मन्दिर की सिंह पौरि पर खड़े हुए। कुछ फुसफुसाये और नीचे सर्पाकार पगडंडी पर उतरने का प्रयत्न करने लगे एक ने कहा निष्फल।

दूसरा नवयुवक कुछ नीचे की ओर उतर चुका था। बोला क्या है? सुधीर! कुछ मुझसे कह रहे हो। उत्तर मिला नहीं, विमल यूं ही। सुधीर अपनी विद्वता के सांथ-साथ शान्त और गम्भीर प्रकृति का था। बोला, गुरु लोगों से यह छल-कपट न बताओ मैं मानव के इङ्गितमात्र से ही उसके मनोगत भावों को पहचान लेता हूँ।

बोलो! बतला दूं। तुमने क्या कहा विमल ने दीर्घ निश्वास लेते हुए कहा मित्र! दुराव की क्या बात बतला दो। मैंने तो यूं ही........

सुधीर बोला, विमल! आज तुम मुझसे पराजित हो गये, तुम अपने तंत्रवाद की पुष्टि के लिए मेरे साथ अनर्गल वाद विवाद किया करते थे। वह सब व्यर्थ हुआ, दर्शन करके, कितनी शान्ति प्राप्त की। तुम्हारी मुखमुद्रा और दीर्घो श्वास प्रकट कर रहे हैं, कि तुम अशान्त और निष्फल प्रयत्न हो, अतः अभी और कुछ दिन संसार की गन्दी विधियों में जीवन के मोड़ लगाओ पुनः एक वर्ष पश्चात मुझसे मिलना तब........मैं चला............

प्रत्युत्तर के बिना ही सुधीर विमल को वहीं छोड़कर हिमालय की अधित्यकाओं.... में तिरोहित हो गया, विमल वहीं बैठ गया, और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसने अपनी डायरी निकाली और पन्ने पर पन्ने भरती चली जा रही थी उसी समय मैं उसके घर पहुँची उसे इस तरह लिखने में व्यस्त देख कर मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा, मैंने पास जाकर पुकारा नीला जी क्या लिख रही हो इतनी लगन से। नीला ने जल्दी से डायरी बन्द कर दी, और फीकी मुस्कान होठों पर लाकर बोली आओ तुम्हारे लिये कहानी के प्लाट तैयार कर रही हूँ। पर अभी अधूरी है। मैंने लपक कर उसके हाथ से डायरी छीन ली, जिसके पन्नों पर बड़े विचित्र ढंग से लिखा था—'रोमांस'!

————

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"भूला पथिक"

लें० कामता प्रसाद शास्त्री

हरिद्वार की शिवालिक पर्वत श्रेणियाँ अपनी भयंकरता के लिए प्रसिद्ध हैं, सुनते हैं अब भी रात में चण्डी वाहन वहां दर्शन देते हैं। चण्डी देवी से ऊपर एक फर्लांग चलकर अंजना देवी का दर्शन करके दो नवयुवक मन्दिर की सिंह पौरि पर खड़े हुए। कुछ फुसफुसाये और नीचे सर्पाकार पगडंडी पर उतरने का प्रयत्न करने लगे एक ने कहा निष्फल।

दूसरा नवयुवक कुछ नीचे की ओर उतर चुका था। बोला क्या है ? सुधीर ! कुछ मुझसे कह रहे हो। उत्तर मिला नहीं, विमल यूं ही। सुधीर अपनी विद्वता के सांथ-साथ शान्त और गम्भीर प्रकृति का था। बोला, गुरु लोगों से यह छल-कपट न बताओ मैं मानव के इङ्गितमात्र से ही उसके मनोगत भावों को पहचान लेता हूँ।

बोलो ! बतला दूं। तुमने क्या कहा विमल ने दीर्घ निश्वास लेते हुए कहा मित्र ! दुराव की क्या बात बतला दो। मैंने तो यूं ही........

सुधीर बोला, विमल ! आज तुम मुझसे पराजित हो गये, तुम अपने तंत्रवाद की पुष्टि के लिए मेरे सांथ अनर्गल वाद विवाद किया करते थे। वह सब व्यर्थ हुआ, दर्शन करके, कितनी शान्ति प्राप्त की। तुम्हारी मुखमुद्रा और दीर्घो श्वास प्रकट कर रहे हैं, कि तुम अशान्त और निष्फल प्रयत्न हो, अतः अभी और कुछ दिन संसार की गन्दी विधियों में जीवन के मोड़ लगाओ पुनः एक वर्ष पश्चात मुझसे मिलना तब·······मैं चला············

प्रत्युत्तर के बिना ही सुधीर विमल को वहीं छोड़कर हिमालय की अधित्यकाओं···· में तिरोहित हो गया, विमल वहीं बैठ गया, और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विचार मग्न हो गया, सोचता रहा और भगवान आशुतोष गौरीशंकर की ओर उतरने लगा, सहसा उसके श्रवणपुट में अमृतवाणी आकर टकरायी, कौन हो वत्स ! कहां जा रहे हो ?

विमल कुछ रुका और इधर-उधर दृष्टि प्राक्षेप करके देखा, किन्तु कोई दिखाई न दिया। सोचा इस वीहण वन में किसने पुकारा और कहां है वह व्यक्ति ? पुनः चल दिया। सहसा कन्धे पर एक वरद हस्त आया, और मुस्कराते हुए, एक जटिल सन्यासी खड़े थे। उन्होंने कहा........ ....इतनी अधीरता क्यों, आओ मेरे साथ, विमल मन्त्र मुग्ध की भाँति साधु के पीछे पीछे नीलेश्वर की ओर पर्वत शिखर पर चढ़ने लगा, और क्लान्ति तथा श्रम, सब दूर हो गये। कुछ क्षण में सामने एक लता और पुष्पों के भार से लदी हुई एक सुन्दर पर्णकुटीर के पास विमल खड़ा था, साधु ने आवाज दी आओ वत्स ! और विमल एक कुशासन पर बैठ गया, कुटीर में कोई विशेष सामग्री न थी। एक मिट्टी का चबूतरा, उस पर बिछा हुआ व्याघ्र-चर्म और पास में रखा हुआ तोंबी का पात्र शायद जल से पूर्ण था। कुछ देर दोनों शान्त और स्तब्ध बैठे रहे।

साधु ने ध्यानमुद्रा भङ्ग करते हुए कहा, वत्स ! इधर वनैले जानवरों का सञ्चरण अधिक होता है अतः आग जला लूं और उसने बनैले काष्ठ एकत्रित करके अपनी धूनो प्रज्वलित की। विमल सब चुपचाप देखता रहा, साधु ने सुधा वर्षिणी वाणी में बोलना प्रारम्भ किया।

वत्स ! जीवन सबसे बड़ा स्टेशन है, जिस प्रकार ट्रेन विलम्ब से आने वाले यात्री को प्रतीक्षा किये बिना ही चल देती है। ठीक उसी प्रकार समय के द्रुत क्षण किसी की प्रतीक्षा नहीं करते, यह इतने मूल्यवान क्षण सभी के लिये समान हैं। धरती पर आने से पहले वर्गीकरण नहीं था, सामान्य प्राकृतिक सुविधायें होते हुए भी, मनुष्य-मनुष्य

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में दुनिया अन्तर देखती है। राजा, प्रजा, व्यवसायी तथा अन्य सभी जीवन की इस दौड़ में भाग लेते हैं। विभिन्न परिस्थितियों में विभिन्न जोर लगाकर सभी जीवन की बाजी लगाकर जीतना चाहते हैं।

गाड़ी के गोल पहिए जीवन की दूरी नापा ही करते हैं। यह सब होते हुए भी यह नहीं कहा जा सकता कि संसार की गतिविधि कब क्या निर्णय देगी। तथ्यहीन और रोचक यह संसार कितना मनोहर है सत्य की भाँति ही भासित होता है। यह सब देखते हुए, मण्डन मिश्र का ही वाक्य सार्थक प्रतीत होता है। "जगद् ध्रुवंस्याज्जगद ध्रुवंस्यात्" किन्तु सद्विचारों के द्वारा स्वामी शंकराचार्य ही के वाक्य खरे उतरते हैं। "ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवोब्रह्मैवनापर:"

सहसा विमल चिल्ला पड़ा बस साधु बाबा बस, सभी प्रयत्न निष्फल। मुझे शान्ति चाहिए शान्ति, मैं भाषण सुनने का अभ्यस्त नहीं साधु स्तम्भित रह गया, बोला, तुम्हें शान्ति चाहिए विमल अच्छा सामने बैठ जाओ पद्मासन से।

विमल साधु की ओर लक्ष्य लगाकर बैठ गया, सहसा वह साधु की ओर देखता देखता ध्यान मग्न हो गया, और बैठा रहा सब इन्द्रियां शिथिल होकर केन्द्रित हो गयीं, मन जाल में बंधे मरकट की भांति शान्त हो गया, विमल शान्ति सरोवर में गोते लगा रहा था, सहसा साधु ने कहा वत्स बस करो।

विमल की ध्यान मुद्रा टूटी और साधु बाबा के चरणों पर नत मस्तक हो गया, साधु ने हंसते हुए कहा कहो क्या चाहते हो शान्ति या सुन्दर संसार।

विमल अब शान्ति का अनुभव कर रहा था, सोच रहा था, यह साधु हैं या साक्षात् भगवान ही अपने भूले भटके जनों को पथ प्रदर्शन करने के लिए इस शिखर पर मिल गये।

विमल ने कहा बाबा कौन सा मंत्र फूक दिया, अब मुझे चाहिए, आपके चरणों की शरण, मैं पाप तापों का सताया हुआ, भूला भटका

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एक प्राणी हूँ संसार सागर में गोते खाता हुआ, काम क्रोध के चक्कर में कठपुतली जैसा नाचता हुआ थक गया हूँ। अब मुझे चाहिए शांति और कुछ नहीं।

साधु ने विमल के चेहरे पर गंभीर दृष्टि डाली और मुस्कराये, बेटा अभी तुम्हें संसार में बड़े कार्यों की पूर्ति करना है तुम्हारा निवास स्थान............विमल ने अपनी कहानी प्रारम्भ कर दी, बाबा पुरी का तो नाम आपने सुना होगा पुरी के निकट एक माधवपुर ग्राम है, मेरे पिता अतुल सम्पत्ति के स्वामी थे, उनका मैं एकमात्र वंशधर हूँ, माता का स्नेह केवल ढाई वर्ष तक मिला, और वे काल कवलित हो गयीं। पिता जी ने मेरा लालन-पालन किया और वे भी तीन वर्ष के पश्चात माता जी की खोज में अज्ञात दिशा की ओर चले गये।

मैं अब निराश्रित अबोध संसार सागर की उत्ताल तरंगों के थपेड़े खाता हुआ, कभी मामा के घर, कभी बुआ के घर, यूंही भटकता रहा। जीवन के चौदह अमूल्य रत्न (वर्ष) व्यतीत किये, मेरे पिता की संपत्ति स्वार्थी परिवार वालों ने लूट ली।

मेरी शिक्षा का भार मेरे बूढ़े मामा जी उठाते रहे, अन्त में इन्टर फाइनल की फीस देकर वे भी अनन्त की ओर चले गये। किसी प्रकार मेरा मित्र और सहपाठी सुधीर अपने जेब खर्च से मेरे खाने पीने का व्यय चलाता रहा, मार्च में परीक्षा समाप्त हुई। मैं सुधीर के साथ उसके घर दरभंगा चला गया।

सुधीर के माता पिता ने मेरा अति आदर किया, और कहा बेटा विमल किसी प्रकार की चिंता मत करना, यह भी घर तुम्हारा ही है, समय चक्र एक-सा नहीं चलता, कभी ऊपर कभी नीचे पढ़ते रहो, जैसा सुधीर वैसे ही तुम। अब मेरे दो पुत्र हो गये, मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। मैं बड़े आनन्द के साथ उस परिवार के साथ घुल मिल गया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एक दिन मैं सुधीर के साथ कार में बैठा हुआ घूमने जा रहा था, कार की गति तीव्र थी ड्राइवर ने एक मोड़ पर जैसे ही कार घुमाई एक सात वर्षीय बालक उसके नीचे आ गया, और एक क्षण में उसकी ....'....इहलीला समाप्त हो गई, रोटी का एक टुकड़ा अब भी उसके हाथ में दबा था और कुछ मुंह में।

सहस्रो की भीड़ एकत्रित थी, सबके मुंह से निकला इन धनान्धों को ईश्वर का भी डर नहीं, एक निराश्रित बालक की हत्या कर दी, इनका क्या होगा, पैसे के बल पर बच जावेंगे, और हुआ भी यही।

इस घटना ने मेरे जीवन में एक और मोड़ लगा दिया। मैं अब अन्यमनस्क भाव से दिन काटने लगा।

एक दिन मैं उस निराश्रित बालक की घटना पर एकान्त में बैठा विचार कर रहा था। अरे मैं भी तो सर्वथा निराश्रित हूँ। सहसा सुधीर ने आकर मेरे कन्धे पर हाथ रखकर कहा, अकेले में बैठे क्या सोच रहे हो, आओ पिता जी ने पुकारा है।

मैं चल दिया उन्हीं विचारों में डूबा-डूबा। पिता जी ने मुझे देखते ही कहा, अरे विमल यह तुम्हारी आँखें कैसे गीली हो गयीं। क्या रो रहे थे, तुम्हें क्या कष्ट है बोलो बेटा ? मैंने कहा नहीं, यूं ही अपनी दशा पर मुझे कुछ·······

सुधीर के पिता ऐश्वर्य सम्पन्न होते हुए भी विद्वतापूर्ण गम्भीर विचारक, और दयालु प्रकृति के थे। और सुधीर की माँ, साक्षात् मूर्ति मती माता पार्वती का अवतार, मुझे अपने अङ्क में भरकर बोले छिः यह भी कोई विचार हुआ तुम अकेले कभी मत बैठा करो, सुधीर जाओ अभी ग्रीष्मावकाश है। विमल के साथ तुम हरिद्वार, ऋषिकेश घूम आओ, देखो विमल को कभी अकेले मत छोड़ना, अस्तु·····

सुधीर अपने पिता का इकलौता बेटा पढ़ने में चतुर गुणों में राम जैसा, माता-पिता का आज्ञापालक और भावुकता में पिता से भी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अधिक, उसने मेरा हाथ पकड़ा और घसीट कर बाहर उद्यान में ले गया, बोला तुम बड़े मूर्ख हो, क्या तुम अपने सिद्धांत पर ही पटकी खा गये। तुम तो कहते थे "गतं न शोचामिकृतं न मन्ये" क्या यही है तुम्हारा सिद्धांत ?

विमल ने कहा भय्या अब रहने दो मैं यूं ही तुम्हारे ऋण से उद्धार न पा सकूंगा। सुधीर ने कहा चलो हरद्वार वहां स्वर्गाश्रम में विद्वान संतों के उपदेश से हम लोग अपने जीवन की सफलता के लिए कर्तव्य निश्चित करेंगे, और हां तुम्हारी उपास्य देवी चण्डी मां भी तो वहीं एक शिखर पर हैं उन्हें भी अपनी दशा सुनाना, वे तो जगदम्बिका हैं, क्या हम उनके लिये सौतेले थोड़े ही हैं" इन्हीं विचारों में हम दोनों दरभङ्गा से कल सायंकाल यहां आये पतित पावनी गङ्गा में पाप धोये, पुनः देव दर्शन प्रारम्भ किया, इधर आने पर मां चण्डी को भी अपनी दीन दशा सुनायी, किन्तु वे इस समय कुछ कष्ट में हैं, कुछ उत्तर न दिया। सहसा मेरे मुंह से निकल पड़ा, सभी प्रयत्न निष्फल.......

मेरे साथी सुधीर ने मुझे चुनौती दी अतः वह भी अपने सिद्धांत के अनुसार अटल रहा और घर की ओर चला गया, और मैं सोचता बैठा रहा तब तक आपकी सुधावर्षिणी वाणी सुनी, यही है मेरा इतिवृत्त बाबा।..........

साधु ने कहा वत्स, मैं तुम्हें घर जाने की आज्ञा देता हूँ। यहां से बैठे-बैठे मैं तुम्हारी देख रेख रक्खूं गा, और तुम अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए प्रातः सायं केवल एक--एक घंटे मेरी बतलाई साधना का अभ्यास करो तुम अखंड शान्ति का अनुभव करोगे।

आओ सामने बैठ जाओ मैं तुम्हारी आत्मा पर ढके हुए मलविक्षेपों की सफाई कर दूं, और तुम अपनी दशा वर्ष में दो बार मुझे बतला जाना, अधिक आवश्यकता पड़े तो शाहजहाँपुर में बाबू रामचन्द्र के पास चले जाना, वे इसी मार्ग के सफल यात्री हैं, इस पथ का नाम है

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सहज मार्ग तुम्हें गृहस्थी में भी कोई बाधा न पड़ेगी और शान्ति तुम्हारे चरणों में नत होगी, पुनः साधु बाबा ने कुछ साधन के नियम बताकर सहसा कहा देखो उत्तर की ओर क्या है विमल ने जो घूमकर देखा तो एक प्रकाश का दर्शन हुआ और साधु अन्तर्धान थे। विमल ने देखा न साधु बाबा न कुटीर। और वह था हरद्वार में धर्मशाले की बेंच पर सहसा मुंह से निकला आश्चर्य..........

सुधीर कमरे से विमल की आवाज सुनकर बाहर आ गया बोला विमल तुम आ गये बड़े प्रसन्न मालूम देते हो। विमल ने कहा आज मुझे सहज मार्ग मिल गया, और पूर्व घटित घटना ज्यों की त्यों सुनायी। सुधीर और विमल दोनों सहज मार्ग के पथिक बन गये, अब वे शाहजहाँपुर से ही साधना का.......संबल पाते हैं। साधु बाबा पुनः खोजने पर भी कहीं "न मिले" केवल उनके संस्मरण अब भी शेष हैं। विमल हृदय पर "सहज मार्ग"।

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अलबेले पंछी

के. डी. शर्मा एम. ए.

आज मैं कौन हूँ ? क्या हूँ ? यह बताने की आवश्यकता नहीं ! इतना ही जानना पर्याप्त है कि मैं एक ऐसे व्यक्ति की पत्नी हूँ जिसका समाज में आदर है। धन है, ऐश्वर्य है, प्रतिष्ठा है, सभी कुछ है। घर भी भरा-पूरा है ५ बच्चे हैं। एक लड़का सेना में तथा दूसरा एक बड़ी फर्म का मैनेजर। लड़की का विवाह भी एक बड़ी कम्पनी के मैनेजिंग डाइरेक्टर से हुआ है। दो छोटे बच्चे कान्वेन्ट में पढ़ रहे हैं। नौकर चाकर भी हैं अपनी निजी दो कोठियां दिल्ली में हैं और एक बड़ा फार्म गाँव में है, जिसकी देखभाल मेरा मामा करता है। जहाँ भी जाती हूँ मुझे बड़ा सम्मान किया है। पिछले वर्ष कई वर्षों पश्चात् अपने गाँव गई थी सुना करती थी कभी वहाँ शाही सवारियां निकला करती थीं परन्तु प्रत्यक्ष अनुभव उस समय हुआ जब उनके वहाँ जाने का प्रोग्राम बना और एक माह में नगर से गाँव तक पक्की सड़क बनाकर तैयार की गई। मैं अपनों से तो न मिल सकी क्योंकि वह यह पसन्द नहीं करते थे कि आय लोगों से मिला जाय इससे अधिकारियों की दृष्टि में हमारी प्रतिष्ठा गिर जाती है। वह तो यह भी चाहते हैं कि क्लब में नृत्य करू जिससे अपने सचिव के सामने उन्हें लज्जित न होना पड़े। एक बार वह मुझे भी क्लब ले गये वहाँ जिलाधीश की पत्नी के साथ वह नृत्य में सम्मिलित हुए और मेरी ओर जिलाधीश ने हाथ बढ़ाया। मेरा सर शर्म से झुक गया। इसी प्रकार दो वर्ष पूर्व नैनीताल में जब गर्मियों के दिनों में एक कान्फ्रेन्स में गए हुए थे, एक धनी ठेकेदार ने इनके सम्मान में दावत दी जिसको इनकी कृपा श्री से जंगल का ठेका मिल गया था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उस ठेकेदार की लड़की को लेकर आप नौका विहार करते थे मैं सामने के फ्लेट में बैठकर इस आंख मिचौनी को देखा करती थी आखिर मैंने कह ही तो दिया एक दिन ।

"यह आपको इस उम्र में शोभा नहीं देता ।"

"यही तो अफसोस है जमुना, कमबख्त अंग्रेज बीस साल पहले चले जाते तो जवानी का मजा आ जाता । जो उम्र ऐश व आराम की थी वह तो जेल में कटी अब क्या जवानी की ही तरह इस उम्र को भी बर्बाद कर दूँ ।"

"लेकिन आपके आदर्श तो कुछ और ही थे । याद है मेरे कुछ भी कहने पर आप कहा करते थे—

"जमुना यह जेल नहीं तपोभूमि है । यह हमारी तपस्या है ताकि हमारे में अपने देश की सत्ता की लोलुपता न आने पावे । यदि मैं आपने अपने स्वदेश के लिए, अपने आदर्शों के लिए प्राणों का बलिदान कर सका तो स्वर्ग में मिलूँगा यदि जीवित रहा तो इस देश को ही अपने आदर्शों से स्वर्ग बना दूँगा ।

उस दिन मैं गर्व से फूली न समाती थी । मैंने आपके चरणों की धूल को माँग का सिन्दूर समझ कर मांग में लगा लिया था !"

"वह तो जवानी का जोश था जमुना मैंने अब जाना जीवन किसे कहते हैं ।"

"जिन आई. सी. एस अफसरों को हम गालियां दिया करते थे । जिन अंग्रेजों को हम विलासी कहा करते थे । वही वास्तव में जीवन की कद्र करना जानते थे । हमारे आदर्श सदैव ही नीरस रहे हैं । हमारे सामने केवल त्याग का सबक ही रक्खा गया । हमें यही बताया गया कि जीवन ही त्याग है । इस तरह विलासता का पन्ना ही निकाल दिया गया ।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उनकी इन्हीं बातों को सुन कर एवम् उनके वर्तमान जीवन को देखकर मैं विचारों के अतुल सागर में डूबने उतराने लगती हूँ कहीं किनारा दिखाई नहीं देता। समझ में नहीं आता क्या करूँ। एक ओर पतिधर्म है तो दूसरी तरफ नारी धर्म।

अब से २५ वर्ष पूर्व की सभी घटनाएँ, वार्तालाप मुझे सामने चल रहे चलचित्र की भाँति आज स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं। इन जिन्दगी के गुजरे वर्षों में मुझे सोचने का कभी अवसर ही नहीं मिला। आज वह दिल्ली गये हैं। प्रयोजन भी क्या सोचते ही लज्जा से मस्तक झुक जाता है। आज मैं वही दशा देख रही हूँ जिस प्रकार दो कुत्ते एक रोटी के टुकड़े को देखकर भौंकने लगते हैं।

आजकल की इनकी बातें मैं ड्राइंग रूम में लगे कमरे में बैठी सुना करती हूँ इनके यह सब साथी नए नहीं हैं। इनमें से कइयों को मैं पहले से जानती हूं जब से मैंने होश सम्भाला है मेरी आयु १६ वर्ष की रही होगी कुछ नए हैं जिनको पहले कभी देखकर यह अपना मुँह फेर लिया करते थे। इनमें से एक व्यक्ति वह है जिनके लिए एक बार जब मैं हजरत गंज में इनके साथ गुजर रही थी तो अफसोस से भरे यह शब्द निकल पड़े थे।

"जमुना यह वह व्यक्ति है जिसने द्वितीय महायुद्ध में लाखों रुपया ब्लेक और घूस में कमाया है ईश्वर ने चाहा और हमारे हाथों में हमारे देश की सत्ता आ गई तो इसी चौराहे पर इसको गोली से उड़वा दूँगा।"

मैंने व्यंग में कहा था "सब को तो गोली मरवा दोगे फिर आप जैसे देश भक्त कितने रहेंगे।"

वह कितने गम्भीर होकर बोले थे "काश वह दिन मेरे जीवन में आ जाय।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आज मैं क्या देखती हूँ कि वही व्यक्ति आज इनका परम विश्वासपात्र मित्र है। जैसे पुराने डाकू अथवा चोर गेरुआ वस्त्र पहन कर हमारे समाज में अपने को प्रतिष्ठित करते थे। आज ऐसे ही पुरुष अपने को खादी के वस्त्रों में लपेटे रहते हैं। पिछले चुनाव में मेरे पतिदेव को इसी व्यक्ति ने दस हजार रुपये चुनाव के लिए दिये थे और एक पुल का ठेका ले लिया था।

अभी मैं अपने गत जीवन की स्मृतियों में खोई हुई ही थी कि बचपन की एक स्वर्णिम घटना साकार हो उठी। मैं गाँव में रहती थी। छोटा सा गाँव था मैं थी और मेरा एक बड़ा भाई। मेरी आयु १६ के लगभग थी और भाई भी जिसको मैं दादा कहा करती थी २० के थे। गाँव में बड़े लोग भी उनको दादा ही कहते थे। उन दिनों पुलिस जब उनकी तालाश में घर पर छापा मारा करती थी तो वह तो नहीं मिलते थे मुझे ही उनके क्रोध का शिकार बनना पड़ता।

पुलिस का दरोगा लाल वासना मयी आँखों से देखकर कहता था "बोल तेरा दादा कहा है ?"

"मैं क्या जाँनू।"

"तू नहीं जानती वह अभी यहीं था। हमारा मुखबिर झूठा नहीं हो सकता।"

"कोई चिड़िया तो थी नहीं जो उड़ गई देख लो सारा घर पड़ा है।"

"तू कल की छोकरी मुझे बताती है यह अलबेले पंछी बिना पर के ही उड़ जाते हैं सच बता नहीं तो तुम्हे जेल में डाल देंगे।"

इसी प्रकार कई बार मुझे दादा के कारण थाने में जाना पड़ता।

एक रात दादा घर आये और मुझसे बोले "जमुना कुछ खाने को है।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"थोड़ा सा सत्तू रक्खा है।"

मेरा एक साथी और है पास ही खेत में छुपा है उसे भी खाना पहुँचाना है।"

"मैं पड़ोस से कुछ आटा उधार लाई और रोटी बनाकर गुड़ के साथ दादा के सामने रख दी, दादा ने कहा।"

"तू उस पाकड़ वाले खेत पर चली जा, वहीं झोपड़ी में वह मिलेगा। मुझे अभी मुखिया से मिलकर कुछ योजना बनानी है।"

"न दादा, इतनी रात में मैं खेत पर। वह भी एक अनजाने आदमी के सामने जाते मुझे डर और शर्म लगती है।"

"मूर्ख मेरी बहन होकर डरती है। वह कोई गैर नहीं है मेरे साथ एक ही मिडिल स्कूल में पढ़ा है। बाप ने घर से निकाल दिया तो देश भक्ति का जोश आया है जा जल्दी, जा और हाँ। उससे कह देना कि मैं सुबह चार बजे उसे नहर की पुलिया पर मिलूँगा।"

मैं दादा का कहना न टाल सकी संकोच के पर्दे में लिपटी मैं धीरे-धीरे खेत की ओर चल दी। मेरे पैर भारी हो रहे थे मेरी समझ में नहीं आ रहा था किस प्रकार सम्बोधन करूँ सोचते सोचते झोपड़ी के पास पहुँच गई गर्मी के दिन थे वह झोपड़ी के बाहर ही बैठे थे मुझे आता देख वह भी भय से सिहर उठे उन्होंने मुझे कुछ और ही समझा। जब मैं उनसे केवल चार कदम दूर रह गई तो उन्होंने जेब से पिस्तौल निकाल लिया और मेरी ओर तानकर बोले।"

"ठहरो। खबरदार जो आगे बढ़ी। मैं प्रेतमा से नहीं डरता।"

अब मेरी समझ में उनके भय का रहस्य आया। न जाने उस समय मेरी शर्म व संकोच कहां चला गया मैंने रोटी आगे बढ़ाते हुए कहा।"

"दादा ने यह खाना भेजा है।"

"परन्तु तुम कौन हो?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"मैं जमुना हूँ उनकी वहन। दादा ने कहा है कि सुबह ४ बजे नहर की पुलिया पर मिले।"

"माफ करना मैं तो समझा.........।" अब भी उनकी आवाज में कम्पन था। "कोई बात नहीं ऐसा धोखा हो ही जाता है।"

उन्होंने खाना मेरे हाथ से ले लिया उनके हाथ का स्पर्श होने से मेरा शरीर भी सिहर उठा। परन्तु दोनों के कम्पन में अन्तर था। जब मैं चलने लगी तो उन्होंने मेरी ओर देखते हुए कहा।

"दादा कितने भाग्यशाली हैं। वीर भाई की वीर बहिन होनी ही चाहिए। तुम नारी होकर रात में चली आई, और मैं पुरुष होकर डर गया। मुझे तुमसे लज्जित होना पड़ रहा है।"

"आप जिस महान कार्य के लिए जीवन न्यौछावर कर रहे हैं वह क्या कम है आज आप जैसे देश भक्तों पर ही हम नारियों को गर्व है और विदेशी राज्य मे भी हम सीना तान कर चलती है" यथापि हम लोग धीरे बोल रहे थे फिर भी इन वाक्यों से मेरे में वीर रस का संचार हो गया मुझे अपने दुपट्टे की सुध भी न रही और वह मेरे कन्धों से नीचे सरक गया। उन्होंने मेरी ओर देखकर कहा "जमुना तुम सचमुच जमुना हो काश................"

मैं सीधी घर चली आई। मेरे मन में उनके प्रति कोई भी लगाव नहीं था आज जब कभी उनके आग्रह पर सिनेमा, चली जाती हूँ और युवक युवतियों की उछल कूद देखती हूँ साइकिल लड़ी, घड़ा फूटा, काँटा लगा, किताब गिर गई और प्रेम हो गया। जज की लड़की ड्राइवर से प्रेम करे, सेठ की लड़की दुकान के नौकर के साथ बगीचों में गाना गाती फिरती है। यह स्वतंत्र देश का आदर्श रखा जा रहा है और हमारे नागरिक मौन हैं।"

वह उसके बाद कई बार मेरे घर भी आए, मैंने खाना भी खिलाया। कभी-कभी दादा के साथ होने पर हँसी मजाक भी रहा। परन्तु मैं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उनकी इज्जत करती थी जैसे दादा का ख्याल रखती थी वैसे ही प्रत्येक उस नवयुवक के लिए जो देश के लिए जीवन दे रहा था। मैं अपनी जान न्यौछावर करने में गर्व समझती थी।

परन्तु इन्होंने मेरे इस सत्कार का अर्थ दूसरा लगाया इनको देश के प्रति कम और मेरे प्रति अधिक रुचि होने लगी। यह प्रायः दादा से बीमारी का बहाना बनाकर घर में रह जाते थे। मैं सर भी दबा देती थी भारतीय नारी का हृदय मेरे पास था। मैं भारतीय सभ्यता में पली थी। गाँव के स्कूल में चार तक पढ़ी थी। उसके बाद बाबा ने घर बिठा लिया वह कहते थे "लड़कियों को ज्यादा पढ़ाकर क्या नौकरी कराना है उनको रामायण पढ़ना आना चाहिए। और यह अंग्रेजी पढ़ाई हमारे किस काम की जिसमें धर्म न शिक्षा।"

मैंने देखा कि वह दिन पर दिन मेरे निकट आने की कोशिश कर रहे थे। मुझे उनकी नियत का आभास होने लगा तो मैं कुछ खिची सी रहने लगी। एक दिन दादा के सामने रोने लगी "दादा आपने ऐसा रास्ता चुना है जिस पर किसी दिन भी जाकर न लौटो फिर मेरा क्या होगा?" "पगली कही की मैं अभी मरने का नहीं और जिन्दा पुलिस के हाथों लगूँगा नहीं मैं तेरे हाथ पीले कर दूँ यह सोचता हूँ परन्तु किससे कहूँ?"

मैं उनसे चिपट कर और जोर से रोने लगी। दादा के भी आँसू आ गये "आज मां जिन्दा होती तो मुझे इतनी चिन्ता न होती लेकिन उन लोगों को इस गरीबी ने खा लिया।"

एक दिन दादा ने मेरा मन लेने के लिए इनका जिक्र किया "लड़का तो अच्छा है लेकिन जंचता नहीं जिसके विचार स्थिर नहीं वह जीवन में और एक साथी को लेकर कैसे चल सकेगा। मैंने तुम्हें नहीं बताया यह चार बार पकड़ा गया और हर बार माँफी मांग कर चला आया। एक बार तो पुलिस ने कानपुर में चौक के एक कोठे पर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गिरफ्तार किया। मैं बहुत ही समझाता हूँ पर वह तो चाहता है फूंक मारकर अंग्रेजों को भगाना। अब उसने काँग्रेस में काम शुरू कर दिया है। हम क्रान्तिकारियों के साथ नहीं निभ सके। यहाँ तो अलबेले पंछी हैं। सदा कफन बांधे शहीद होने को तैयार रहते हैं।"

समय अपनी गति से दौड़ता रहा वह कुछ समय तक मेरे यहां नहीं आए, दादा ने बताया कि शराब की दुकान पर धरना देने में पकड़े गये माफी मांग कर छूट आये, परन्तु शर्म के कारण साथियों के सामने नहीं पड़े। और यह उड़ा दिया कि बरेली जेल में है।

आखिर होनी होकर ही रही। एक रात को यह मेरे घर आए। मैं खाना खाकर सोने जा रही थी। इन्होंने दादा को पूछा।

"वह तो एक सप्ताह से नहीं आए हैं सुना है बंगाल में कोई गुप्त मीटिंग है उसी में गए हैं।"

"तुम्हारे दादा तो पागल हैं मौत के मुँह में पड़े हैं ऐसे कहीं देश आजाद होता है। मैंने तो कांग्रेस में काम शुरू कर दिया है। बाहर रहो कोई खतरा नहीं। जेल जाओ 'बी' क्लास मिले। घर को काँग्रेस संस्था अपने घर से रुपये भेजे छूटकर आओ मालाएँ पहिनो।"

वह अन्दर आकर पलंग पर बैठ गए बोले "जमुना दो दिन से गांवों में घूम रहा हूं मुझे कुछ बुखार है सर दर्द से फटा जा रहा है।"

"आप लेट जाइए मैं सर पर बाम लगाए देती हूँ।"

यह सुनकर वह लेट गए मुझे इनसे चिढ़ सी हो गई थी फिर भी सभ्यता के नाते मैंने कर्त्तव्य पूरा करना ही ठीक समझा। मैं सिरहाने बैठकर इनके माथे पर बाम लगाने लगी। इन्होंने मेरा हाथ पकड़ कर सीने पर रक्खा ',यहाँ भी दर्द है जमुना"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैंने हाथ झटक दिया और खड़ी हो गई क्रोध से मेरा शरी
काँपने लगा।

"आप को शर्म नहीं आती।"

शर्म, प्रेमी को कहीं शर्म आती है, भगवान सौगन्ध तुम कितन
अच्छी लग रही हो। यह पलंग से उठ खड़े हुए और इन्होंने मे
कलाई जोर से पकड़ ली मैंने चींखना चाही परन्तु न चीख सकी क्यों
दोष मेरे ऊपर ही आता और यदि दादा को मालूम हो जाता तो व
अवश्य ही इनका खून कर देते। एक देश भक्त अपने ही देश के ए
पथ भृष्ट के खून में फांसी चढ़ जाता। मैं चुप रही, मैंने छुड़ाने
लाख कोशिश की परन्तु व्यर्थ........ ....

मुझे अब इनसे प्यार भी है। अपने धर्म का पालन भी कर र
हूँ। परन्तु वह क्षण जब याद आते हैं तो एक बारगी ही प्रति शोध
ज्वाला जलने लगती है।

दादा बंगाल से वापिस आए। उन्होंने मुझे बताया कि उन
पार्टी एक बड़ा ऐक्शन करने जा रही है। और उसका सारा भार दा
को सौंपा है। पहिली बार मैंने दादा के मुख पर निराशा और चिन्
के लक्षण देखे, मैं समझ गई कि दादा को मेरी ही चिन्ता है।" मैं
कहा, "दादा वह आपके मित्र कहाँ हैं।"

"वह लखनऊ में ही है एक दुकान पर नौकरी कर ली है।"

"यदि आप चाहें तो मेरा प्यार उनको सौंप सकते हैं।"

दादा का चेहरा खिल उठा। "तुम्हारी खुशी मेरी खुशी है
तुमने पहिले क्यों नहीं बताया। जिसको तु; मेरी बहन योंग्य समझे व
मुझे पूज्य है।"

और दादा ने इनको बुलाकर कहा "राजू जमुना को मैंने
प्यार से रक्खा है अब मैं इसे तुमको सौंपता हूँ। हमारे पास दौ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नहीं है परन्तु जमुना स्वयं ऐसी दौलत है कि जहाँ जाएगी किसी चीज की कमी नहीं रहेगी।"

सचमुच आज किसी वस्तु का मुझे अभाव नहीं है परन्तु मेरे जीवन में सदा ही अभाव रहा अपने दादा का, जो कुछ माह बाद ही पुलिस की गोली का निशाना बने और उनके आदर्शों का जो मेरे पति व्रत में बाधा बने हुए हैं।

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आगे न बढ़ियेगा——

लेखकः—डा० जे० एन० कपूरिया 'मधुकर'

छोटे चाचा, मेरे घनिष्ट मित्रों में हैं। आपका पूरा नाम है पं० सन्तराम जी त्रिपाठी परन्तु इन्हें सब छोटे चाचा के नाम से ही अधिक जानते हैं।

आप किसी बैंक में बड़े बाबू हैं। आपको ५००) मासिक मिलता है, मगर एक पैसा नहीं बचता। कहने को तो अविवाहित हैं, मगर शहर भर में किसी के चाचा, किसी के ताऊ, किसी के बाबा, किसी के नाना किसी के भाई बना लिये गये हैं। यानी आपके ऐसे नातेदारों की कमी नहीं।

मुन्नू चमार के ऊपर ५००) का कर्ज था। उसे मरे बारह घंटे हो गये थे। डिगरीदार कहता था कि रुपया वसूल हुये बिना मैं लाश को उठने न दूँगा।

छोटे चाचा को खबर हुई। वह फौरन आये। आते ही बोले—"महाजन क्या बात है?" महाजन गिरधारी लाल बोले—"मेरा ७००) चाहिये, २००) में तो मैंने माल असबाब लगा लिया, अब ५००) या तो मुझे नगद रुपये मिलें, या जेवर, बिना रुपये के मैं मजबूर हूँ।

मुन्नू की औरत रोती हुई बाहर आयी, बोली—"चाचा मैं तो लुट गई। ऊपर से यह लूटने आये हैं।" बच्चे की दूध की कटोरी भी चूल्हे से उतरवा ली। समझ में नहीं आता, ये मनुष्य हैं भी या नहीं। गिरधारीलाल बोले—"रुपया लेना जानती हो देना नहीं।" चाचा बोले—'बहू तुम अन्दर चलो, तुम्हारे बाहर आने की जरूरत नहीं।" फिर गिरधारी लाल से बोले—"महाजन यह हजार रुपये का नोट है। अपने ७००) ले लो। ३००) वापस करो।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

महाजन बोले—"मेरे पास रुपया नहीं।" चाचा बोले—'घर से ले आओ, मैं बैठा हूँ। महाजन ने ३००) दिये और भर पाई की रसीद दी, चाचा ने ये ३००) उसके कर्म में खर्च किये और उसको गंगा जी में प्रवाह कर दिया। इस तरह आए दिन किसी की गमी, किसी की बीमारी, किसी लड़के की फीस, किसी की किताबें व शादी-ब्याह में सन्तू का रुपया खर्च होता था।"

एक दिन मैंने छोटे चाचा से कहा—"ब्याह क्यों नहीं कर लेते ?"

"लड़की पसन्द की मिले तब तो शादी करूँ।" चाचा ने हँसते हुए कहा।

मैंने कहा—"क्या परी चाहते हो ?"

सन्तू बोले—"भइया की बात, मेरी पसन्द की न आज तक किसी ने चुनी होगी, न चुनने की हिम्मत करेगा।

मैंने कहा—अच्छा कुछ बताओ भी तो ?

"सुनो भइया सन्तू ने कहा—शक्ल ऐसी बदशक्ल हो कि हर शख्स नफरत से देखे। दिमाग ऐसा हो कि मैं एक कहूँ वह चार सुनाये। मिजाज ऐसा जैसा कि किसी ने कहा है कि शक्ल चुड़ैल की मिजाज परियों के और सन् ५७ का माडल होते हुये भी सन् ५१ का दावा करे। यानी देहाती होते हुये भी नई सभ्यता पसन्द करने वाली हो और एक बच्चे की मां हो।'

मैंने कहा अजीब ख्याल और पसन्द है तुम्हारी। मगर मेरी समझ में न आया ऐसा क्यों ?

सन्तू ने कहा—भइया, मैंने बिना कुछ सोचे समझे नहीं तय किया है। सुनिये, बद शकल होने से कोई उसे पूछने वाला न होगा। इस वास्ते रखवाली की जरूरत नहीं। दिमाग तेज होने पर हर एक सभा सोसाइटी में जा सकेगी और मिजाज परियों का होने में उसको शृङ्गार-बनाव से ही फुर्सत न होगी और ५७ माडल होते ५१ होने के दावे में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में हर बात मैं उल्टी सीधी समझा सकूँगा। और एक बच्चे की माँ होने का मतलब है कि वह ठोकर खा चुकी होगी और संभल कर चलेगी।"

वे कहते गये—अरे! ९ बज रहे हैं। अच्छा ख्याल आ गया। चलो एलफिन्स्टन में देवदास देख आवें। मेरे एक मित्र दो पास दे गये हैं।

मैं उनके साथ चल दिया। रास्ते में लोगों से मिलते-जुलते करीब १० बजे सिनेमा पहुँचे। गेट कीपर ने हमें दूसरे दर्जे की सीट में बैठा दिया। जाड़े के दिन थे। अन्दर जाकर आराम से बैठे।

"सहगल" का गाना चल रहा था—"बालम आय बसो मेरे मन में।"

हाल में सन्नाटा छाया था। एक पाँच साल का बच्चा पापा पापा कहता पापा को ढूँढता आया। हमारे छोटे चाचा जी ने उसे गोद में उठा लिया। सर्दी के दिन और चाचा जी का ऊनी दुशाला फिर प्यार से गोद में लिटाना, बच्चा सो गया। वहाँ उसके पापा उसकी ममी के साथ 'सहगल के गाने का आनन्द ले रहे थे।'

इन्टरवल हुआ। हाल में रोशनी हुई। चाचा जी के एक परिचित मित्र पं० काशीनाथ जी बोले—"सन्तू चाचा क्या यह तुम्हारा लड़का है?" भई अच्छा रहे? मुझे बड़ी खुशी हुई कि तुमने शादी तो कर ली। अच्छा, नाम क्या है लड़के का? सन्तू ने कहा—पं० जी, मोहन नाम है इसका और कहा, बाबा को नमस्ते करो। बच्चे ने बाबा को नमस्ते किया। पं० जी ने आशीर्वाद दिया।

अब मिस्टर डेविड यानी मोहन के पिता और माँ, जो अब तक न जाने किस दुनिया में थे। चौके।

मिस्टर डेविड बोले—"मिस्टर आगे न बढ़ियेगा।

सन्तू जी बोले—"मैं मतलब नहीं समझा?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मिस्टर डेविड बोले—"मतलब साफ है! मेरे बेबी को आपने मोहन और अपना लड़का बना लिया। अब आगे आप यह भी कह सकते हैं कि बेबी की माँ मेरी मेम साहब हैं और यह है काँग्रेसी शासन का जमाना, सच को झूठ और झूठ को सच साबित होते आजकल कितनी देर लगती है।

सन्तू जी झट बोल उठे—"आपका ख्याल गलत है। जिसका लड़का है, उसके पास है और जिसकी मेम साहब हैं, उसके पास हैं।"

इन्टरवल खतम हुआ। तमाशा फिर शुरू हो गया। बेबी बार-बार बुलाने पर भी मिस्टर डेविड के पास नहीं गया। बोला—'आप मारते हैं। और ये पापा प्यार करते हैं।' मिसेज डेविड हँसने लगीं, बोलीं आपने अच्छा फुसला लिया।

डेविड बोले—'देखना तुमको भी न फुसला लें।'

तमाशा खत्म हुआ। डेविड साहब और मिसेज डेविड सोते हुये बच्चे को लेकर घर गये। मैं और सन्तू अपने घर आये।

सन्तू मेरे ही मकान के नीचे की बैठक में रहते थे। बोले भय्या, काश मिसेज डेविड सी औरत होती, बदशकल है तो क्या?

मैंने कहा—"तुम्हें पसन्द है?"

बोले—"हाँ।"

[२]

ईश्वर सबकी मनोकामना पूरी करता है। डेविड साहब को समुद्र पार लड़ाई में जाने का आर्डर मिला और लड़ाई में स्त्री और बच्चे को साथ ले जाना ना मुमकिन था। मजबूरन सन्तू जी को तलाश करते हुए डेविड साहब आये और बोले—पं० जी, मैं मोहन और उसकी माँ को तुम्हें सौंपता हूँ।' ख्याल रखना, तुम्हें बेबी से मुहब्बत भी है और बेबी को तुम्हें सुपुर्द कर मैं बेफिक्री से रह सकूँगा। डेविड साहब बेबी व बेबी की मम्मी को सौंप कर लड़ाई पर चले गये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आज तक बहुत तलाश करने पर भी डेविड का पता न चला और बेबी उर्फ मोहन अब पं० मोहनलाल जी त्रिपाठी हैं और मोहन की मम्मी हैं मिसेज सुशीला त्रिपाठी।

कभी-कभी सन्तू को एक धुंधली सी याद डेविड की आ जाती है। सुशीला और मोहन तो कभी याद भी नहीं करते, कारण डेविड शराबी जुआरी और दुष्ट प्रकृति का था। इस कारण बेबी और मिसेज डेविड को मार खानी पड़ती थी। और अक्सर पैसा न होने पर उपवास भी होता था और यहाँ प्यार का भंडार भरा था और सच्ची सेवा थी।

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैं शादी नहीं करूँगी——

लेखक—डा० जे० एन० कपूरिया 'मधुकर'

रामनाथ के यहां बारात आ गई है। श्यामनाथ अपने लड़के माधो को ब्याहने आए हैं। रामनाथ और श्यामनाथ दोनों बचपन के मित्र हैं। माधो और शान्ता बचपन में एक साथ ही खेला करते थे। एक दिन वे आपस में खेल रहे थे तभी माधो के पिता श्यामनाथ ने उन दोनों की जोड़ी देखकर शान्ता का ब्याह बड़े होने पर माधो के साथ करने को रामनाथ से कहा। रामनाथ ने कहा तुमने मेरे मन की बात कही। माधो और शान्ता की जोड़ी अच्छी रहेगी। धीरे धीरे बड़े हुए।

शुभ घड़ी में बारात आ गई लड़कों ने माधो को बहकाया कहाँ काली कलूटी लड़की से फंसे जा रहे हो, बिना देखे ब्याह न करना। माधो ने कहा मैं अभी लड़की जाकर देखता हूँ।

माधो—चाचा जी, चाचा जी (दरवाजा थपथपाना)

रामनाथ – कौन, बेटा माधो ! कहो अचानक इस समय रात में एकाएक आने का कारण ? बाबू जी तो मजे में हैं। तुम्हें कोई कष्ट ? बरातियों को कोई शिकायत ?

माधो—आपकी दया है। बाबू जी मजे में हैं। कोई कष्ट नहीं ! कोई शिकायत नहीं फिर भी।

रामनाथ—हाँ, हाँ, कहो न बेटा; संकोच किस बात का। मैं भी तो तुम्हारा हूँ।

माधो—मैं ⋯ ⋯मैं⋯ ⋯आपकी लड़की, देखना चाहता हूँ।

रामनाथ—खूब, वह तो कल रात को देख ही लोगे। इतनी जल्दी ही क्या है। फिर तुम्हारे पिता जी तो देख हो गये हैं। विश्वास रक्खो बेटा लड़की अच्छी है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

माधो— चाचा जी, शादी तो मुझे करनी है। पिता जी को नहीं। जीवन निर्वाह मुझे करना है, पिता जी को नहीं, मैं बिना देखे शादी न करूंगा।

रामनाथ—बेटा मेरी लज्जा रक्खो, बाहर के लोग बठे हैं। क्या कहेंगे? क्या तुमने कोई बात सुनी है। तुम्हें अपने पिता पर भी भरोसा नहीं मेरे लाल विश्वास करो। मैं तुमको धोखा नहीं देता।

माधो—चाचा जी, आपकी लाज रक्खूं या अपना जीवन बर्बाद करूं। पिता जी को ही ख्याल होता, मुझे क्या जरूरत थी। आदमी दमड़ी की हांडी लेता है ठोंक बजाकर लेता है। आखिर आपको दिखा देने में हर्ज ही क्या है। फजूल की जिद कर रहे हैं? एक अनोखे आप ही लड़की के पिता हैं। अच्छा मैं जाता हूँ नमस्ते।

रामनाथ— अरे माधो, सुनो, तुम यहाँ ठहरो, मैं अभी आया, रामनाथ अन्दर गये शान्ता को बुलाया और मौन हो गये।

शान्ता— पिता जी, आप धैर्य रक्खें, मैंने सब सुन लिया है, समझ लिया है। यही न सिर्फ वह मुझे देखना ही चाहते हैं। आप घबड़ाते क्यों हैं। आपकी बेटी में क्या ऐब है।

रामनाथ---किन्तु मर्यादा का ख्याल है।

शान्ता—किन्तु सूर्य पर धूल झोंकने से, धूल सूर्य पर नहीं पड़ती है, वह धूल झोंकने वाले पर पड़ती है। मैं आप पर आंच न आने दूंगी। आशीर्वाद दीजिए। भगवान लज्जा रखेंगे। मैं जा रही हूं।

रामनाथ—ठहरो, मैं जाता हूँ, तुम मेरे बाद चाय लेकर आना।

शान्ता—पिता जी चाय पी लीजिये, ओह कौन हैं आप, पिता जी।

रामनाथ—शान्ता, यही मेरे मित्र के लड़के माधो बाबू हैं। इन्होंने इसी साल एम० ए० में प्रवेश किया है। और माधो बाबू यही मेरी बेटी शान्ता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शान्ता—नमस्ते।

माधो—नमस्ते, क्षमा कीजियेगा, क्या आप कुछ संगीत अथवा नृत्य से प्रेम रखती हैं।

शान्ता—जी यों ही, नहीं के बराबर, कहिए संगीत सुनाऊं या नृत्य दिखाऊं? या सितार बजाऊं।

माधो—जैसी आपकी मर्जी।

अच्छा तो सूरदास का नाम तो आपने सुना ही होगा उन्हीं का पद "उधो जब खोटे दिन आवें" आप सितार के साथ सुनें। गो इस समय गला साफ नहीं है।

माधो—आपका गला बहुत ही सुरीला है और गाने में तो आपने पूरा पूरा भाव दर्शा दिया, रहा सितार, उसका कहना ही क्या। अब अपना नृत्य भी दिखाने की कृपा करें।

शान्ता—जी जैसी आपकी आज्ञा मैं आरती नृत्य दिखाती हूँ। रहा यह है आपकी अनुकम्पा। मैं तो किसी भी प्रसंशा के योग्य नहीं हूं।

माधो—खूब नृत्य में तो आप अपनी सानी नहीं रखती हैं, चाचा जी, आज्ञा दीजिये। घर जा रहा हूँ। पिता जी राह देख रहे होंगे। मैंने लड़कों के चिढ़ाने पर आपको बड़ा ही कष्ट दिया। आपका लड़की साक्षात लक्ष्मी है।

रामनाथ—तुम्हें पसंद तो है।

माधो—ऐसे रत्न को, कौन न चाहेगा फिर मैं किस लायक हूँ। इन्हें पाकर, अपने जीवन को धन्य समझूंगा। नमस्ते।

शान्ता—पिता जी, मुझे भी कुछ कहना है।

माधो—कहिए, जरूर कहिए।

रामनाथ—हां हां कहो बेटा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शान्ता---मैं माधो बाबू का नाच गाना देखना चाहती हूँ--- नहीं।

माधो---मुझे तो कुछ भी नहीं आता। शादी

शान्ता---आश्चर्य, मेरी दृष्टि से कुछ भी नहीं ? फिर मेरा इन ब्याह कैसे होगा ? मजबूरी है। यदि आप कुछ नहीं जानते तो आपसे शादी नहीं करूंगी, आप मेरे योग्य नहीं। पिता जी मैं कि गरीब अपढ़ किन्तु समझदार व्यक्ति से शादी करूंगी।

माधो---मेरी गलती क्षमा कीजिए।

शान्ता---क्षमा भगवान से मांगिए। मैं किस योग्य हूँ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आगे मत बढ़ना--

लेखक डाक्टर जे० एन० कपूरिया "मधुकर"

धूमीमल को नगर का बच्चा जानता है। हैं तो आप बैंक के क्लर्क परन्तु आपको सब बड़े बाबू के नाम से पुकारते हैं। बैंक के चपरासियों में आपकी दया की धूम, अधिकारी वर्ग में कार्य-पटुता की धूम, बाजार में सूझ बूझ की धूम, मित्र मंडली में हास्य की धूम, चौक में रसियापन की धूम और बाल मंडली में चपलता की धूम है। आपको ५००) रु० मासिक वेतन मिलता है पर बचता एक पैसा भी नहीं। हाँ कर्ज के नाम से चिढ़ है, पहली तारीख के पहले कभी एक पैसा भी वेतन से एडवांस नहीं लिया।

ऐसे रंगीले, सजीले और प्रिय नवयुवक को कौन अपनी कन्या देना सौभाग्य न समझेगा। नित्य ही कोई न कोई बेटी का बाप आपके यहाँ चक्कर लगाता हुआ दिखाई देता पर किसी की भेंट स्वीकार न हुई, किसी को माँ बाप का पता नहीं बतलाते। अजब रहस्य है। हेड आफिस में आपके घर का पता मुहरबंद था।

वर--खोजकों ने जब सीधे दाल गलते न देखी तो बैंक के मैंनेजर को घेरना शुरू किया।

एक दिन संध्या समय मैंनेजर साहेब ने धूमीमल को चाय का निमंत्रण दिया। जब बड़े बाबू पहुँचें, मैंनेजर महोदय के अतिरिक्त कोई और अभ्यागत न था। बड़े बाबू को अकेले चाय पार्टी में कोई आनन्द न आया। रसिया तो थे ही, केतली से चाय उंडेलते हुए गुनगुना उठे, श्याम प्रिया तोरी बलिहारी..........

मैंनेजर:—आप तो उमर खैययाम के भी बाप निकले।

बड़े बाबू :—अजी वह तो बच्चा है।

मैंनेजर : - और आप जैसे बिना जोरू वालों का।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बड़े बाबू :—जी। सबै भूमि गोपाल का यामे अटक कहाँ।

मैंनेजर :—गोपाल की जाति का पता नहीं तो भला आपका क्यों हों। गोपाल के पिता का रहस्य ग्वालों को न मिला तो आपके पिता का पता क्यों लगे ?

बड़े बाबू:—श्याम प्रिया की ओट में, जाति पाँति पूछे ना कोय।

मैंनेजर :—अच्छा भाई, यह बताओ यो ही वे. नये बैल बने रहोगे, हवाई श्यामा के कृष्ण कभी द्वारिका भी बसावेंगे ?

बड़े बाबू :—कोई रुक्मणी मिले भी तो ?

मैंनेजर :—कितने तो तुम्हारे यहाँ से सर पटक कर चले गये, और कितने रोज मेरी खोपड़ी खाते हैं। आखिर तुम्हारा 'स्टैंडर्ड" क्या है ?"

बड़े बाबू :—सबसे निराला।

मैंनेजर :—वह क्या।

बड़े बाबू :—जो अब तक किसी को न बताया, आपको बता रहा हूँ। रंग हो काला, बदसूरती में सबसे आला, कद हो लम्बा, जबान उससे भी चार अंगुल आगे, देहात की निकली शहर परस्त। चाहे कुछ दहेज लाये या न लाये पर एक बच्चा साथ लाये, माडेल चाहे अट्ठारहवीं सदी का हो पर दिमाग सन् १६५७ की सोचें।

मैंनेजर :—आगे न बढ़िये ·······चाय में यह भंग का नशा !

बड़े बाबू :—मैं सच कहता हूँ ?

बड़े बाबू :—मैं सच कहता हूँ ?

मैंनेजर :—वह तो आपके स्टैंडर्ड से जाहिर है।

बड़े बाबू :—जी इसी से तो मेरी किसी से पटरी नहीं बैठती, कोई आता है सिनेमा स्टार्स को मात करने वालियों की फोटो लेकर जो बदकिस्मती से अगर मेरी सहचारी हो जांय तो उनकी चौकसी में बैंक से इस्तीफा देना पड़े, फरमाइशों को पूरा करने में कर्जे का भार लादना पड़े। काली कमली पर चढ़त न दूजो रंग। कोई आता है

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रुपयों की थैली लेकर मुझे खरीदने, कोई आता है ग्रेजुएट लड़की लेकर मुझे पढ़ाने।

मैंनेजर:—और आगे आपकी पसंद की हो तो ?

बड़े बाबू:—जवान तेज होने पर मुझ पर भी अंकुश रहेगा और किसी चालबाज के चंगुल में न फसेगी, अट्ठारहवीं सदी का माडेल पति, परिवार और पड़ोसियों के साथ प्रेम और सद्भावना रक्खेगी। सन् १८५७ के दिमाग से हम ऐसे अनाथों को तलाक का हर दम डर लगा रहेगा। एक बच्चे की माँ संसार की ठोकर खा चुकी होगी, समाज से तिरस्कृत होगी इसलिये चौकन्नी रहेगी और हमसे प्रेम करेगी।

मैं—अब आगे न बढ़िये—भावुक जी बहुत हुआ उपन्यास तो बन गया। चलो शाम हो गई है टहल आवें।

सूर्य अस्ताचल गामी हो चुके थे। शायद जमुना की काली करतूतों से उन्हें भी घृणा हो गई थी। कलंकनी का मुख देखना भी पाप है। नीरव नदी तट पर सूनसान वनस्थली में सुनाई पड़ा "माता मैं संसार से तिरस्कृता अपने ही परिवार वालों द्वारा बरबस कलंकित हूँ अब तेरी गोद के सिवा मुझे कहीं स्थान नहीं। अबोध शिशु तू निष्कलंक है तुझे वन पशुओं के रक्षण में सौंपती हूँ--हिंसक पुरुष ने तुझे त्यागा है हिंसक पशु तेरी रक्षा करेंगे।

बड़े बाबू और मैंनेजर साहेब ने छपाक की आवाज सुनी। सहसा बड़े बाबू के मुँह से निकला कोई कूदा है—"आगे मत बढ़ना--" बड़े बाबू भी तुरन्त नदी में कूद गये—मैंनेजर चिल्लाये आगे मत बढ़ना अंधेरा है। क्षण मात्र में बेहोश जमुना को बालों से खींचते हुये बड़े बाबू नदी तट पर ले आये। घास से ढका शिशु भी रो उठा। उसे झपट कर गोद में उठाते हुए मैंनेजर बोल उठे—धूमीमल आगे मत बढ़ना। सिप्रा के तट पर तुम्हारी वांछित प्रेयसी से तुम्हारा गठबंधन तो कर दूँ।

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अच्छा सोचूँगा: —

लेखक:—डाक्टर जे० एन० कपूरिया "मधुकर"

लाला मदन लाल उर्फ नेता जी को कौन नहीं जानता। आपने न जाने कितनों के बिगड़े काम बना दिये और चुपचाप चल दिये यह था उनका अपना पन, लड़की की शादी में गए हैं, देखा दावत में बर्फी नहीं है। हलवाई के यहाँ से नौकर लिया, और भंडार खाने में बर्फी, पेड़ा, इमर्ती, लड्डू चार तरह की मिठाई आ गई, और लाला जी परोसने लगे। दूसरे दिन जब लड़की के पिता को लोगों ने बधाई दी। तब काना फूसी होने लगी, नेता जी के सिवा और कौन कर सकता है। लड़की के पिता ने कहा कि नेता जी हम आपके आभारी हैं। नेता जी घबड़ाकर बोले, क्यों बदनाम करते हो, मैं तो भन्डारे में था, मुझे क्या पता, मिठाई कहाँ से आई, इसी तरह से नेता जी अपनी, अपने मोहल्ले और समाज की लाज रखते थे और एक उदाहरण नीचे देता हूँ।

लाला श्याम लाल ने रतन की लड़की, मीना की शादी, अपने भाँजे काशीनाथ बी. ए. से पक्की कर दी। रतन लाल के बार पूछने पर कि भाई शादी में मुझे कितना खर्च करना होगा मैं गरीब आदमी हूँ, अपना प्रबन्ध कर लूँ। श्याम लाल यही उत्तर देते, जीजा जी मेरी बात को टाल नहीं सकते। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ तुम्हें कोई चिंता नहीं करनी चाहिये। काशीनाथ के लिये न जाने कितने आए, सबको मेरे सामने जीजा जी ने ठुकरा दिया। मेरी बात रख ली। अब मुझे उनका और तुम्हारा दोनों का ध्यान है। तिलक में जैसा कि मैंने तुम से कहा था कि चीज जो लड़का पसंद करे, देना और तुमने ५००, का गोल्डरेज अलमारी दी। खैर यही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कोई बुरा नहीं, अब चालीस रिस्तेदारों को कम से कम चार रुपया फी रिस्तेदार कोई ज्यादा नहीं है, चुका दो और देखो अब मीना और काशी नाथ मेरे और तुम्हारे दोनो के हो गए। पाँच हजार मैं जीजा जी से ले लूँगा और पाँच हजार तुम लगाकर वर वधू के लिये सुन्दर स्थान बनवा दो। भाई मैं फजूल खर्ची नहीं पसंद करता। तुम केवल पाँच हजार नगद मकान के दे दो और कोई जरूरत नहीं। क्यों लाला मदन लाल ठीक है न दोनों वर कन्या सुखी रहें। लाला मदन लाला ने कहा भाई मेरे लिये तो दोनों बराबर हैं। जैसे काशीनाथ वैसे मीना। अच्छा रतन भाई एक सौ साठ रुपया जो तुमने मेरे पास रखा था। वह तो लाला जी के रिस्तेदारों को चुका दो और पन्द्रह हजार काशीनाथ के पिता से लेकर मीना के नाम से मीना कुंज बनवा दो। ये पन्द्रह हजार मेरे जमा कर लो मीना के लिये। ये रहे रुपये। श्याम लाल ने कहा:—मीना के नाम इतनी बड़ी रकम, अच्छा जरा मुझे सोचने का मौका दें। मदन लाल ने कहा, काशी नाथ के पिता लड़के और बहू की अच्छाई के लिये रुपये हाथ के मैल को देना न भूलेंगे, और कदाचित वह न करें तब आप मामा हैं। दोनों के शुभ चिंतक हैं, आपका कर्त्तव्य दोनो को सुखी देखना है। अच्छा सोचूँगा कह कर श्याम लाल उठ खड़े हुए और रतन लाल ने मदन लाल के चरण छुए भय्या तुम महान हो, मदन लाल ने कहा, भगवान ने मेरी लाज रख ली लाला जी की तो बातें खत्म हो गई तुम मेरी ओर से मीना को ये रुपये दे देना। रतन लाल ने कहा भय्या इतनी बड़ी रकम। मदन लाल ने कहा कहाँ से आई हँस कर बोले, अच्छा सोचूँगा।

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नेफा की ओर—

कामताप्रसाद शास्त्री

दीपावली की सध्यावेला में सारा नगर विद्युत प्रकाश से देदीप्यमान हो उठा। ऐसा प्रतीत होता था, मानों उडुपति को खोजने के लिये अमा की घोर तमिस्त्रा में असंख्य नक्षत्र दीप लेकर द्वार द्वार पर फेरी लगा रहे हों।

ठीक उसी समय गली की मोड़ पर खड़े दो बच्चे चुन्नू और नीता आपस में बात करने लगे। नीता ने ललचाई दृष्टि से कहा, चुन्नू कितनी सारी मिठाइयां रक्खी हैं। जी चाहता है, सबकी सब खा जाऊं। चुन्नू ने कहा "धत्" पगली इतने पैसे कहां, माँ ने तो दो पैसे ही दिये हैं। उनका गुब्बारा लेगी कि मिठाइयां ? ..... । नीता चुन्नू के मुंह की ओर देख कर बोली तो क्या यह ढेर की ढेर मिठाइयां बिक रही हैं। इन्हें कौन लेगा ? चुन्नू ने अपनी बुद्धिमत्ता प्रकट करते हुये कहा, अमीर लोग। नीता ने भोलेपन से कहा हम भी तो अमीर हैं। चुन्नू ने कहा नहीं नीता रानी हम गरीब हैं। हमारी माँ गरीब हैं। चलो भागो कोई मोटर आ जायेगी दब जावेंगे।

बच्चे गुब्बारा लेकर नगर की शोभा देखते हुये घर की ओर चले गये। नीता माँ की गोद में जाकर बैठ गई, और बोली माँ मैं अब मेला देखने न जाऊंगी। आज चुन्नू कहता था हम गरीब हैं। हमें मिठाइयाँ न मिलेंगी। मां ये अमीर कहां रहते हैं, और कैसे होते हैं।

माँ ने बच्ची को हृदय से चिपकाते हुये कहा, बेटी, आज तुझे क्या हो गया, जो अमीरी-गरीबी का निराकरण करा रही है। चल सो जा रात अधिक हो गई। अबोध बालिका झिड़की पाकर कुछ देर में गोद में ही सो गई। चुन्नू दो पैसे का गुब्बारा लिये कुछ देर उछालता कूदता रहा फिर निद्रा देवी के अङ्क में द्वार पर ही सो गया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चुन्नू की मां वीणा ने बच्चे को घर में न देखा, बच्ची को खाट पर सुलाकर बाहर आई, देखा चुन्नू भूमि पर ही सो गया है। वीणा एक क्षण को सिहर उठी, और बच्चे को उठाकर हृदय से लगा लिया घर में लाई दोनों बच्चों को खाट पर सुलाकर एक फटी चादर उन्हें उढ़ा दी।

अर्द्धरात्रि हो गई बारह का घंटा जेल में बजा। वीणा अपने हृदय पर पत्थर दबाये बैठी विचारमग्न है। सहसा मुख से निकल पड़ा प्रभो! क्या मेरे दुखों का अभी छोर नहीं आया। "सुनते हैं कभी आप द्रोपदी की एक पुकार पर उसे बचाने आ गये थे। ग्राह की पुकार सुन कर" इतनी शीघ्रता की, कि गरुड़ भी छोड़ दिया। चारों ओर आपकी दीन बन्धुता का ढिंढोरा पिट रहा है प्रभो? क्या दीनता में अभी कुछ कमी है।

पति देवता मातृभूमि की मान रक्षा के लिये युद्ध में गये, आज तीन वर्ष में एक पत्र भी न आया। लड़ाई पर सभी गये, उनके पत्र भी आये, रुपये भी आये, अवकाश पर स्वयं आये। पर उन्होंने एक पत्र भी नहीं दिया, और न आये। उनकी धरोहर इन बच्चों का उत्तरदायित्व लिये उनकी बाट खोज रही हूँ।

आज सारी दुनिया दीप मालायें जलाकर अपने घर का अन्धकार भगा रही है। भागने वाला आखिर कहीं शरण तो लेगा ही, सारा अन्धकार मेरे घर? बच्चे मिठाइयों के लिये रोते कलपते सो गये, पर............

इन्हीं विचारों में मग्न वीणा को न जाने कब निद्रा आ गई। जब नींद खुली तो दिन के सात बज रहे थे। बच्चे अभी सोये पड़े थे। वीणा उठी नित्य कर्म से निवृत्त होकर बच्चों का हाथ मुंह धोया, रोटी दी तब तक दस बज गया।

डाकिए ने दस्तक दी, बीबी जीऽऽ। वीणा चिन्ता में मग्न विचार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर रही थी। सहसा डाकिए की आवाज सुनकर बाहर आई, और देहली के अन्दर से ही कहा कौन हो भाई ? डाकिए ने करुणा भरी आवाज सुनते ही मीठी वाणी में कहा। बहिन जी मुंह मीठा कराओ सुन्दर सन्देश लाया हूँ। और एक मनीआर्डर फार्म सामने रखकर हस्ताक्षर करने का संकेत किया।

वीणा ने कूपन पर दृष्टिपात किया, संक्षिप्त लिखा था।

प्रिये वीणे ! मैं एक सप्ताह के अन्दर, अविलम्ब कमल मुख देखकर चर्म चक्षुओं को सार्थक करने आ रहा हूं। एक सहस्त्र चुन्नू, नीता तथा तुम्हें वस्त्रों के लिये भेज रहा हूँ।

स्मृति पात्र
राजन सूबेदार
बटालियन नम्बर ३
प्लाटून नं० १७
नेफा।

वीणा को सहसा इन अक्षरों पर विश्वास ही न गया। कई आवृत्ति कर गई और ऊपर की ओर हाथ उठ गये, प्रभो ! तुम्हारी अकारण करुणा का एक कण पाकर मानव निहाल हो जाता है। अन्यथा मैं रङ्किनी इस योग्य कब थी। हस्ताक्षर कर दिये कूपन फाड़ कर मस्तक पर रख लिया। डाकिए ने सौ सौ के दस नोट अन्दर बढ़ा दिये, और हंसता हुआ बोला, बहिन जी मिठाई फिर कभी........।

वीणा ने भर्राए स्वर में कहा भाई जी कुछ तो पत्र पुष्प स्वीकार कर लो, आज आपने अपनी इस दीन हीन बहिन को यह सन्देश देकर जो उपकार किया है। क्या वह विस्मृति के गर्त में फेंका जा सकता है ? क्या करूं भाई जी मैं इतनी अभावग्रस्त हूँ, कि घर में कुछ नहीं है। अब आपको ही बाजार जाने का कष्ट होगा।

डाकिए ने आभार प्रकट करते हुये कहा, बहिन जी क्या करूं मेरा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

धन्धा ही ऐसा है कि दिन भर में अनेकों को हंसाता हूँ, और अनेकों को रुलाता हूँ। अच्छा नमस्ते। मिठाई बाबू जी के आने पर........।

चुन्नू और नीता दोनों बाहर से दौड़ते हुये आये, और चिपटकर वीणा से बोले मां पिता जी आ रहे हैं। अब हम खूब मिठाइयां लेंगे। नीता तू भी लेगी नीता ने कहा "धत" हम गरीब हैं। मिठाइयाँ तो अमीर खाते हैं।

वीणा ने दोनों बच्चों को उठाकर हृदय से चिपका लिया। और कहा कि अब हम सब अमीर हैं। देखो इतने सारे रुपये तुम्हारे पिता जी ने भेजे हैं। आज तुम लोग खूब मिठाइयां खाओ। आज तुम लोगों को अच्छे-अच्छे कपड़े ला दूंगी। चलो जल्दी नहा डालो, बाजार चलेंगे।

चुन्नू ने कहा माँ तू भी पागल मालूम पड़ती है। कल कहती थी हम गरीब हैं. और अब कहती है हम अमीर हैं। क्या माँ सचमुच यह रुपये हैं। वीणा की आखों में आँसू छलछला आये और दो मोती जैसे आँसू नोटों पर लुढ़कते हुए भूमि पर गिर गये, दीनता उन्हीं के साथ लोप हो गई।

बच्चों ने स्नान किया, गोरे मुखड़ों पर आज कुछ विशेष आभा दीख पड़ी। मां ने बालों पर कन्घी करके आखों में काजल लगा दिया, डिठौने लगाकर वीणा ने अविलम्ब दो दो चुम्बन बच्चों के मुख पर अंकित कर दिये। नन्हें मुन्ने फुदकने लगे। वीणा ने पाँच रुपये की मिठाइयाँ मंगाई और पास पड़ोस के बच्चों को खूब बांटी, चुन्नू, नीता फुदक फुदक कर मिठाइयाँ खा रहे थे, वीणा गुनगुना रही थी।

आज वीणा सायंकाल बच्चों को लेकर बाजार गई जनता स्टोर से उसने बच्चों के लिये सुन्दर वस्त्र अपने लिए साड़ियां ब्लाउज कई जोड़ खरीद लिये, कुछ फर्नीचर तथा साज सज्जा का सामान खरीद लाई। एक सप्ताह यूं ही व्यतीत हो गया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आज प्रात: काल से ही वीणा के हृदय में प्रेम सागर हिलारें ले रहा था। अपने राजन के लिये, उसने स्वादिष्ट पकवान बनाये, फूलो के कई हार, दधि रोचना आरती सभी तो सुसज्जित था। वीणा कभी बाहर आती कभी अन्दर.......... । घंटाघर की घड़ी ने मध्यान्ह में दोनों सुइयां मिलाईं। वीणा ने घड़ी पर दृष्टि डाली।

ठीक तभी द्वार पर एक टैक्सी ने हार्न दिया चुन्नू, नीता दौड़े आये। माँ पिता जी मोटर पर आ गये, वीणा दौड़ी आरती उतारी, हार पहनाया, और चार आँखें होते ही वीणा अपने को न संभाल सकी चरणों पर गिर गई। आज प्रेम के दो आँसू राजन के चरणों पर ढुलक गये।

राजन ने वीणा को उठा लिया, ऊपर चिबुक उठाकर कहा, 'धत' पगली, संयोग में वियोग का पुट कैसा।

राजन ने भोजन करते समय वीणा से कहा प्रिये हम नौजवानों पर जन्मभूमि का भी तो ऋण था। उसे चुका दिया और समय आने पर पुन:.......। ठीक उसी समय मन्दिर का पुजारी बोल उठा, जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

—:०:—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वीरों की आन

कामता प्रसाद शास्त्री

ठहरो अश्वारोही आगे कदम न बढ़ाना वर्ना तुम्हारा सर धड़ से अलग हो जावेगा। तीखे तीरों की भाँति आवाज कानों को बींधती हुई निकल गई।

युवक अश्वारोही कुछ चौंका और पारित दृष्टि दौड़कर देखा, कुछ दिखाई न दिया। सोचकर मुस्कराया, और निर्भीक चल दिया। सनसनाता हुआ एक तीर युवक के बाईं ओर आकर गिरा, और कुछ स्त्री कण्ठ खिल-खिलाकर हंसते सुनाई पड़े।

युवक ने अश्व की लगाम रोक दी, और पीठ थपथपा कर बोला विजय स्थिर भाव से खड़े रहना, हिनहिनाना मत, मैं इन दुष्ट छोकरियों का पता लगाता हूँ। और खोजपूर्ण दृष्टि डालता हुआ, पर्वत की चोटी की ओर कुछ कदम बढ़ा ही था कि पुनः आवाज आई ठहरो ? तुम्हारा इतना साहस ? वीर युवक····क्षात्र तेज से उद्दीप्त हो उठा, और सहसा तलवार की मूठ पर हाथ पहुँच गया।

विज्जू असि एक सपाके के साथ बाहर आयी, युवक ने ललकारा, कौन हो तुम लोग ? सामने आओ ? पुनः खिल-खिलाहट और निस्तब्धता युवक कुछ खीझा और सोचने लगा, क्या मैं स्वप्न देख रहा हूँ या सत्य ही······मेरा अपमान किया जा रहा है। पुनः उसने ललकारा मुझे और मेरे बल को चुनौती देने वाला सामने हो अन्यथा मैं शब्द भेदी बाण प्रयोग करके सबका मुख भंजन कर दूँगा।

एक धड़ाके की आवाज के साथ एक नवयुवती धनुष पर तीर चढ़ाये सामने प्रकट होकर बोली, आप बड़े वीर हैं। वाणी बज्र ही पर्याप्त है बाण की क्या आवश्यकता, काच मंजूषा उसके चारों ओर प्रकाश कर रही थी। और नवयुवती ने एक तीर लक्ष्य लगाकर युवक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पर चला दिया, युवक कुछ मुस्कराता हुआ एक ओर हट गया, तीर सनसनाता हुआ निकल गया।

युवक ने कहा, सुन्दरी ? तीर चलाना व्यर्थ है। आप कटाक्ष मात्र से ही लाखों वीरों को घायल कर सकती हो, पुनः यह प्रयास क्यों। लो मैंने अपना हृदय अनावृत कर दिया और आप प्रहार कर दें।

युवती सलज्ज स्मित से बोली वीर युवक तुम्हारा परिचय ? निशीथ में भयंकर पर्वत श्रेणियों पर घूमने का कारण ?

युवक—मैं सोय वंशावतंस पवित्र नाम पुण्य श्लोक शत्रुञ्जय महाराज का पुत्र और कोशलदेश का युवराज हूँ। मेरा नाम अरिमर्दन है, आखेट करते-करते इस प्रांतर में आ गया। शिविर में विश्राम कर रहा था, सहसा एक सिंह की गर्जना सुनी और अश्व पर सवार हुआ, इधर आ गया, सिंह की गति विधि पर विचार मग्न था। आपका परिचय ?

युवती—आपने वीर सेन महाराज का तो नाम सुना होगा, वे धर्म की रक्षा के लिए, यवनों से युद्ध करने के लिए गये हैं। दुर्ग निराश्रित देखकर, अपनी जन्मभूमि की मान मर्यादा के लिए हम अबलाओं ने भी सबला होने का प्रण किया है—हमारे युवराज अभी बालक हैं, मन्त्रीगण विलासी हैं प्रजा अत्याचारों से आंतकित है। उसकी रक्षा आवश्यक और अनिवार्य है। महाराज की प्रिय पुत्री वीरमती मेरा नायकत्व करती है। हम सभी उनकी सहेलियां हैं। अंगुली निर्देश से उसने बताया, देखो वृक्षों के झुरमुट में प्रकाश चमक रहा है, हमारी राजकुमारी नायक, वीर वेश में वहीं विराजमान हैं। हम उनकी गुप्तचर हैं। मेरा नाम अचला है।

युवक वीर की भुजायें फड़क उठीं, तलवार उठाकर बोला, सुन्दरी अपनी राजकुमारी से जाकर कहो वे सुख पूर्वक राज प्रसाद में आराम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करें। महाराज के आने तक दुर्ग की मान रक्षा का भार मेरी तलवार के सहारे। इतना कहकर युवक अविलम्ब अश्व पर सवार होकर पर्वत श्रेणियों में अन्तर्हित हो गया।

राजकुमारी वीरमती ने अपनी गुप्तचर सहेली के द्वारा वीर युवक का इति वृत्त सुनकर एक दीर्घ निश्वास के साथ कहा। अचला परदेशियों की बात का क्या विश्वास—कदाचित कोई शत्रु पक्ष का ही हो, हमें सतर्क रहना चाहिए।

वीर अरिमर्दन ने अपने शिविर में आकर विश्राम किया, किन्तु निद्रा न आई। किसी प्रकार प्रातःकाल हुआ, नित्यकर्म के पश्चात् अपने मित्रों और सेनानायकों को बुलाया। रात्रि में बीती घटना बताकर उनकी अनुमति के लिए, खोज पूर्ण दृष्टि से सबकी ओर देखा।

सभी नवयुवक थे और भावुक थे, एक साथ सभी तलवारें म्यान के बाहर थीं। हम सब प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने युवराज के दिये वचन की रक्षा प्राण पण से करेंगे। हम क्षत्री हैं हमारा कर्तव्य निश्चित है।

युवराज ने कहा वीरों! महाराज वीरसेन, वीरगढ़ के राजा हैं, और पिता के चिर शत्रु, धर्म युद्ध में पर्वतों को प्राणों की आहुतियां देने गये हैं। इस सकट काल में शत्रु मित्र का भेद भाव छोड़कर हमें उनकी और उनके सम्मान की रक्षा करनी है। और वह भी गुप्तरीति से, मंत्रियों की गतिविधि पर विशेष ध्यान देना है। सबका कर्तव्य निश्चित हो गया। एक तुमुल जय घोष आकाश में विलीन हो गया।

दिन इसी प्रकार व्यतीत हो गया। रात्रि में सभी वीरों ने अपने-२ भेष बदले, कोई किसान था कोई लकड़हारा, कोई चूड़ी वाला, कोई बाजीगर, कोई मछुआ तथा अनेकों साधु और भिखारियों के वेश में वीरगढ़ के कोने-२ में प्रवेश कर गये। सबने पहिचान के लिये संकेत निश्चित कर लिये थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राजकुमार अरिमर्दन ने एक ज्योतिषी का रूप बनाया, और एक विश्वासी मित्र को चेला बनाकर, राज मन्त्री के प्रधान द्वार पर डेरा डाल दिया।

प्रातःकाल वीरगढ़ का प्रधान मन्त्री उद्यान की ओर जा रहा था, राजमार्ग पर देखा कुछ मछुए और किसान एक ज्योतिषी से अपने भाग्य के विषय में पूँछ रहे हैं। सामने एक साइन बोर्ड पर लिखा था, ज्योतिष का चमत्कार दक्षिणा पांच आने।

(पहला किसान)—महाराज यह रही दक्षिणा और बताइये हमारे महाराज यवनों से युद्ध करके कब लौटेंगे।

(ज्योतिषी)—जय दुर्गे और तीन बार ताली पीटकर बोला, कल संध्या काल तुम्हें राजा की मृत्यु का समाचार मिलेगा।

(दूसरा किसान)—महाराज जरा सोच समझकर विचार देखो।

(ज्योतिषी)—बच्चा मेरा प्रश्न झूंठा नहीं उतरता। मैं अभी एक सप्ताह तक यहीं रहूँगा। अगर झूंठ हो तो मुझे दण्ड दिलवाना। चारों ओर से आवाज आई पंडित जी ! हमारी गड़ी धन राशि बताना, हमारे भाग्य में क्या है. हमारा लड़का खो गया, हमारा भाई बीमार है, इत्यादि प्रश्नों की झड़ी सी लग गई। ज्योतिषी ने क्रमशः सबके प्रश्नों का उत्तर दिया। और दक्षिणा बटोर कर ऊपर उंगली उठाई सभी भीड़ तितर-बितर हो गई। ज्योतिषी बोला बस अब सवा पहर दिन हो गया, प्रश्न की देवी झूठ हो गई। अब कल इसी समय पर।

मंत्री ने ज्योतिषी के आकार प्रकार की ओट देखकर आश्चर्य प्रकट किया, और प्रशंसा भी की— विद्वान भी है, और व्यक्तित्व भी निराला, कदाचित यह कश्मीरी है, कश्मीर का ज्योतिषी निराला है। प्रकट में एक सेवक से कहा ज्योतिषी को मेरे पास बुला लाओ।

ज्योतिषी अब मंत्री के निजी महल के अन्दर था। और दूसरी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रात: वेला में मंत्री के गुप्त प्रश्न का उत्तर देगा, और भरपूर भेंट मिलने की आशा थी। दिन भर ज्योतिषी, गुप्त मार्गों की खोज में लगा रहा। रात्रि में मन्त्री से आज्ञा लेकर पूजा के बहाने ज्योतिषी जी दुर्गा मंदिर में संकेत के अनुसार अपने साथियों से मिले, कई गुप्त रहस्यों का पता चला।

मंत्री यवनों से मिला है, खजाना गुप्त सुरंग के द्वारा तोड़कर आधीन कर लिया। राजकुमारी का अपहरण दुर्गा मेला में होगा। और युवराज, का बलिदान दुर्गापूजा में उसी दिन। राजा कदाचित युद्ध में बच गये तो उन्हें विष कन्याओं द्वारा समाप्त कर दिया जावेगा। पुन: ज्योतिषी जी वापस जाकर सो गये। प्रात: काल हुआ।

मंत्री जी एक नारियल पुष्प और सौ अशर्फियां लेकर प्रश्न करने के लिए गये, ज्योतिषी के आगे मत्था टेका हुआ''''। ज्योतिषी ने कहा मंत्री जी आप प्रश्न करें, इस समय देवी अनुकुल है, और ऊपर को हाथ उठा दिये अम्बिके शीघ्र प्रश्न का उत्तर और ताली पीटकर बोला। श्रीमान जी आपका भाग्य इस समय उच्च है। यदि आप क्षमा दान करें तो स्पष्ट बता सकता हूँ।

मंत्री ने कहा जाओ क्षमा किया। बोलो ठीक उत्तर हो ज्योतिषी महाराज अर्द्ध निमीलित नेत्रों से ध्यान मुद्रा में बोले। आपको आज से तीसरे दिन यहां का राजा होना है। पुन: बोला अम्बिके कर्ण पिशाच्चिनी बोल क्या''''हां मन्त्रिन धन कोष, तो आपके अधिकार में सभी हो चुका है। केवल एक चण्डी आपसे रुष्ट है, अत: आपका मन उधर से असंतुष्ट है। वह मैं गुप्त रूप से जानता हूं। प्रकट करने में श्रीमान जी का अपमान है। मन्त्री ने कहा नहीं, ज्योतिषी जी आप निस्संदेह होकर बतलावें अब अन्तर कैसा मैं आपको अयाची कर दूँगा।

ज्योतिषी ने कहा आप राजकुमारी से प्रेम करते हैं, और वह आप से घृणा करती है। तथा और भी दो एक विरोधी हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ज्योतिषी के चरणों पर गिरकर मंत्री कहने लगा गुरू जी आपका ज्योतिष सच्चा जिन बातों को वायु ने भी न सुना वे आप विद्या के बल से जानते हैं। अच्छा तो आपका उपाय।

ज्योतिषी ने कहा मैं आपके राज्य का नमक पानी खा चुका हूँ अतः आपके सामने प्रकट रूप से बतलाता हूँ। कुछ ऐसे मित्र भी आपके हैं, जो आप से मिले हैं, और वे स्वयं राजकुमारी को हथियाना चाहते हैं। यदि सभी वे मेरे सामने आ जावें तो उन्हें मैं बतला सकता हूँ। और यत्न यह हो कि आज अर्द्ध रात्रि पर आप एक गुप्त सभा करें, जिसमें अपने पक्ष के सभी लोग हों। मैं उन पर दृष्टिपात करके देवी की दया से केवल आपको संकेत द्वारा बतला दूँगा।

किसी तरह सायंकाल हुआ। मंत्री के गुप्तचरों ने सभी लोगों को बुलावा दे दिया। अर्द्धरात्रि के घोर सन्नाटे में एक गुप्त भवन में सभी एकत्रित हुए। ज्योतिषी ने सभी विपक्षियों को एक साथ ही पहचान लिया। और बनावटी तौर पर दो एक की ओर इशारे से मंत्री को भी बता दिया। सभा विसर्जित हो गयी।

प्रातःकाल हुआ ज्योतिषी ने कहा, श्रीमान जी अब मैं अपने स्थान पर ही बैठूँगा, और इन लोगों की गति विधि पर ध्यान रक्खूँगा और वह पुनः अपने राजमार्ग वाले अड्डे पर गया, ज्योतिषी ने उन्हें क्या बतलाया, किसी ने न सुना और वे इधर-उधर चले गये।

सायंकाल जब देवी के मन्दिर पर ज्योतिषी जी गये, और एकत्रित हुए अपने साथियों से मिले और कहा आप लोग सतर्क भाव से यही चक्कर लगाते रहें, कल दुर्गापूजा का मेला है। राजकुमारी की रक्षा का भार आप लोगों के साहस पर निर्भर है।

उसी समय एक काली छाया मन्दिर के पीछे सरकती हुई दिखाई दी, और उस घने अन्धकार में विलीन हो गयी।

प्रातःकाल एक पनिहारिन ने आकर ज्योतिषी के हाथ पर प

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लाकर रख दिया, और शीघ्र ही अपना घड़ा लेकर, नौ दो ग्यारह हो गई।

ज्योतिषी जी ने पत्र खोला और अक्षरों पर दृष्टि डाली। पत्र में लिखा था दुर्गा मेला से पहले उत्तरी द्वार-पर मिलो कुछ मन्त्रणा करनी है।

"वीरमती"

ज्योतिषी ने अपना झोला लिया और "जय जगदम्बा" की घोषणा करके उत्तरी द्वार की ओर चल दिया। वहाँ पहुँचकर उसने देखा, बाजीगर का तमाशा हो रहा था। बड़ी भीड़ थीं। ज्योतिषी जी मार्ग को दूसरी ओर आसन जमाकर बैठ गये, और सामने त्रिसूल गाड़ दिया "उस पर अपना पांच आने प्रश्न वाला साइन बोर्ड टांग दिया।

कुछ क्षण के बाद ही एक नवयुवक ने आकर ज्योतिषी जी से प्रश्न किया, उसका उत्तर तो किसी ने न सुना, परन्तु जय जगदम्बा का घोष करते हुए ज्योतिषी ने दुर्गा मन्दिर की ओर का शीघ्र ही रास्ता पकड़ा।

बाजीगर का तमाशा भी खत्म हो गया, और वह भीड़ भी उसी के पीछे-पीछे दुर्गा मन्दिर की ओर अग्रसर हुई।

ठीक मध्यान्तर काल में राजकुमारी अनेक सहेलियों के साथ दुर्गा पूजन के लिए आयीं। और बड़ी सतर्कता के साथ पूजन करके राज प्रासाद की ओर चलने लगीं उद्यान से निकलते ही मंत्री जी ने कहा कुमारी जी आज मेरे सुख स्वप्न पूर्ण हो गये, अब कहाँ जावोगी। वीरमती ने कहा, नीच अपनी जिह्वा संभाल, काल तो नहीं बोल रहा है। मंत्री ने अपने अनुचरों को ललकारा और आदेश दिया, शीघ्र ही इस कटुभाषिणी को पकड़ लो, और युवराज को लाकर देवी पर बलि चढ़ा दो। मंत्री जी ने राजकुमारी को पकड़ने का प्रयास किया; कि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पास में खड़े हुए बाजीगर ने उनके मुख पर एक मुक्का मारा, जिससे वे गिर गये। एक हुल्लड़ मच गई, अब तो ज्योतिषी जी और सभी किसान, मछुए अपनी-अपनी तलवारें निकाल कर मंत्री जी के आदमियों पर टूट पड़े। और घमासान युद्ध हुआ। अप्रत्याशित आक्रमण से घबराये हुए वे सब कुछ देर में मार डाले गये।

मंत्री जी बन्दी बना लिये गये। नगर में सन्नाटा मच गया। सभी कहते थे, इन किसानों और मछुओं ने, ज्योतिषी तथा बाजीगर की सहायता से आज हमारी लज्जा रख ली, अन्यथा न जाने आज……।

उधर राजकुमारी वीरमती राजमाता से जाकर मिलीं और सारा वृतान्त उन्होंने बताया, पहले तो वे बहुत भयभीत हुईं किन्तु वीरमती के साहस दिलाने पर मंत्री को कोसतीं हुई धैर्य्य हुआ। उधर वीर अरिमर्दन अपने साथियों को लेकर अपने शिविर की ओर चला गया।

राजा वीरसेन ने यवनों पर विजय पायी, और बड़ी धूमधाम से उन्होंने नगर में प्रवेश किया। प्रजा ने उनका स्वागत किया, राज प्रसाद में पहुँचकर मंत्री जी विश्वास घात, कोशल युवराज की आकस्मात सहायता की बात सुन ईश्वर को धन्यवाद दिया।

राजमाता ने कहा, राजन। वैर विरोध छोड़कर कोशलराज से मंत्री का हाथ बटाइये। युवराज अरिमर्दन अभी निकट ही आखेट कर रहे हैं। उन्हें बुलाकर सम्मान किया जावे।

प्रातःकाल राजाज्ञा के साथ नगर की सजावट हुई, और बालक युवराज के द्वारा युवराज अरिमर्दन को निमन्त्रण भेजा गया, और वे अपने मित्रों के साथ राज प्रासाद की ओर हर्ष और उल्लास के साथ चले।

प्रधान द्वार पर कुमारियों ने माला और पुष्पों की वर्षा की, राजमाता वीर बाला ने उन्हें अंक में भरसक सूंघ और वात्सल्य के साथ मांगलिक रोचना लगाया। राजा वीरसेन अपलक दृष्टि से युवराज

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

को देखते ही रह गये। और हाथ में लेकर सिंहासन के दाहिनी ओर बैठा लिया, और बोले युवराज इस धर्म संकट में आपने मेरी सहायता की, इस ऋण से जीवन में छुटकारा पाना असम्भव है।

युवराज अरिमर्दन ने संकुचित भाव से कहा, राजन! यह मेरा परम कर्त्तव्य था, दस्युओं के समक्ष आपकी मर्यादा कहीं अधिक है। कुमारियों की रक्षा का भार हम युवकों के बाहुबल पर निर्भर है, हम क्षात्र धर्म में पले हैं। धर्म को नाश के गर्त से निकाल कर स्वरक्षित रखना हमारा धर्म है। हम लोगों ने कर्तव्य पालन से अधिक कुछ नहीं किया।

उसी दिन मंत्री को प्राण दंड मिला, और वीर अरिमर्दन के साथ वीरमती का पाणिग्रहण, और अचला युवराज के मित्र शत्रु दमन की सहवासिनी हो गई।

—:o:—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गर्त की ओर

कृष्णदेव शर्मा एम. ए०. बी. ऐड.

"किधर जा रहे हो मानव ?"

"ऊपर की ओर, अपने अभीष्ट लक्ष्य पर"

"मार्ग प्रशस्त करने वाला है कोई ?"

"नहीं"

"फिर पथ मालूम है ?"

"नहीं"

"जाओगे कैसे ?"

"भटकता हुआ कभी न कभी पहुँच ही जाऊँगा ।"

"यदि भटकने में ही जीवन समाप्त हो गया फिर क्या करोगे ?"

"तो आप ही बताइये क्या किया जाय ? और आप हैं कौन ?"

"मैं धर्म हूँ ।"

"आप मुझे मार्ग प्रशस्त करेंगे ?"

"अवश्य मगर कुछ शर्तों के साथ ।"

"वह कौन सी ?"

"तुमको सदा मेरी आज्ञा पर चलना होगा जैसे मैं कहूँगा तुम चलोगे, तुमको अपने मन पर नियंत्रण रखना होगा ।"

"परंतु आप वायदा करते हैं कि मैं पहुँच जाऊँगा ?"

"मैं वचन नहीं देता पर जो भी मेरे साथ चला अवश्य पहुँचा है ।"

"तो बताइये मार्ग ।"

"वह देखो उस मार्ग में आगे बढ़ना एक बात याद रखना कि रास्ते में कितनी ही बाधाएँ आये घबराना मत । तुमको अनेकों प्रलोभन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मार्ग में मिलेंगे जो तुमको अपनी ओर आकर्षित करेंगे परंतु तुम उनकी ओर दृष्टि भी न डालना सीधे चलते रहना।"

"कितना समय लगेगा पहुँचने में ?"

"सीमा नहीं, न एक दिन, न एक साल और न जीवन भर।"

"तो क्या आप चाहते हैं कि मैं सारा जीवन मुसीबतों में ही काट दूँ और अपने गन्तव्य स्थान तक न पहुँच सकूँ ?"

"यह तुम जानो मेरा काम केवल तुमको सतर्क करना था सच्चा मार्ग दिखाना था आगे तुम्हारी इच्छा।"

"मैं चलूँगा आप के ही मार्ग पर चलूँगा।"

"अच्छा तुम आओ मैं तुम्हारे आगे चलता हूं तुम मेरे पीछे चले आओ।"

× × ×

"तुम कौन हो जो मेरे साथ चल रहे हो मेरी सहायता करते हो ?"

"मैं कर्म हूं। जो धर्म के मार्ग पर चलते हैं मैं उनका साथ देता हूँ।"

"परंतु तुम तो अच्छे और बुरे दोनों का साथ देते हो।"

"हाँ लेकिन धर्म के मार्ग पर अन्त तक जाता हूं और अन्य मार्गों पर रास्ते में ही साथ छोड़ देता हूँ।"

"लेकिन इस मार्ग पर तो बहुत ही कठिनाइयाँ हैं वह देखो कितने सुन्दर व्यंजनों, के थाल सजे हैं परंतु मैं उनको इस मार्ग से नहीं पा सकता मेरे और उनके बीच यह गहरी खाई है।"

"वह देखो कितनी सुन्दर बालाएँ जल क्रीड़ा कर रही हैं परन्तु मैं इस पगदंडी को लांघ कर कहीं नहीं जा सकता। यह देखो इस मार्ग पर जाने वाले सभी कितनी शान से जा रहे हैं कितना सरल है वह मार्ग यह ऊबड़-खाबड़ है। एक ओर पहाड़ी है और दूसरी ओर गर्त परंतु यहाँ कितने आराम से सब जा रहे हैं फिर इस मार्ग पर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कभी कोई राहगीर दिखाई दे रहा है परंतु उधर भीड़ लगी है सारा मार्ग ठसाठस भरा है।"

"लेकिन यह मार्ग तुमने स्वयं चुना, किसी ने लाचार नहीं किया।"

"यह मेरी भूल थी। देखो न पैरों में छाले पड़ गए हैं कंठ सूख रहा है बदन शिथिल है फिर भी बढ़ना पड़ रहा है मेरा कोई अन्य साथी भी तो नहीं मेरा जी ऊब रहा है। मैं नहीं जाऊंगा इस मार्ग पर। मैं उसी मार्ग पर वापस जा रहा हूं मुझे जाने दो। रोकना मत।"

"मैं नहीं रोकता मुझे दुख है तुमने इस मार्ग के मूल्य को नहीं समझा लौटना चाहते हो तो लौट जाओ परन्तु यह याद रखना कि अंत में पछताना पड़ेगा और जहां से चले हो फिर इसी मार्ग पर आओगे।"

"यदि नहीं आया तो ?"

"तो पतन होगा। वही गर्त में पड़े सड़ते रहोगे कभी भी ऊपर नहीं पहुंच सकोगे।"

"कोई चिंता नहीं" मैंने देखा कि मेरे सभी साथी लौट गए वह देखो लम्बी दाढ़ी वाले महात्मा, लौट गए न, यह देखो कितना बड़ा देश-भक्त था इसने अपने जीवन की आहुति देने का निश्चय किया था परन्तु आज उसी मार्ग पर जा रहा है। इस मार्ग पर कुछ दिखाई नहीं देता अंधकार ही अंधकार है।"

परंतु आगे जाकर प्रकाश है और उस मार्ग पर अभी प्रकाश है आगे अंधकार है।"

"कुछ भी हो अब आगे नहीं बढ़ा जाता क्या यह जीवन इसी लिये है कि इस मार्ग पर चलते चलते नष्ट कर दूं ? मैं उसी मार्ग पर जाऊंगा मैं शरीर को कष्ट नहीं देना चाहता।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"जैसी इच्छा।"

× × ×

"ठहरो ! डर गए कायर कहीं के, बाधाओं से घबराते हो ?"

"तुम कौन हो मुझे रोकने वाले ?"

"तुमको मुझ से क्या प्रयोजन ?"

"आप बूढ़े बाबा कौन हैं ?"

"मैं ज्ञान हूं बेटा ! मेरा कहना मान इसी मार्ग पर जा मैं अधिक से अधिक तेरे निकट आता जाऊंगा।"

"और यह देखो कौन है ?"

"मैं सरस्वती हूं मेरे बच्चे ! तू अभी बच्चा है ज्यों ज्यों तू कर्म और ज्ञान के साथ आगे बढ़ेगा मैं तेरी होती जाऊंगी और ऊपर पहुंच कर सदा तेरी होकर रहूंगी तू घबराता क्यों है ? साहस से काम ले वह देख ऊपर कितना प्रकाश है इस अंधेरे से शीघ्र ही निकल जायेगा। तुझसे आगे भी कुछ लोग गये हैं परन्तु वे गिने चुने हैं तू उन्हीं का अनुसरण कर। राजा हरिश्चन्द्र तो पुत्र और पत्नी को त्याग कर भी इसी मार्ग पर चलते रहे।"

"परन्तु मैं इतनी शक्ति कहाँ से लाऊं मेरा साहस नहीं होता।"

"यह तेरे भीतर की दुर्बलता है परन्तु याद रख तू यह मार्ग छोड़ते ही हम सब का साथ भी छोड़ देगा और फिर पछताएगा। परन्तु बहुत देर हो चुकी होगी।"

"परिणाम कुछ भी हो परन्तु मेरा मन मुझे लाचार कर रहा है।"

"मन का नियंत्रण रख।"

नहीं रख सकता वह आकर्षण मुझे उस ओर खींच रहे हैं। अब मैं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इस मार्ग पर एक पग भी नहीं चल सकता मैं जाता हूं....''''जाता हूं.... ....

× × ×

अहा हा कितना मनोरम दृश्य है ! चारों ओर विकसित सुगंधित पुष्प, सीधा पथ, मैं भी कितना मूर्ख था जो इतना सोचा कितना समय नष्ट किया ? काश पहिले ही आ गया होता ! कितनी चहल पहल है इस मार्ग पर देखो न सभी इस मार्ग पर जा रहे हैं—मूर्ख कहीं के जो इस बीहड़ कष्ट दायक पथ पर भटकते हैं। सरल ''' सीधा सुखमय मार्ग''''

"कौन सुन्दरी तुम कौन हो ? तुम्हारा परिचय ?"

"तुम मुझे नहीं पहिचानते। आज कौन मुझे नहीं जानता भूल गए जब बच्चे थे तभी से मुझे प्यार था। मेरे पाने के लिये घंटों जिद करते थे परंतु कुछ समय के लिये मुझे भूल बैठे थे'''मेरी झंकार नहीं सुनते पहिचानो मुझे'''मैं हूँ लक्ष्मी।"

"लक्ष्मी''''हां परंतु तुम यहाँ......."

इस मार्ग पर सब मेरे ही सहारे तो चलते हैं। मैं उनको वह देती हूँ जिससे वे कभी भी तृप्त नहीं होते—क्या तुम मुझे अपनाना चाहते हो ?"

"हां देवि मैं तुमको अवश्य प्राप्त करूँगा तुम्हारे संकेत पर चलूंगा।"

परंतु मुझे तुम आसानी से नहीं पा सकते। मुझे पाने के लिये तुम्हें अपना जीवन बदलना पड़ेगा।"

"आप आज्ञा तो दें।"

"तो सुनो सबसे पहले तुम्हें सत्य का त्याग करना पड़ेगा।"

"ऐसा नहीं कर सकता।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"तो मेरे पाने की इच्छा छोड़ दो।"

"अच्छा मैं ऐसा ही करूँगा।"

"आगे और सुनो। तुमको दूसरों को धोखा देना होगा तुमको अपना हृदय पत्थर बनाना पड़ेगा। परोपकार, सहानुभूति, दया, पुण्य, धर्म सभी को भुलाना पड़ेगा।"

"इतनी बड़ी शर्तें ?"

"हां वह देखो सामने जो मुझे पाना चाहते हैं जो इस मार्ग का आनन्द लेना चाहते हैं जो इस जीवन को जीवन समझकर बिताते हैं, खाओ, पियो और जियो यही सिद्धांत है उनका। मेरे साथ आओ तुम अभी गए हो इस मार्ग पर। चलने में संकोच करते हो तुम्हारे अन्दर अभी पाप-पुण्य, धर्म-अधर्म का भेद मौजूद है यह भुलाना होगा। तेरा हृदय अभी कच्चा है तुझे भय है। यह भय दूर कर। जो सभी करते हैं वही तू भी कर। धर्म और पुण्य पुराणों और वेदों की बात है पहले के लोग मूर्ख थे जो जीवन को यातनाएँ देते रहे परंतु मोह नहीं किया मैंने इस देश में सोना बिखेर दिया परंतु यहाँ के लोगों ने उसे भी मिट्टी समझा मुझसे अधिक धर्म और कर्म को महत्व दिया। मैं यह अपमान न सह सकी इस देश को छोड़कर पश्चिम की ओर गई और वहाँ से नवीन रूप लेकर यहाँ आई। आज मेरे लिये लोग पागल हो रहे हैं जघन्य से जघन्य पाप करने में नहीं हिचकिचाते और तू संकोच में पड़ा है देख तुझको कुछ झाकियां दिखाऊँ तब तेरी हिम्मत बढ़ेगी।

x x x

"मैंने कह दिया सेठ जी कि मैं एक पैसा भी नही छोड़ सकता।"

"सेठ जी मैंने बेटी की शादी में ५००) लिये थे और ६००) से अधिक ब्याज दे चुका अब रहने का मकान बेच दिया आप रहम करिये सेठ जी ईश्वर आप को सुखी रक्खे।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"रहम-रहम नहीं हमें पैसा चाहिये पैसा।"

x x x

"तुमने तो कमाल कर दिया श्यामा आज यह बिजली कहाँ गिरेगी ?"

"आप पर ही देखते नहीं यह शरीर और मन सब आपका ही हो चुका है मेरे राजा अब कब तक तरसाओगे ?"

"अच्छा आंखें बन्द करो।"

"यह क्या हार इतना कीमती हार आपने इतना खर्च क्यों किया ?"

इतना खर्च सिर्फ ४ हजार का है यदि तुम कहो तो कुबेर का खजाना भी तुम्हारे पैरों पर डाल दूं।"

x x x

"कौन ? अन्दर आ जाओ।"

यह क्या तुम फिर आ गए मैंने तुमसे उसी दिन कह दिया कि अब यह दरवाजा तुम्हारे लिये बन्द है यह वेश्या का कोठा है पतिव्रता स्त्री का नहीं यहाँ सौदा है लक्ष्मी से।"

"लेकिन वेरहम मैंने अपना सब कुछ तुझे दे डाला अब तो मेरे पास खाने तक को नहीं है।"

"यह उपदेश अब अपनी संतान को देना। कलुआ...ओ कलुआ इन सेठ जी को रास्ता दिखा दे।

धर्म.........धर्म.........धर्म

x x x

"बॉय बिल लाओ"

"लाया सरकार"

"अस्सी रुपया तीस नए पैसे, यह लो सौ रुपये का नोट।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"चेन्ज सर"

"यह तेरा टिप है" "सलाम सर"

x x x

"बाबा एक भूखे को रोटी खिला दे सुबह से भूखा हूँ यह आत्मा दुआ देगी।"

"चल हट कंगला कहीं का यह भिगमंगे तो नाक में दम किये रहते हैं, शापिंग भी नहीं करने देते। हाँ रानी कौन सी साड़ी सलक्ट की यह लो यह साड़ीं बांध दो कितना ४००) सिर्फ !

x x x

तुम कहते हो तुम्हारा बेटा निर्दोष था उसका शत्रुता से नाम लिखा दिया है।"

"हाँ दरोगा जी मैं सच कहता हूँ मेरा बेटा निर्दोष है उसने कभी कोई अपराध नहीं किया।"

"यह हम भी जानते हैं।"

"तो छोड़ दीजिये उसे ! ईश्वर आपका भला करे दरोगा जी। मैं जीवर भर आपका अहसान नहीं भूलूंगा।"

"लेकिन तुमको कुछ खर्च करना पड़ेगा।"

"मैं गरीब हूँ"

"हमारी नजर में सब बराबर है यदि तुम चाहते हो कि तुम्हारे लड़के को छोड़ दिया जाय तो ५००) देना पड़ेगा।

"पाँच सौ·······दरोगा जी·······कुछ नहीं जब रुपये का प्रबन्ध हो जाय आ जाना। कल तक यह हवालात में रहेगा फिर समझ लेना फांसी का फंदा उसकी गर्दन में है··········

x x x

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"क्या कहा अभी चलना है ?"

"हाँ डाक्टर साहब मेरे एक ही लड़का है ? इसका जीवन बचा लीजिये ।"

"मेरी फीस १६) है लाए हो ?"

"आप चलिये तो मैं प्रबन्ध करूँगा ?"

पहले फीस लेकर आओ और १०) है टैक्सी का ।"

"परंतु डाक्टर साहब इतना समय अब नहीं है यदि शीघ्र ही इसे दवा न मिली तो वह बच न सकेगा"

"यदि डाक्टर की फीस नहीं तो जाओ परत्मात्मा से दुआ मांगो उसी का समय फालतू है खामखा मेरा समय बर्वाद न करो ।

x x x

हाँ, मैं सेठ भगवान दास बोल रहा हूँ । क्या कहा सोलह रुपया मन गेहूँ सब खरीद लो ! हाँ खरीद लिया अब बाजार में गेहूँ नहीं है । ३०) मन हाँ बेच दो ।"

"गरीब मर जायेंगे"

"मरने दो वैसे ही आबादी बढ़ रही है ।"

x x x

पैन्सलीन की शीशियों में पानी है हलो आप कौन बोल रहे हैं डाक्टर खोसला, नमस्ते डा० साहब मैं अभी अपने आदमी को भेज रहा हूँ वह आपको सब बता देगा ।"

आपने तो देश सेवा का व्रत लिया था । याद है चुनाव में क्या क्या वायदे किये थे आज हम गरीबों की फरियाद कोई भी नहीं सुनता । आप यहां पहाड़ पर आनन्द ले रहे हैं आपके परिवार वाले ऊँचे-ऊँचे पदों पर पहुंच गए परन्तु हम गरीब वहां लू में मर रहे हैं. रोटी को तड़प रहे हैं" "हम कुछ नहीं जानते, सरकार कुछ नहीं कर सकती अगली पंच-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वर्षीय योजना में हम तुम्हारे लिए भी कुछ आयोजन करेंगे।"

× × ×

आज का ताजा समाचार, कलकत्ते में एक औरत को अपनी भूख मिटाने के लिये ६ आने में अपना बच्चा बेंच दिया।

कांग्रेस एम० एल० ए० के घर डाका, डाकू ५० हजार की सम्पत्ति लूट ले गये।

धन के लालच में नृशंस हत्या, हत्यारों ने एक राहगीर को लूटने के लिये गोली मार दी परन्तु उसके पास केवल कुछ आने ही निकले।

सरकारी अफसरों द्वारा लाखों रुपये का अपव्यय केन्द्रीय प्रशासन पर आडिट रिपोर्ट।

× × ×

"आप कहते हैं कि भारत के निर्माता अच्छे चित्र नहीं बनाते। ऐसे चित्र बनाते हैं जो अपराध और कामुकता को प्रोत्साहन देते हैं परन्तु जनाब आप यह क्यों भूलते हैं कि निर्माता भी आदमी हैं उन्हें भी लक्ष्मी से मोह है हमको पब्लिक टेस्ट देखना पड़ता है हमने चरित्र निर्माण का ठेका नहीं लिया है।"

× × ×

"माँ भूख लगी है।"

"सो जा बेटा तेरे पिता जी आते ही होंगे मैं तुझे जगाकर खिला दूँगी, सो जा।"

"तुम तो लाज लाज ऐसे ही कहती हो मुझे नींद भी नहीं आती मां, हां मां वह कमल तो कोठी में रहता है उसके पास मोतर भी है उसके पापा बहुत सा लुपया लाते हैं मां पिता जी क्यों नहीं लाते ?

"अपना अपना भाग्य है बेटा।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यह क्या चीज है माँ मैं भी देखूंगा।"

"अच्छा अभी सो जा वह दिन भर के थके आते होंगे तू कुछ न कहना।"

"नहीं कहूंगा मां लेकिन मां तल मैं पिता जी और कमल के पापा दोनों का भाग्य देखूंगा।

× × ×

"बोल........चोरी करेगा ले धम........धम ....धम" आह मुझ छोड़ दो मैं चोर नहीं हूँ मेरे बच्चे दो दिन से रोटी के टुकड़े को तड़प रहे हैं मैंने उनके लिये सिर्फ एक सेर अनाज निकाला था।

× × ×

"........बस अब मुझे नहीं देखना है।"

"देख लिया जो मेरा सहारा लेते हैं कितने विलास से जीवन बिता रहे हैं जहाँ मैं नहीं वहां नरक है अब बताओ क्या निर्णय किया ?"

"मैं तुमको पाने के लिये सब कुछ करने को तैयार हूं मैं सुख से जीवन बिताना चाहता हूं।"

"तो आओ शुरू करो अपना काम जैसे भी हो मुझे पाने की कोशिश करो। काम, क्रोध, मद लोभ मेरे दास हैं वह तुम्हारा साथ देंगे .... तुम ऊपर की ओर बढ़ो।

× × ×

मदिरा........एक बोतल और .... आज कोई नया माल लाओ जितना मांगोगे दूंगा।

भूखे हो धन चाहिये, जाओ रात को........भेज देना जितना मांगेगी दे दूंगा।

यह रूप........यह जवानी .... एक गिलास और..........

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तुम्हारे हाथ से शराब का नशा भी दूना हो जाता है·········आओ मेरे पास आओ संकोच न करो। लज्जा आती है अहा···हा···हा···हा सतीत्व नष्ट हो जायगा·········लेकिन तुमको पैसा चाहिये·········ऐसे पैसा नहीं मिलता·········बत्ती बुझाओ·········लो ये रुपये·········

X X X

"बढ़े चलो हाँ ठीक है सीधे चले आओ·········क्या चोटी पर पहुंच गया ? यह आपका घर है परन्तु यहां तो अंधेरा है ·········"

"हां यहां अंधेरा है जहां मैं रहती हूं वहां अंधकार है परन्तु मेरे यहां जो आता हैं उसे मार्ग में प्रकाश मिलता है·········"

"मैं तो समझता था कि आगे और भी प्रकाश होगा।"

"यह तेरी भूल थी।"

"यह आपके समीप ही प्रकाश कहां से आ रहा है ?"

"वह स्थान तेरे पहले वाले मार्ग का हैं यदि तू उस मार्ग पर चलता तो तुझे चोटी पर प्रकाश मिलता और यह जीवन वहाँ बिताता अब तो अंधकार में ही रहना है।"

"वहाँ कौन रहता हैं।"

"वहां धर्म, सत्य, अहिंसा, दया, त्याग का वास है। वहां पहुंचने वाला मोक्ष को प्राप्त होता है और फिर कभी उस गर्त में नहीं गिरता परन्तु इस अंधकार में किसी समय भी तेरा पैर फिसल सकता हैं और तू फिर वहीं गिर पड़ेगा।"

X X X

मैं गिरा·········मुझे बचाओ·········बचाओ·········कोई नहीं सुनता, तुम सब हंस रहे हो चढ़ते समय तुमने मेरी मदद की परन्तु मुझे गिरते देख मेरी हंसी उड़ा रहे हो।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"क्या कहा ? इस मार्ग पर चलने वाले सभी गिरते हैं ऊपर कोई नही टिकता ।"

"………आप कौन हैं ?"

"धर्म ।"

"आपने मुझे बचा लिया मैंने तो आपको ठुकरा दिया था मैंने आप पर अनेकों अत्याचार किये फिर भी आपने………"

अब उठो, मेरे रास्ते पर चलो यह मार्ग कठिन अवश्य है परन्तु ऊपर पहुंच कर कोई नीचे नहीं गिरता…………

—— o ——

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रेम पत्र

लेखक—सिद्धेश्वर दीक्षित

नोट—दिल कभी समानता नहीं देखता। दिल ही तो है—जल्दी फिसल जाता है। एक हैं टैक्सी ड्राइवर सरदार जी, शायद जिन्दगी में पहली बार उन्होंने प्रेम पत्र लिखा है अपनी प्रेमिका को जी हां प्रेमिका भी वह जो उन्हें नहीं जानती, जरा आप भी सुनिये इनके दिल की धड़कनों को —

छाया जी,

अपन को तुम्हारा हुस्न भा गया है। खबसूरत तो बहुत देखा है अपन ने पर अल्लाह कसम जब तुम सामने आता है तो अपन दिल जोर-जोर से किसी खटारा टैक्सी के माफिक उछलने लगता है। अपना दिल बहुत कमजोर होता है। मंगलवार को साला फिफ्टी नाइन का नया माँडल देखा, तो भी यह कम्बख्त बहुत देर तक धड़का किया। पर हम तुमको सच्ची बोलेगा कि हम नया माँडल कभी ले नहीं पायेगा। लेकिन हम जानता नया माँडल की तरह तुम बेजान नहीं है। साला नया माडल दिल नहीं होने को सकता वर्ना वह हमारे मन की बात को पहली मुलाकात में ही समझ लेता।

तुम अपना टैक्सी स्टैंड पर जब फोन करके टैक्सी बुलाया तो अपन का दिल बड़ा उदास था। यह मूजी पेट ने हमको बचपन ही से सता रक्खा है। हमको जैसे बाप समझता है कि रोज इसका पेट भरने को हमारा फर्ज है। छाया जी! क्या तुमको भी यह फर्ज निभाना पड़ता है। पर नहीं हम रास्ता भूल गया, जब कभी भी हम पेट के बारे में सोचता है तो रास्ता भूल जाता है। खैर! पर पहले दिन टेलीफोन पर बताये हुये पते पर जब अपन पहुंचा तो इतने सारे माला (मंजिल) का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कोठी देखकर हैरान नहीं हुआ पर हमारा जी चाहा, जैसा कि हर उस समय चाहता है, जब अपन इतनी बड़ी कोठी के पास से गुजरता है कि अपन को एक माला इधर मिल जाये तो अपना वह गन्दा गरेज छोड़ दे जहाँ सिख लोगों ने कूड़ा फैला रक्खा है, और अपना पूरा लाइफ इधर उधर काट दे। हाँ हमारा जी चाहता रहा और इन्दर लोक की परी बनके तुम बाहर आ गया।

जरा यह कागज अन्दर रखिये। तुम्हारे ऐसे बोलते हो हम जान गया कि तुम बहुत पढ़ा लिखा है। हमने कागज और किताबें जब अन्दर रक्खीं तो हमारा मन किया कि तुमसे पूछे, इत्ता कागज का क्या करेगा। क्या सोने की लंका बनायेगा। चूंकि अपन ने हमेशा इतना कागज गाँधी ग्राउन्ड में तभी देखा है जब रामलीला होती है, सोने की लंका कित्ती अच्छी बनाते हैं।

पर हम ड्राइवर होता है। हम तुमसे पूछ नहीं सकता। तुम अपना टैक्सी में बैठा। हम तुमको एक दूसरे बहुत बड़े बंगले पर छोड़ा। तुम बोला—तीन बजे इधर फिर आ जाइयेगा। सच्ची, तुम हमसे तुम इतनी इज्जत से बोलता कि हम बोत खुश होता। हम रोज तुम्हारे बंगले पर आता और तुम्हें ले जाता तुम इतना इतना कागज रोज ले जाता जैसे रोज ही तुम सोने की लंका तैयार करता है। हम बहुत बार सोचा कि तुम्हारे जैसा लोग क्या काम करता है। अपने लिये तो कुछ न कुछ करता ही होगा पर दुनिया के लिये तुम क्या करता। तुम इतना अच्छा बोलता जैसे कि कोयल कूकता। यह आज के जमाने में कोयल बनके चलने का नहीं है। अपन से कोई पूछे कि तुम 'क्या करता।' सेवा—अपने पेट से बोलता हमारा देश का नेता कहता—सेवा करो। और अपना करता टैक्सी चलाता। साब लोग को इधर से उधर ले जाता। साब लोग है यहाँ हर सब लोग एक अजीब सी सोने की लंका बना रहा है। तुम्हारे सिवा यहाँ कोई सेवा नहीं है, जो हमारी सोने की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लंका का भी ख्याल रक्खे। इधर का साब लोग ऐसा बोलता है जैसे कहता हो—'ए टैक्सी ड्राइवर तुम सोने की लंका नहीं बना सकता। अगर तुम बनायेगा तो हम उसमें आग लगा देगा। पर तुम कैसा बोलता है। तुम्हें इसका काहे ख्याल है कि हमारा भी सोने का लंका है।

हम सच्ची कहता है—अगर तुम इधर बाम्बे में फिल्म एक्ट्रैस बनने आया होता और यहां एक स्ट्रा लड़की का पार्ट करता होता तो अपन बहुत जल्दी तुमसे बात कर लेता। जब तुम टैक्सी से उतरने लगता तो अपन उसका दरवाजे पर हाथ रख के कहा। मेडम पिक्चर देखेगा—पहले तुम मुस्कराता फिर कहा। 'यू नान सैंस, ईडियट, शटअप !

ए, मिस ! नखरा अंग्रेजी में काहे दिखाता है। हिन्दी में दिखलाओ वाके अपन भी समझ ले। हम कहता है। और तुम खुश हो जाता है, क्योंकि हम यह भी जानता है कि तुम अंग्रेजी नहीं जानता। क्योंकि हम यह भी जानता होता कि तुम सिखों के मुल्क पटियाला से सीधा इधर एक्ट्रेस बनने आया है, और पटियाला से जो भी लड़की आता एक्ट्रेस बनने वह एक स्ट्रा बन जाता है, और जो लड़का आता नलिनी जयवन्त से इश्क लड़ाने वह टैक्सी ड्राइवर बनता और हमारे गैरेज में रहता। पर तुम पटियाला से नहीं आया है, हम जानता है हम इधर बोम्बे में पला है। यहां पर दूर-दूर का आदमी आता है। बचपन से ही अजीब अजीब लोगों के साथ रहने से अब अपन को बड़ा तजुर्बा हो गया है पर अपन पढ़ा-लिखा नहीं है, हिन्दी थोड़ा सा लिख लिख लेता है इसलिये यह खत लिख रहा हूं। हम सोचता है जो थोड़ा सा लिखना भी नहीं जानता वह अपने दिल का बात कैसे कहता होगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हम तुमसे पूछता है कि हमारे जैसे बेकार आदमी की बात तुम आराम से सुनेगा भी या नहीं। हम बेकार है ऐसी-ऐसी बातें करता हूँ कि कई बार हमें खुद को बड़ा शर्म लगता है, पर चूँकि तुम बहुत मीठा बोलता है। इसीलिये हमारे दिमाग में यह बात काम कर रहा कि अच्छी अच्छी बात नहीं करेगा तो तुम सुनेगा भी नहीं।

बस! वैसे तो अपन को सिर्फ इतना ही कहना है कि हमको तुम्हारा हुस्न भा गया है। अपन तुमको जब देखता है तो हमारा दिल जोर जोर से धड़कने लगता है। सच्ची आजकल हमने बहुत लड़कियों से बात किया है, झूठ नहीं बोलता, लेकिन इस तरह कांपा कभी नहीं। हमें अभी हो पाया है कि यह खत हम तुमको दे भी पायेगा या नहीं। खैर!

तुम हमको जवाब दो? जो सोने की लंका हम बनाये हैं, कहीं तुम उसे जला तो नहीं देगा। हमको उम्मीद है तुम जलायेगा नहीं।

यह पहली बार है जब हम लड़की की वजह से रास्ता भूल गया है। क्या तुम अपन को रास्ता दिखलायेगा पत्र का उत्तर शीघ्र देना।

तुम्हारा ही:—
वही खटारावाला टैक्सी ड्राइवर

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रजनी——

लेखक—उमाकान्त तिवारी

मन बहुत उदास था, दिल बहलाने के लिये मैंने रेडियो खोला, तलत महमूद की दर्द भरी आवाज सुनाई दी—"सुबह का इन्तजार कौन करे'। उसकी यह आवाज मेरे दिल पर चोट कर गई। मेरा दिमाग भारी हो गया, आंखों के सामने अँधेरा छा गया, फिर मुझे ऐसा अनुभव हुआ, जैसे—एक बड़ा तूफान आ गया है, और हवायें किसी दुःख से पीड़ित हो रही हैं। यह आवाज धीरे-धीरे डूब गई, और एका-एक दूसरी आवाज उभरी—"अब तेरा इन्तजार कौन करे"। मैंने फौरन रेडियो बन्द कर दिया, कमरे में खामोशी छा गई। शमशान भूमि जैसी खामोशी। आखों के सामने अनेक चित्र आने लगे। दिल में पुरानी स्मृतियाँ उभरने लगीं। और वह घाव जो समय के साथ भरते जा रहे थे, एकदम हरे हो गये, न मालूम ख्यालों में मैं कहाँ पहुँच गई। इतने में ही ममी की आवाज सुनाई पड़ी—रजनी………रजनी।"

"जी ममी आई।" और मैं तूफान की तरह भागी। तुम्हारे चाचा जी का माली यह हार दे गया है, बेले के फूलों का हार।"

"ओह माई डियर अँकल। मेरे प्यारे चाचा।" और यह कहकर मैं फूलों को सूघंने लगी। उनकी सुगन्धि मेरे हृदय और मस्तिष्क में छा गई। मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि मेरे उजड़े हुये बाग में फिर से बहार आ गई।

'रजनी ?' ममी ने बड़े ही गम्भीर स्वर में कहा।

'जी' मैंने उत्तर दिया।

"तुम्हारे चाचा जी तुन्हें कितना चाहते हैं। क्यों ?"

"हाँ, ममी मैं उनकी एक ही तो बेटी हूँ।" यह कहकर हार को गले में डाल लिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"और ·····" माता जी के मुंह से इतना ही निकला था, कि टेलीफोन की घंटी बज उठी, और मैं अपने पढ़ने के कमरे में भाग गई।

"हैलो"। "मिस रजनी बोल रही हूँ।"

"देखिए, मैं कल्यटल एशोशियन का सेक्रेट्री बोल रहा हूँ।

"कहिए"। मैंने कहा।

"बात यह है कि अगले सप्ताह 'कन्वोकेशन हाल में एक मनोरंजक प्रोग्राम प्रस्तुत किया जा रहा है। चैरिटी प्रोग्राम है, हम कालेज के गरीब विद्यार्थियों के लिये कुछ फण्ड एकत्रित कर रहे हैं। गाने के आइटम में आपका भी नाम लिख लिया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप मुझे निराश न करेंगी।

"मुझे इसके लिए क्षमा कीजिये।" कहकर मैंने रिसीवर बड़े जोर से रख दिया—"चैरिटी प्रोग्राम" मैं बड़बड़ाने लगी। जी में तो आया कि टेलीफोन पर ही दो चार सुना दूँ। मुझे अब अपने गानों से कोई प्रेम न रहा था। मेरी आवाज का जादू जिस पर काफी गर्व था, और जिसकी प्रत्येक लहर पर मेरा जीवन झूम उठता था, वही मेरे जीवन का रोग बन चुका है, अब तो मैं अधिकतर खामोश रहती हूँ। मेरे साज भी कुन्ठित हो चुके हैं।

"रजनी।" माता जी ने फिर आवाज दी।

'जी', कहकर मैं उनकी ओर जाने ही वाली थी कि वही मेरे कमरे में आ गईं।

मैं तो यह खबर सुनाना भूल ही गई थी··········कहते कहते वह रुक सी गईं।

"रुक क्यों गई ममी ?" मैंने टोकते हुये कहा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

माता जी के होठों पर मुस्कराहट खेल रही थी, बोलीं—कल तुम्हारे चाचा जी आये थे न............

"हां आये तो थे, तो फिर क्या हुआ..........

"कह रहे थे अगले सप्ताह मनोज इंगलैंड से आ रहा है"।

"तो आने दीजिए।" मैंने बड़े रूखेपन से कहा।

"तुम्हें कोई खुशी नहीं हुई ?" माता जी ने मेरे रूखेपन का अनुभव कर लिया था।

"नहीं" मैंने संक्षिप्त सा उत्तर दिया।

"पगली........" ममी मेरे दिल की गहराई तक न पहुँच सकीं। जाते जाते कहती गई "........वाइलन का जो तार टूट गया उसे ठीक करा लेना।"

मेरा वायलन जिससे मुझे बहुत प्रेम था, और जिसे मैं आठों पहर हृदय से लगाकर रखती थी, अब उसकी तरफ आंख उठाकर भी नहीं देखती। मेरे सदा बहार यौवन का रस इसी वाइलन के तारों ने निचोड़ लिया। मैं अब भी केले और जूही की तरह हसती हूँ। लेकिन हृदय के अन्दर जो ज्वाला मुखी दहक रहा है, उसे कौन देख सकता है।

आज से चार साल पहले की बात है। कि बी० ए० का रिजल्ट निकला था, और मैं फस्ट डिवीजन में पास हुई थी, डैडी ने खुश होकर उसी दिन मुख्य मुख्य लोगों को दावत दे डाली। मैंने भी कालेज के दो तीन मित्रों को निमन्त्रित किया। उस दावत में मनोज भी मौजूद था, सारे मकान को दुल्हन की तरह सजाया गया था। मेहमानों में सबसे पहले सुरेन्द्र ने मुझे मेरी सफलता पर बधाई दी। सुरेन्द्र मुझसे एक साल सीनियर था। और पिछले वर्ष बी० ए० पास कर चुका था, मैंने मुस्कराकर उसे धन्यवाद दिया। वह इससे पूर्व भी कई बार हमारे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"और ……" माता जी के मुंह से इतना ही निकला था, कि टेलीफोन की घंटी बज उठी, और मैं अपने पढ़ने के कमरे में भाग गई।

"हैलो"। "मिस रजनी बोल रही हूँ।"

"देखिए, मैं कल्यटल एशोशियन का सेक्रेट्री बोल रहा हूँ।

"कहिए"। मैंने कहा।

"बात यह है कि अगले सप्ताह 'कन्वोकेशन हाल में एक मनोरंजक प्रोग्राम प्रस्तुत किया जा रहा है। चैरिटी प्रोग्राम है, हम कालेज के गरीब विद्यार्थियों के लिये कुछ फण्ड एकत्रित कर रहे हैं। गाने के आइटम में आपका भी नाम लिख लिया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप मुझे निराश न करेंगी।

"मुझे इसके लिए क्षमा कीजिये।" कहकर मैंने रिसीवर बड़े जोर से रख दिया—"चैरिटी प्रोग्राम" मैं बड़बड़ाने लगी। जी में तो आया कि टेलीफोन पर ही दो चार सुना दूँ। मुझे अब अपने गानों से कोई प्रेम न रहा था। मेरी आवाज का जादू जिस पर काफी गर्व था, और जिसकी प्रत्येक लहर पर मेरा जीवन झूम उठता था, वही मेरे जीवन का रोग बन चुका है, अब तो मैं अधिकतर खामोश रहती हूँ। मेरे साज भी कुन्ठित हो चुके हैं।

"रजनी।" माता जी ने फिर आवाज दी।

'जी', कहकर मैं उनकी ओर जाने ही वाली थी कि वही मेरे कमरे में आ गईं।

मैं तो यह खबर सुनाना भूल ही गई थी………कहते कहते वह रुक सी गईं।

"रुक क्यों गई ममी ?" मैंने टोकते हुये कहा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

माता जी के होठों पर मुस्कराहट खेल रही थी, बोलीं—कल तुम्हारे चाचा जी आये थे न............

"हां आये तो थे, तो फिर क्या हुआ..........

'कह रहे थे अगले सप्ताह मनोज इंगलैंड से आ रहा है"।

"तो आने दीजिए।" मैंने बड़े रूखेपन से कहा।

"तुम्हें कोई खुशी नहीं हुई?" माता जी ने मेरे रूखेपन का अनुभव कर लिया था।

"नहीं" मैंने संक्षिप्त सा उत्तर दिया।

"पगली........" ममी मेरे दिल की गहराई तक न पहुँच सकीं।

जाते जाते कहती गई "........वाइलन का जो तार टूट गया उसे ठीक करा लेना।"

मेरा वायलन जिससे मुझे बहुत प्रेम था, और जिसे मैं आठों पहर हृदय से लगाकर रखती थी, अब उसकी तरफ आंख उठाकर भी नहीं देखती। मेरे सदा बहार यौवन का रस इसी वाइलन के तारों ने निचोड़ लिया। मैं अब भी केले और जूही की तरह हसती हूँ। लेकिन हृदय के अन्दर जो ज्वाला मुखी दहक रहा है, उसे कौन देख सकता है।

आज से चार साल पहले की बात है। कि बी० ए० का रिजल्ट निकला था, और मैं फस्र्ट डिवीजन में पास हुई थी, डैडी ने खुश होकर उसी दिन मुख्य मुख्य लोगों को दावत दे डाली। मैंने भी कालेज के दो तीन मित्रों को निमन्त्रित किया। उस दावत में मनोज भी मौजूद था, सारे मकान को दुल्हन की तरह सजाया गया था। मेहमानों में सबसे पहले सुरेन्द्र ने मुझे मेरी सफलता पर बधाई दी। सुरेन्द्र मुझसे एक साल सीनियर था। और पिछले वर्ष बी० ए० पास कर चुका था, मैंने मुस्कराकर उसे धन्यवाद दिया। वह इससे पूर्व भी कई बार हमारे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

घर आ चुका है डैडी भी उसे बहुत चाहते थे, डैडी ने एक बार उसकी तारीफ करते हुए कहा था –"रजनी तुम चाहो तो सुरेन्द्र की बुद्धिमत्ता से लाभ उठा सकती हो। इङ्गलिश लिट्रेचर पर उसे काफी कमान्ड है।"

और मैंने उत्तर दिया था—"डैडी।" शेक्सपियर पर उसकी स्टडी का यह हाल है कि प्रोफेसर तक उसका लोहा मानते हैं। मुझे जब कठिनाई होती है तब उसके पास चली जाती हूँ।

एक दिन तो मैंने ममी को भी डैडी के सामने सुरेन्द्र की प्रसंसा करते हुए सुना। रात का समय था और मैं पढ़ने में लगी हुई थी, दूसरे कमरे का दरवाजा खुला हुआ था. ममी डैडी से कह रही थीं—सुरेन्द्र कितना होनहार और नेक लड़का है, पढ़ाई में भी उसका कोई मुकाबला नही कर सकता है।

और डैड़ी ने जवाब दिया था—"होनहार और नेक होने के साथ-साथ परिश्रमी भी है—मैं जब भी उसके घर गया, उसे किताबों से ही उलझा पाया। सोचता हूँ……इतना कहकर डैड़ी चुप हो गये तो ममी ने पूछा, चुप क्यों हो गए। रजनी के साथ रिस्ते को तो नहीं सोच रहे हो।

डैडी ने अपनी ऐनक उतारते हुए कहा। शायद रजनी उसे पसन्द न करे। 'क्यों।' कि

डैडी एक दम चौंक पड़े जैसे उन्हें नींद से किसी ने एकाएक जगा दिया हो।

माता जी ने उसी तरह गम्भीरता से कहा। इसीलिये कि उसकी शकल सूरत जरा भद्दी है। और मेरी रजनी……इतना ही कह पाई थीं माता जी, कि पिता जी बीच ही में बोल पड़े………तुम्हें रजनी की रुचि से जानकारी नहीं और इतना कहकर डैडी अपनी जगह से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उठकर जब मेरे कमरे की तरफ आने लगे····तो मैं किताब खोलकर उसके पन्ने उलटने लगी।

और जब सारे मेहमान आ गये तो डैडी ने मुझसे वाइलन बजाने की फरमाइस की। सुरेन्द्र यकायक अपनी जगह से उठकर हाँथों में फूलों का हार लिये मेरी तरफ आया और मेरे गले मे हार डाल कर चला गया। हाल तालियों से गूंज उठा। और उसके पश्चात मनोज भी फूलों का हार लिये मेरे पास आया। चंचल दृष्टि से मेरी ओर देखकर गले में हार डालकर चला गया। मैं खुशी से पागल हुई जा रही थी। और फिर मैंने पहली बार इतने लोगों में दर्द भरा गीत छेड़ दिया। मैं स्वयं अनुभव कर रही थी कि यह गीत बाइलिन के तारों से नहीं निकल रहा है। मेरे दिल की धड़कनें अपनी व्याकुलता का प्रदर्शन कर रही हैं। आधे घन्टे तक अपनी दुनियाँ से दूर सितारों से भी आगे बाइलन के तारों से खेलती रही। और जब मेरा हाथ रुका, तो हाल तालियों से फिर गूंज उठा।

सुरेन्द्र मेरे पास आया और कहने लगा। मिस रजनी तुमने भी कमाल कर दिया! कभी बताया भी नही, कि वाइलन इतना अच्छा बजा लेती हो।

मैं उत्तर न दे सकी केवल आँखों के इशारे से मैंने उसकी प्रशंसा का धन्यवाद दे दिया, उसने फिर कहा। सच्ची बात तो यह है, कि तुम्हारा वाइलान सुनकर मेरी प्यास बढ़ गई, कभी हमारे यहाँ यह सुन्दर राग बजाकर मुझ पर एहसान कर सकती हो।

यह पहला अवसर था सुरेन्द्र ने मेरी प्रशंसा की। मैंने उत्तर दिया—"जब तुम चाहो।" इससे आगे मैं कुछ न कह सकी।

वडर फुल। तो फिर कल? कल तुम आ जाना। कहो तो तुम्हें मोटर भेज दूँ। या स्वयं आकर ले जाऊँ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"नहीं मैं स्वयं आ जाऊँगी,-सूर्य अस्त होने से पहले ?" तो रात का खाना मेरे यहाँ ही रहा !

बातें यहां तक ही हुई थी कि मनोज आ गया और आते ही उसने कहा—"यह वाइलन कब सीखा तुमने कभी बताया तक नहीं ?"

"बहुत देर का शौक था; और मैं किसी को बताना भी नहीं चाहती थी।"

मेरा वाक्य पूरा भी न हुआ था, कि सुरेन्द्र मुझसे कुछ कहे बिना चला गया, उसके यकायक चले जाने से मेरे दिल में अनेक विचार आने लगे।

मनोज ने फिर कहा—'रजनी, सम्भवतः तुम्हें मालूम नहीं कि वाइलन मुझे कितना प्यारा लगता था मुझे कितनी प्रसन्नता हुई कि तुमने इसमें निपुणता प्राप्त कर ली है। मेरा दिल एकान्त में कुछ सुनना चाहता है।

मनोज ने पहली बार मुझ से किसी चीज की फरमाइश की थी, दूसरे शब्दों में वह पहली बार मेरे सामने झुका था। उसे सदैव इस बात का गर्व रहा है कि वह इतना रूपवान और सुन्दर है कि दुनिया की सुन्दर से सुन्दर लड़कियां भी उसके पैरों पर अपने आपको निछावर कर देती हैं। ममी और डैडी ने उसके साथ मेरा रिश्ता तय करने की कोशिश की लेकिन वह तैयार नहीं हुआ। मैंने कहा—"क्या सचमुच तुम वाइलन को इतना मानते हो।"

"बहुत ज्यादा" उसने उत्तर दिया ? तो कल प्रोग्राम बना लो। यह सुनकर वह उछल पड़ा और कहने लगा, तो कल रात तुम मेरे घर आ जाना, हम खाना साथ ही खायेंगे।

"नहीं, मैं केवल चाय ही पिऊंगी। लेकिन" क्या क्या, "चाचा को तो बुरा नहीं लगेगा।" नहीं, तो बल्कि उन्हे खुशी होगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जब सारे मेहमान चले गये तो मुझे सुरेन्द्र के एकायक चले जाने का ख्याल आया। मैंने उसे फोन किया। सुरेन्द्र ही बोल रहा था, मैंने कहा, मैं रजनी बोल रही हूँ।

"रजनी इतनी रात खैरियत तो है?" हां सब ठीक है, लेकिन यह बताओ कि तुम मुझसे कुछ कहे ही बिना चले गये। "मनोज आ गया था, इसीलिये? क्यों?" मुझे उसका चाल-चलन पसंद नहीं?

"मुझसे नाराज तो नहीं हो? बिल्कुल नहीं डियर अच्छा गुड नाइट?"

और दूसरे दिन मैं दोपहर को ही बनाव, सिंगार में लग गई? पैरिस का सबसे अच्छा सैन्ट लगाया? जूड़े में गुलाब के फूल सजाये मैं दुल्हन मालूम हो रही थी, मेरी काजल भरी आँखें शराबी की वर्षा कर रहीं थी। अंग-अंग से जवानी टपक रही थी।

ठीक पाँच बजे मनोज के घर पहुँच गई, उसे बड़ी व्याकुलता से मेरी प्रतीक्षा करते पाया। यह मुझे अपने ड्राइंग-रूम में ले गया। कमरा काफी सजा हुआ था। मैं सोफे पर बैठने के बजाय कालीन पर बैठ गई। मनोज भी मेरे पास बैठ गया।

उसने मुस्कराते हुए कहा। कहो तो पहले चाय प्रस्तुत की जाये।

"नहीं, मैंने उत्तर दिया; लेकिन मैंने तो चाय का प्रबन्ध कर रखा है। यह कहकर उसने नौकर को आवाज दी।"

मैं दीवार पर टंगी तस्वीर देखने लगी। और बहुत देर तक देखती रही। यहाँ तक कि मनोज की आवाज ने मुझे चौंका दिया।

"शायद यह तस्वीर तुम्हारे पसन्द आ गई, उसने कहा।" बिल्कुल बेकार है। मैंने मुँह बनाते हुए कहा।

"सच कह रही हो।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"नहीं मैं स्वयं आ जाऊँगी, सूर्य अस्त होने से पहले ?" तो रात का खाना मेरे यहाँ ही रहा !

बातें यहां तक ही हुई थी कि मनोज आ गया और आते ही उसने कहा—"यह वाइलन कब सीखा तुमने कभी बताया तक नहीं ?" "बहुत देर का शौक था; और मैं किसी को बताना भी नहीं चाहती थी।"

मेरा वाक्य पूरा भी न हुआ था, कि सुरेन्द्र मुझसे कुछ कहे बिना चला गया, उसके यकायक चले जाने से मेरे दिल में अनेक विचार आने लगे।

मनोज ने फिर कहा—'रजनी, सम्भवतः तुम्हें मालूम नहीं कि वाइलन मुझे कितना प्यारा लगता था मुझे कितनी प्रसन्नता हुई कि तुमने इसमें निपुणता प्राप्त कर ली है। मेरा दिल एकान्त में कुछ सुनना चाहता है।

मनोज ने पहली बार मुझ से किसी चीज की फरमाइश की थी, दूसरे शब्दों में वह पहली बार मेरे सामने झुका था। उसे सदैव इस बात का गर्व रहा है कि वह इतना रूपवान और सुन्दर है कि दुनिया की सुन्दर से सुन्दर लड़कियां भी उसके पैरों पर अपने आपको निछावर कर देती हैं। ममी और डैडी ने उसके साथ मेरा रिश्ता तय करने की कोशिश की लेकिन वह तैयार नहीं हुआ। मैंने कहा—"क्या सचमुच तुम वाइलन को इतना मानते हो।"

"बहुत ज्यादा" उसने उत्तर दिया ? तो कल प्रोग्राम बना लो। यह सुनकर वह उछल पड़ा और कहने लगा, तो कल रात तुम मेरे घर आ जाना, हम खाना साथ ही खायेंगे।

"नहीं, मैं केवल चाय ही पिऊंगी। लेकिन" क्या क्या, "चाचा को तो बुरा नहीं लगेगा।" नहीं, तो बल्कि उन्हे खुशी होगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जब सारे मेहमान चले गये तो मुझे सुरेन्द्र के एकायक चले जाने का ख्याल आया। मैंने उसे फोन किया। सुरेन्द्र ही बोल रहा था, मैंने कहा, मैं रजनी बोल रही हूँ।

"रजनी इतनी रात खैरियत तो है ?" हां सब ठीक है, लेकिन यह बताओ कि तुम मुझसे कुछ कहे ही बिना चले गये। "मनोज आ गया था, इसीलिये ? क्यों ?" मुझे उसका चाल-चलन पसंद नहीं ?

"मुझसे नाराज तो नहीं हो ? बिल्कुल नहीं डियर अच्छा गुड नाइट ?"

और दूसरे दिन मैं दोपहर को ही बनाव, सिंगार में लग गई ? पैरिस का सबसे अच्छा सैन्ट लगाया ? जूड़े में गुलाब के फूल सजाये मैं दुल्हन मालूम हो रही थी, मेरी काजल भरी आँखें शराबी की वर्षा कर रहीं थी। अंग-अंग से जवानी टपक रही थी।

ठीक पाँच बजे मनोज के घर पहुँच गई, उसे बड़ी व्याकुलता से मेरी प्रतीक्षा करते पाया। वह मुझे अपने ड्राइंग-रूम में ले गया। कमरा काफी सजा हुआ था। मैं सोफे पर बैठने के बजाय कालीन पर बैठ गई। मनोज भी मेरे पास बैठ गया।

उसने मुस्कराते हुए कहा। कहो तो पहले चाय प्रस्तुत की जाये।

"नहीं, मैंने उत्तर दिया; लेकिन मैंने तो चाय का प्रबन्ध कर रखा है। यह कहकर उसने नौकर को आवाज दी।"

मैं दीवार पर टंगी तस्वीर देखने लगी। और बहुत देर तक देखती रही। यहाँ तक कि मनोज की आवाज ने मुझे चौंका दिया।

"शायद यह तस्वीर तुम्हारे पसन्द आ गई, उसने कहा।" बिल्कुल बेकार है। मैंने मुँह बनाते हुए कहा।

"सच कह रही हो।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"जी हां दिल ही से कह रही हूँ ?"

"जरा इन निगाहों का ऊपर उठाकर देखो। बहुत शैतान हो गई हो।

उसके बाद उसने मेरे कन्धों को पकड़ लिया, मेरे शरीर में जैसे बिजली दौड़ गई हो। मेरी हिम्मत जवाब दे चुकी थी, वह मुझे फिर कालीन पर ले आया। मैं बैठ गई और आप ही आप मेरा हाथ वाइ-लन की तरफ बढ़ा। मैंने पाश्चमी धुन छेड़ दी। उसकी बड़ी २ आँखों की पलकें झपकने लगी। और जब मेरा हाथ रुका, तो मैंने मनोज की तरफ गौर से देखा वह मुस्कुरा रहा था, उसने मेरी प्रशंसा के पुल बाँध दिये। उस समय उसकी आँखों में बला का जादू था। मैंने अपने आपको उसके हवाले कर दिया।

मनोज ने बिजली का स्विच आफ किया तो मुझे सुरेन्द्र की दावत याद आई। लेकिन मनोज ने मेरे साथ सैर करने का प्रोग्राम बना लिया था, मैं मना भी नहीं कर सकती थी।

मैंने सोचा, चलो कोई हर्ज नहीं, सुरेन्द्र से माँफी माँग लूँगी। लेकिन मनोज का दिल तोड़ना मेरे बस की बात न थी। हम जमुना के किनारे गये और लहरों को देखकर मन बहलाने लगे। कुछ देर दोनों खामोश रहे। शांत को भंग करते हुये मैंने ही कहा, सुना है तुम इंगलैण्ड जा रहे हो। "तुम्हें दुःख तो न होगा।" नही, सच कह रही हो हाँ, वह फिर चुप हो गया। मैंने फिर जरा छेड़ते हुये कहा, "वहाँ गर्ल-फ्रैन्डस की कमी का रोना तो नहीं रोओगे। गर्ल-फ्रैन्डस की कमी तो यहाँ भी नहीं है। हाँ, वहाँ लड़कियां जरा ओवर कल्चर्ड मिलेगीं। उसने बहुत बेपरवाही से उत्तर दिया।

मैंने उसके इस उत्तर से अपने दिल में एक चोट सी अनुभव की। जी चाहा पतवार उसके हाथ से लूँ। और अपने सर में दे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मारूँ। लेकिन मैंने सहन किया, और साहस बटोर कर एक सवाल किया, शादी कब कर रहे हो।

इस सवाल पर उसे हँसी आ गई और उसने बड़ी गहरी दृष्टि से मुझे घूरते हुए कहा। इंगलैंड में ही किसी से सिविल मैरिज कर लूँगा। इस उत्तर से मैंने अपना सर फटता हुआ सा अनुभव किया। मैंने उसे इतना नीच, कमीना, जलील और इस हद तक पाषाण हृदय नहीं समझा था। तुरन्त सिर दर्द का बहाना करके शीघ्र लौट चलने को कहा।

मैं घर पहुँची तो डैडी ने बताया कि सुरेन्द्र तीन बार टेलीफोन कर चुका है। चाहो तो चली जाओ उसके पास कोई जरूरी काम होगा। मैंने जवाब दिया, डैडी मैं फोन कर लेती हूँ यह लो हाँ ठीक है। और मैं सीधी अपने पढ़ने के कमरे में गई। मैंने फौरन नम्बर मिलाया और उधर घंटी बजने लगी। लगभग आध मिनट बाद सुरेन्द्र ने टेलीफोन उठाया। मैंने सबसे पहले क्षमा माँगी। "मुझे बहुत दुःख है। सुरेन्द्र ?"

उसने अजीब कहकहा लगाया। दिवाने तो नहीं हो गये हो तुम ? "हां दिवाना हो गया हूँ। तुम रूपवती जरूर हो मगर चालाक नहीं। क्या मतलब। मैंने पूछा।" मतलब मनोज से पूँछो, जिसके साथ तुम सैर करने निकली थी। अगर मनोज के साथ तुम्हारा प्रोग्राम बन गया था तो मुझे धोखे में क्यों रखा तुमने।" यह झूठ है, "हो सकता है, मनोज के नौकर ने झूठ कहा हो। "मैं अभी आती हूँ, तुम्हारे पास तुम्हें गलत फहमी हुई है।" नहीं मुझे कोई गलत फहमी नहीं हुई। अब तुम मेरे पास आकर क्या करोगी। बहुत थक गई होगी अब आराम करो।" नहीं मैं अभी आती हूं। "नहीं रजनी ? अगर तुम आई तो मैं नहीं मिलूँगा। और इसके बाद वह गुन-गुनाने लगा। "अब तेरा इन्तजार कौन करे।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हाँ अब मेरा इन्तजार कौन करेगा। इस घटना को अब चार वर्ष हो गये हैं। सुरेन्द्र स्विटजर लैण्ड में सेटिल हो गया है। सुना है, उसने एक जर्मनी लड़की से शादी कर ली है। और मनोज इंगलैण्ड में है। लेकिन वह शीघ्र ही आने वाला है। ममी को आज भी विश्वास है कि मनोज इंगलैंड से आकर मुझसे शादी कर लेगा। कुछ दिनों बाद मनोज इंगलैंड से वापस आया। मैं और ममी उसको लेने हवाई अड्डे गये। जब वह हवाई जहाज से उतरा तो उसके साथ एक लड़की थी, उसे देखकर मेरा दिल घबड़ाया। मगर मनोज ममी से कह रहा था, कि यह हमारे साथ भारत घूमने आई है। कुछ दिनों में वापस चली जायेगी।

मेरे दिल में खुशी का ठिकाना न रहा। कुछ दिन बाद मेरी मनोज के साथ शादी हो गई। हम लोगों की शादी में सुरेन्द्र भी आया था। और हमें एक लाकेट उपहार में दे गया था।

चाचा जी अब भी प्रायः फूलों का हार भेज देते थे। वह फूल हमें बहुत अच्छे लगते थे।

—:o:—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परीक्षा फल या गोरख धंधा —

लेखक — किशन नारायण टण्डन

पन्द्रह दिन से राह देखते देखते आज वह दिन आ ही गया जिसकी लड़के व लड़कियों की अत्यन्त उत्कण्ठा थी, जहाँ देखिये लड़कों की टोलियां बुरी तरह से···· आज बोर्ड के परीक्षा फल की चर्चा में ही तल्लीन हैं।

अरे भाई शम्भू तुमने तो कहा था तीन बजे तक आ जायेगा यहाँ जून की कड़ी धूप में भूखे प्यासे सारा दिन निकल गया। माता जी कह रही थीं, रामू खाना खा ले फिर घर से बाहर जाना पर तुम्हीं बताओ क्या खाना पीना इस समय सुहाता ? अभी लौटकर आया कह कर मैं तो सीधा गोलदरवाजे पर आ गया सुना था टन्डन जी की दुकान पर मास्टरों का जमघट है वहीं पर अखबार सर्वप्रथम आ रहा है। अच्छा चलो चाय ही पी ली जाय मेरा तो मारे प्यास के गला सूखा जा रहा है। अरे रामू तुम्हें भी क्या सूझी खाना पीना तो छोड़ आये यहाँ चाय की सूझ रही है. अरे पीना ही है तो चलो शिवाधार के यहाँ से कोकाकोला पी जाय। उधर मुड़े ही थे कि अचानक एक नई मोटर सर्र से करीब से निकल गई जिसने शायद चौराहे पर ही दो मिनट के लिये ब्रेक लगाया और कुछ अखबार टन्डन जी की दुकान के आदमी को देकर (जो चौराहे पर ही शायद उसी की राह देख रहा होगा)चला गया। अध्यापकों का एक समूह न जाने कहां से टन्डन जी की दुकान पर आ गया जिसमें शायद एक प्रधानाचार्य महोदय जी को मैंने विनम्र भाव से टन्डन जी से एक पेपर ले ही तो लिया। फिर क्या था जिस गड्डे को टन्डन जो इतनी भीड़ में खोलना नहीं चाहते थे। खुल गया फिर क्या था लड़कों की दौड़ कोई कम्पनी बाग से भागा आ रहा है कोई सर्राफा बाजार से मारे भीड़ के टन्डन जी परशान होकर नाही करना शुरू कर ही तो दिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फिर भी उनके सरल स्वभाव पर प्रसन्न हो विद्यार्थियों को उनपर दया आ ही जाती है और वही इस समय भी हुआ। लड़कों के शांत होने पर फिर टन्डन जी ने अखबार देना शुरू किया। करते करते करीब आधा घंटे के उपरांत मुझे भी एक खरीदना पड़ा और यकीन जानिये अखबार लेकर श्यामू के साथ ही एकान्त में जाकर झटपट अपना नम्बर ढूढ़ने लगा मन में बजरंग बली की जय नेत्र अपने नम्बर की खोज में, गला गर्मी से सूख रहा। इन सब बातों को ध्यान करते ही अचानक नेत्र अपने नम्बर के पास रुक ही तो गया ज्यादा नहीं तीसरी श्रेणी में ही उत्तीर्ण हुआ हूँ श्यामू अब घर ही चलूँगा और हां तुम भी चलो न ? इतना कहते हुए उन्हें साथ ले घर आया। माता जी की रोते रोते आँखें सूज सी गई थीं कारण मेरी गरीबी।

बिना पैसे के पढ़ाई फीस वह भी आधी उसमें डर यह कि अगर कहीं फेल हो जाता तो शायद मेरा तो हार्ट फेल ही हो जाता। आप भी सुन लीजिये टिमटिमाते दीपक की रोशनी की पढ़ाई दो जोड़ी कपड़ों में पूरे वर्ष कालेज आना और जाना साथ साथ सूखे भोजन वह भी किसी रोज पिता जी आँख में पानी भर कर कहते रामू ले बेटे कल से तेरी परीक्षाएं शुरू हो रही हैं देख यह रही सत्तू की पोटली और यह रही गुड़। जरा इस समय चिराग बुझाकर जल्दी सोजा क्योंकि सात बजे ही तो कालेज पहुँचना है मेरे पास तो सवारी के पैसे ही नहीं हैं फिर भी तुझे स्कूल मैं साथ ही छोड़ आऊंगा, और परीक्षा के अंत तक कालेज पहुँचाने जाते थे। आज मेरे परिश्रम को देखकर उनको कितनी प्रसन्नता हुई कि चट् से एक चवन्नी मुझे मिठाई खाने के लिये दे ही तो बैठे। मैं भी श्यामू के साथ चाय नाश्ता कर घर से वापस फिर चौक तक वापस आया कुछ चेहरा लटकाये कुछ प्रसन्नता में डूबे चेहरे देखता रहा मन में मुझे भी पिता जी की पुरस्कृत चवन्नी रहं रह कर उछलना चाहती पर नहीं हम गरीब माँ बाप को दुख क्यो दें। यह कहते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैं श्यामू के साथ मंदिर गया और प्रसाद चढ़ा पिता द्वारा प्राप्त किए पैसे को उन तक पहुँचाने का साहस करही तो गया प्रसाद का दोना रूमाल में बाँध पिता जी के लिए प्रसाद घर ले ही तो आया। उस समय पिता जी माँजी से कह रहे थे अब तो हँसो मेरा रामू हाई स्कूल पास हो गया कि अचानक मेरे आने की आहट पाकर मुझे पुचकारते हुए पिता जी ने पुन: कहा अरे रामू! देख! आज तेरी माँ कितनी प्रसन्न है उसने तेरे लिये मिठाई मँगाई है कहते हुए मुझे गोदी में खींच लिया मुझे भी उसी समय प्रसाद की याद आई झट पैर छूने के बाद उनके हाथ में प्रसाद का दोना दे ही तो दिया हम सबने आज कितने वर्षों के बाद भर पेट भोजन का सौभाग्य प्राप्त किया।

अब हम अपने मित्र राजेन्द्र के विषय में परीक्षा संबंधी कुछ मनोरंजक बातें कह रहे हैं। क्योंकि अबकी परीक्षा में गलत प्रकाशन हो गया था। राजेन्द्र मेरा मित्र निवलेट कालेज का छात्र था। जिसका रोल नम्बर १९५८०१ था परीक्षा फल स्वयं उसे तथा उसके अभिभावकों द्वारा अनेक बार देखने पर भी कहीं अखबार में न मिला। मेरा मित्र और उसके परिवार के लोग काफी दुखी हुए, कुछ घंटों के पश्चात मेरे मित्र को सूचना मिली कि उसका नम्बर स्थानीय बालिका विद्यालय की छात्राओं के साथ छपा हुआ है। जोकि खोजने पर सही पाया गया। इसी प्रकार एक छात्रा का नाम प्रथम और द्वितीय श्रेणी में छपा है। इस पर उस छात्रा के माता पिता इस चिंता में हैं कि छात्रा को किस श्रेणी में पास माना जाय अबकी दफे यह परीक्षा की मनोरंजक बातें हैं और लड़कियां और लड़कों का यह गपड़ चौथ परीक्षा में और भी चार चाँद लगा देगा जब रोल नम्बर लड़कियों में पहुँच जाता है तो मेरे मित्र को चाहिए कि वह लड़कियों के ही उस स्कूल में चला जाय।

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

टूटे तार दिल की मज़ार पर

लेखक रवीन्द्र नाथ बहोरे अज्ञात

उसकी मृत्यु क्या हुई कि उसका जीवन एक बार फिर सूखे पत्ते की तरह काँप कर उड़ चला। उसका चमन एक बार फिर उजड़ गया। उसकी जिन्दगी गम के तूफानों में भँवर के बीच कागज की नाव की तरह फँसकर रह गई। उसकी जिन्दगी एक बार फिर उदास हो गई। उसकी उन आँखों में कब्रिस्तान की सी वीरानियाँ एक बार फिर झाँक उठीं, जिनमें कभी किसी के प्यार का सागर लहराया करता था आज··· वही आंखें पुनः उदास हो गईं हैं, उनमें जहर भर चुका है। एक ऐसा जहर जो कि अब उसे पूरी जिन्दगी तिल-तिल कर जलाता रहेगा।

केसर की मृत्यु से सुभाष को जिन्दगी को एक ऐसा धक्का लगा जो असहनीय और अल्पकालीन था। वह तड़प उठा। उसकी जिन्दगी का चमन वीरान होकर रेगिस्तान में बदल गया। वह सोचने के लिये विवश हो गया कि उसकी जिन्दगी में अब क्या रह गया जो वह जिये। जिसके लिये वह जीता था जब वही नहीं रहा तो अब जीकर क्या करेगा? ···और अगर जिये भी तो किसलिये, किसके लिये जिये वह? उसका सब कुछ तो मौत ने अपने दामन में भर लिया और उसके लिये दे गई केवल दम घोंटने वाली यादें, आहें और वीरानियां! एक ऐसी उदासी उसके जीवन पर छा गई है, जिसके लिये बस केवल एक ही उपाय है, मौत। लेकिन वह मरेगा नहीं। आत्म-हत्या वह कर नहीं सकता क्योंकि इतना उसमें साहस नहीं है, फिर वह जानता है कि आत्म हत्या एक पाप है। एक ऐसा पाप जिसका कोई पश्चाताप नहीं है।···जिन्दगी जीने के लिये है, न कि मरने के लिये। मरना तो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सबको एक ही बार है, फिर मैं जिन्दगी से क्यों हारूँ ? जिन्दगी में सुख-दुख तो आते ही रहते हैं, अगर यह न हों तो जिन्दगी का मजा ही क्या है ? जीने का मजा अगर सुख में है तो दुःख में भी, क्योंकि दुख के बिना सुख निस्सार है और इन दोनो के बिना जीवन। किसी शायर ने ठीक ही कहा है—

"जिन्दगी जिन्दादिली का नाम है,
मुर्दा दिल क्या खाक जिया करते हैं।"

सोचते-सोचते सुभाष बहक जाता और शेर की याद आते ही एक दर्द भरी मुस्कान उसके ओठों पर तैर जाती और वह उस गम के तूफान में भी मुस्कुरा उठता, कहता। "बिना काँटों के जिस तरह फूल बेकार है, उसी तरह बिना दुख के जीवन। जिस व्यक्ति के जीवन में दुख नहीं केवल सुख है वह व्यक्ति ही नहीं; क्योंकि जब तक इन्सान पर दुख नहीं छायेगा तब तक वह इन्सान कुछ सीख नहीं सकता। सुख ही सुख इन्सान को हैवान बना देता है और वह अपने जीवन के वास्तविक आनन्द से वंचित रह जाता है। शेक्सपियर ने कहा है—"विपत्ति कभी अकेली नहीं आती। वह जब आती है अपने साथ औरों को भी ले आती है। लेकिन विपत्तियों से जो घबराते नहीं हैं वही उन विपत्तियों के उदर से रत्नों का भण्डार खोज निकालते हैं।" इसलिये मैं अपनी आखिरी सांस तक जिन्दगी का मुकाबला करूंगा। "यही सोचकर वह अपने पागल मन को ढाढ़स बँधाता। लेकिन इस तरह से अगर कोई अपने मन को समझा ले तो फिर वह इन्सान ही क्यों रह जाये, देवता न बन जाये। इसी कारण से सुभाष अन्दर ही अन्दर घुलता जा रहा था। उसके जीवन को बुरे व्यसनों में बुरी तरह जकड़ रक्खा था, जिनमें सबसे प्रमुख था—बेइन्तिहा सिगरेट पान ! जब भी उसे देखिये, उसकी उँगलियों में सिगरेट सुलग रही है।

सुभाष एक माना हुआ आर्टिस्ट था, इस कारण से उसने मकान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के एक कमरे को आर्ट-गैलरी का रूप दे दिया था। उस कमरे में उसके बनाये हुये पोर्ट्रेट्स, चित्र आदि टँगे हुये थे और वहीं बैठ कर वह काम करता था। उस कमरे में चारों ओर रँग और कूँची, तथा पूरे-अधूरे चित्र फैले रहते थे, अतः उस कमरे में कोई भी जाने की हिम्मत नहीं करता था। उसके चित्रों में इतनी सजीवता रहती थी कि यदि कोई देखता तो घण्टों वहीं पर खड़ा रहता; उसकी नजरें ही न हटतीं थी। इसी कारण से आज वह इतना प्रसिद्ध था कि कोने-कोने में उसके चित्रों की धूम मची हुई थी।

आज भी वह अपने कमरे में एक पोंट्रेट के सामने असंतप्त सा बैठा हुआ था। केसर की मृत्यु के कारण उसका मन पिछले एक सप्ताह से किसी भी काम में न लग रहा था। वह हरदम अपने कमरे में बैठा सिगरेट पर सिगरेट फूँकता रहता और सामने रहता एक चित्र! उस चित्र में एक सोलह-सत्रह वर्ष की लड़की खड़ी थी, जो सफेद रंग की साड़ी और काले रंग की धोती पहने हुये थी। उस परिधान में वह लड़की बिल्कुल देवी सी लग रही थी। उसके पीछे पहाड़ियों के बीच उभरते हुये सूर्य की मन्द लालिमा थी। उसी चित्र के समक्ष सुभाष बैठा अपलक उसे निहार रहा था। धीरे-धीरे उसके सम्मुख आज से दो वर्ष पहले की स्मृतियाँ चित्रपट की भाँति नाचने लगीं……

आज से दो वर्ष पहले, सुभाष लखनऊ की भीषण गर्मी से ऊबकर पर्वतों की रानी मसूरी चला गया। उसने सोचा था कि उसकी गर्मियाँ आसानी से वहाँ बीत जायेंगी और कुछ दुर्लभ चित्र भी तैयार हो जायेगें। वहाँ पहुँचकर वह लैण्डोर बाजार में, के घण्टाघर पास, आर्य समाज मन्दिर में एक कमरा लेकर ठहर गया। रोज सवेरे वह अपनी चित्रकारी का सामान लेकर पर्वतरानी की गोद में इधर-उधर निकल जाता और प्रकृति के सुन्दर, मोहक दृश्यों को चित्रपट पर रंगों व तूलिका की सहायता से उतारा करता। ऐसे ही एक दिन वह एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पहाड़ी ढाल की तरफ चल दिया। एक अच्छी सी जगह तलाश कर बैठ गया और बादलों से ढँकी पहाड़ियों को चित्रपट पर सजीव करने लगा। लगभग एक घण्टे में ही उस चित्र में जान आ गई। वह पूरा हो चुका था। चित्र में फिनिशिंग देकर वह कूंची रखने जा ही रहा था अचानक कि नारी कण्ठ की आवाज सुनाई पड़ी—"वाह ! वेल आर्ट,.... वन्डर फुल !" सुभाष कूंची लिये हुये ही पलट पड़ा, देखा तो देखते ही रह गया। वह एक नवयुवती थी, जिसके साथ में एक लगभग सात-आठ वर्ष की एक बच्ची थी। वह सर से पैर तक दूधिया वस्त्रों में थी, चेहरा तप्त सूर्य की भाँति स्वर्णमयी आभा लिये हुये मन्द रक्तिम तथा मन्द पीत वर्षा का रंग लिये हुये था, छरहरे बदन की उस नवयुवती को वह एकटक देखता ही रह गया। सुभाष को अपनी ओर अपलक निहारते देखकर वह शर्मा गई, उसकी पलकें झुक गईं। उसकी काँपती हुई आवाज काँपते हुये होंठों के बीच से सुनाई पड़ी—

"आप मुझे इस तरह से घूर....क्यों रहे हैं ?"

"मैं....मैं आपको घूर कहाँ रहा हूँ ?" सुभाष सटपटा गया और उसी बच्ची के गालों को थपथपाने लगा।

"तो आप घूर नहीं रहे थे ?" उसकी मधुर शोखी भरी खिल-खिलाहट उस वातावरण में गूँज गई।

"मैं आपको घूर थोड़े ही रहा था।...."

"फिर ?"

"मैं तो प्रकृति की इस अनोखी छटा का रसपान कर रहा था।"

"ओह ! तो आप कवि भी हैं ?"

"जी नहीं, फिर भी एक छोटा-मोटा आर्टिस्ट तो हूँ ही।"

"क्यों नहीं ? लेकिन आप छोटे तो नहीं बल्कि मोटे अधिक नजर आ रहे हैं।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"ओह !" कहकर सुभाष हँस पड़ा, सोचने लगा कि अजीब लड़की है—न जान न पहचान, बड़े मियाँ सलाम। "अभी वह सोच ही रहा था कि उसे सुनाई पड़ा—"क्या मैं आपका नाम जान सकती हूँ ?"

"शौक से, बन्दे को सुभाष चन्द्र कहते हैं। और आपका......"

"केसर !" उसके बोलने के ढंग से उसका शर्मीलापन पुनः यू पड़ा. बोली—"आप वही तो नहीं हैं. जिनके चित्र पत्रिकाओं आदि में आते रहते हैं ?"

"जी हाँ, हूँ वही। अगर कोई शक हो तो प्रमाण पत्र प्रस्तुत कर सकता हूँ।"

"मुझे विश्वास है कि आप झूठ नहीं बोल रहे हैं।"

इसी तरह से वह दोनों मिलते रहे। करीब दो साल बाद, एक दिन लखनऊ के पार्क में दोनों मिले। केसर लखनऊ के एक बड़े व्यापारी सेठ हर भजन दास की कन्या थी। उनके यहां कपड़े की दो-दो मिलें चलती थीं, जिन्हें उनके दोनों लड़के देखते थे। दोनों लड़कों की शादी हो चुकी थी, केवल केसर ही क्वाँरी थी। माँ उसकी बचपन में ही मर गई थी। बड़े भाइयों की गोदें भरी हुई थीं। मतलब यह कि घर हर तरह से भरा-पुरा था। केसर ने खुद इस वर्ष बी० ए० फाइनल की परीक्षा दी थी। मई का महीना था। परीक्षाएँ खत्म हो चुकीं थीं कि एक दिन उसके पिता ने दबी जबान से उसके सामने शादी का प्रस्ताव रखा। उसने कहा—"पिता जी, अभी मैं विवाह के पचड़ों में नहीं पड़ना चाहतीं।"

"वाह ! अभी के क्या माने ? अरी भलीमानस, सोच तो सही जरा, कि तेरी उम्र बीस की हो गई है। हमारे यहाँ तो लड़कियों के बचपन में ही विवाह हो जाते थे, लेकिन तेरी माँ की इच्छा थी कि तू बी० ए० पास कर ले......"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"पिताजी पहले की बात छोड़िये । वास्तव में, मैं अभी आगे पढ़ना चाहती हूँ ।"

"जैसे तेरी इच्छा !"

कहकर उन्होंने टाल दिया । और केसर तथा सुभाष का मिलन पूर्ववत चलता रहा । लेकिन आज का समाज प्रेम को ऐसी घृणा की दृष्टि से देखता है, जैसे हम आप मैले के ढेर को । बाइबिल में ईसा ने कहा है—"प्रेम करो और करने दो, क्योंकि प्रेम ही एक एसी वस्तु है जिसके द्वारा ईश्वर तक पहुँचाया जा सकता है । प्रेम को तुच्छ मत समझो, वह परमेश्वर की देन है, वही परमेश्वर है । जिसने प्रेम नहीं किया, वह परम पिता को कभी नहीं पा सकता ।" यही बात हमारे धर्म में भी दूसरे ढंग से कही गई है । किन्तु कौन मानता है, इन सिद्धांतों को ? आज बीसवीं सदी के लोगों, समाज का कहना है कि प्यार पाप है । वाह रे समाज । वाह री समाज की फिलाँसफी !!

समाज का यह निर्माण काला आंचल इन दोनों पर भी पड़ा और केसर के घर वालों ने उसके ऊपर बन्दिशें लगा दीं । उसका घर से निकलना बन्द कर दिया गया । पढ़ाई बन्द कर दी गई । उसके ऊपर कड़ी निगरानी रक्खी जाने लगी । क्योंकि वह किसी से प्यार करती थी न ? वह अपने कमरे में पड़ी-पड़ी आँसू बहाया करती और अन्दर ही अन्दर घुला करती : घर में किसी को भी उसके प्रति सहानुभूति न थी, क्योंकि उनकी नजर में प्यार पाप था ।

बन्दिशों का फल कुछ ही दिनों में सामने आ गया—उसे टी० बी० हो गई । डाक्टरों ने साफ जबाब दे दिया । घर के इलाज से घबड़ाकर उन लोगों ने सेनीटोरियम में भर्ती करा दिया । आज वह उन हैवानों से बचकर सुभाष से आखिरी बार मिलने पार्क में आई थी । उसे पूरी उम्मीद थी कि सुभाष वहीं मिलेगा । वही हुआ भी ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुभाष को उसने अपनी पूरी दर्दनाक कहानी बता दी। वह काँप उठा। इसका रोआँ—रोआँ सिहर उठा। वह विवश हो गया सोचने के लिये—"उफ! क्या एक पिता भी अपनी बेटी को इस तरह की कठोर यातनाएँ दे सकता है? उस बेटी को, जिसे उसने अपने खून से पैदा किया और माँ के रहने पर भी माँ की तरह पाला हो! क्या वह सिर्फ समाज के डर से भयभीत होकर अपनी बेटी को कुत्ते की मौत मरने दे सकता है?····वाह रे मनुष्य! आज तू अपने उसी समाज से डर गया, जिसे कल तूने अपने इन्हीं हाथों से बनाया था। आज तू यह भूल गया कि समाज तेरे लिये है, न कि तू समाज के लिये! समाज को तूने बनाया बनाया है. न कि समाज ने तुझे! अगर तुझे इस बात का इल्म नहीं है, तो होना चाहिये, क्योंकि तू समाज के अन्दर रहता है, समाज तेरे अन्दर नहीं। तू सदियों से यह क्यों भूला हुआ है कि समाज को तूने ही निर्मित किया है, उसकी सीमायें तूने ही बाँधी हैं, उसके बन्धन तेरे ही बनाये हुये हैं।·······और अगर तू जानता है तो, हे मानव! तोड़ दे तू उन बन्धनों को जो तूने बनाये हैं, तोड़ दे उन सीमा-रेखाओं को जो तूने बाँधी हैं, तोड़ दे उस समाज को, जो तेरी जान की ग्राहक है। धर्म-ग्रन्थों में कहा गया है कि यदि किसी की जान बचाने के लिये झूठ भी बोलना पड़े तो भी वह झूठ नहीं है, वह पाप की संज्ञा नहीं पा सकता, कभी नहीं। लेकिन, वाह रे मनुष्य! जान बचाना तो रह-किनार तू जान लेने के पीछे पड़ा हुआ है। इसका कसूर सिर्फ इतना ही तो है कि यह निरीह नारी 'किसी' से मोहब्बत करती है। मैं पूछता हूँ, क्या मोहब्बत करना जुर्म है?····क्या प्यार करना गुनाह है?····और अगर ऐसा है तो, ऐ दुनिया वालों! तुम उस मां पर भी गुनाह का इल्जाम लगा, जो अपने बेटे से मुहब्बत करती है' वह बहन भी गुनाहगार है, जो अपने भाई से मोहब्बत करती है, वह पत्नी भी गुनहगार है, जो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपने पति से मोहब्बत करती है और वह बेटी भी गुनहगार है, जो अपने पिता से मोहब्बत करती है। दुनिया में कौन ऐसा आदमी है, या कौन ऐसी औरत है, जो किसी से मोहब्बत नहीं करता ?"

लेकिन उसके इन सवालों का जवाब देने वाला वहाँ कोई न था। उसके कानों में समाज का निर्मम अट्टहास गूँज रहा था और सामने बैठी थी केसर, जिसका पूरा शरीर केवल एक हड्डी का ढांचा मात्र रह गया था। उसका वह सेब सा मोहक वर्ण पीला पड़ गया था। गाल पिचक गये थे, जिससे गालों की हड्डियां बहुत ही बेढंगे ढंग से उभर आई थीं। आंखें अन्दर धँस गईं थीं और उनके नीचे स्याह गड्ढे पड़ गये थे। सीने के उभार मानों थे ही नहीं। केसर की यह दशा देखकर सुभाष के आंसू आ गये। केसर अपनी क्षीण-प्राय हो चली आवाज में बोली—

"अरे ! तुम तो रो क्यों रही हो ?"

"केसर, मुझसे तुम्हारी यह दशा नहीं देखी जाती।"

"नहीं, नहीं सुभाष, मुझे मत छुओ। मैं……टी० बी० की रोगी हूँ।"

"तो क्या हुआ, मैंने तुमसे प्यार किया था न कि तुम्हारे शरीर से ……और मरते……"

"छिः ! यह क्या सन्ध्या समय अशुभ बातें बक रहे हो।"

कहते हुये केसर ने अपनी सूखी हथेली सुभाष के मुंह पर लगा दी और सुभाष ने उसे पकड़ कर अपने में कस लिया।

इसके बाद फिर वह लगभग एक सप्ताह तक सुभाष से नहीं मिली वह रोज उसी पार्क में उसका इन्तजार करता और निराश हो जाता।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एक दिन सवेरे का समय था, सुभाष अपने कमरे में बैठा था। इधर कई दिनों से उसका मन किसी काम में लगता ही न था। अचानक आवाज आई—"सुभाष बाबू !" "कौन ?" कहता हुआ वह बाहर आया। बाहर एक व्यक्ति, दस-ग्यारह वर्ष की बच्ची के साथ, खड़ा था, बोला—

"क्या आप ही सुभाष बाबू हैं ?"

"हां हां यही हैं।" सुभाष के बोलने से पूर्व ही वह बच्ची बोल उठी। सुभाष उस बच्ची को अच्छी तरह पहचानता था।

"अरे मीनू तुम ?"

"जी, हमें अपना कमरा नहीं दिखाइयेगा ?"

"क्यों नहीं, आओ !"

कह कर सुभाष उस बच्ची, मीनू, के साथ कमरे में आ गया। कमरे में घुसते ही मीनू ने प्रसन्नता से कहा—"अरे वाह, आपका कमरा तो बहुत अच्छा है।"

"हां मीनू, अच्छा यह बताओ कि तुम्हारी बुआ जी की........"

"बुआ जी ? यह चिट्ठी आपको दी है।"

मीनू ने लपक कर साथ के आदमी की जेब से लिफाफा निकाल लिया और सुभाष को दे दिया। उसने जैसे ही खोल कर पढ़ा, उसका चेहरा सफेद पड़ गया। उस पत्र में लिखा था—"पिता जी आदि ने तुम्हें माफ कर दिया है, लेकिन अब तो बहुत देर हो चुकी है। जब तक तुम्हें यह पत्र मिलेगा, सम्भव है कि मैं न रहूँ। क्षमा करना, मैं इन्तजार न कर सकी। अच्छा, विदा। —तुम्हारी केसर।"

"आओ मीनू, चलें !"

कह कर सुभाष, मीनू के साथ बाहर निकल आया और सेनीटो-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रियम की ओर भागा। लेकिन वहाँ कुछ भी न था—पंछी उड़कर स्वछन्द आकाश में अपनी महायात्रा के लिए जा चुका था और शेष था केवल पिंजरा।

सुभाष कराह कर रह गया। और इसके अलावा वह कर भी क्या सकता था ?

सुभाष बैठा हुआ अपने खयाल घोड़ों पर दौड़ा रहा था। हाथ में सिगरेट सुलग रही थी और आँख से आँसू टपक रहे थे। अचानक दरवाजे पर खटखटाहट हुई। "कौन ?" सुभाष का स्वप्न भंग हो गया।

"क्या मैं अन्दर आ सकती हूँ ?" प्रत्युत्तर में नारी कण्ठ की आवाज सुनाई पड़ी। और जब तक वह संभले-संभले एक लड़की ने वहां कमरे में कदम रक्खा। जिसकी उम्र करीब अट्ठारह साल रही होगी। आते ही उसने प्रश्न किया—"भाई साहब यह क्या ? आप यह……… कबसे ?"

"आओ, आओ बेबी बैठो।" सुभाष ने उस लड़की से कहा, वह उसकी बुआ की लड़की वीणा थी।

"भाई साहब, आप यह क्या कर रहे हैं ! जो होना था वह हो ही चुका।"

"हाँ बेबी, लेकिन अपने इस दिल को क्या करूँ जो मानता ही नहीं।"

"वह तो ठीक है भाई साहब, फिर भी अपने को किसी काम में लगा लेने से कुछ गम कम हो जाता है।"

"हां बेबी ! सुभाष ने एक निःश्वास खींची—"बेबी, एक चीज माँगू ?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"भाई साहब........"

"हाँ बेबी, क्या तुम मुझे एक बहन का स्नेह दे सकोगी ? मैं ..... मैं सदा से ही बहन के प्यार का प्यासा हूँ। क्या......क्या........"

"आप भी कैसी बात करते हैं, मैंने कब आपको राखी नहीं बाँधी है।" सुभाष के ढुलक आए आँसुओं को पोंछते हुये वीणा ने कहा।

"बस बहन, मुझे और कुछ नहीं चाहिये। ....मैं......मैं कहते हुये वह फफक पड़ा।

"भाई साहब बस, अब यह औरतों की तरह रोना-धोना बन्द।"

कहते हुये वीणा ने अपने दुपट्टे के आँचल से सुभाष के आंसू पोंछ दिये।

जब एक दुःखी इन्सान किसी की सहानुभूति प्राप्त कर लेता है तो, कहते हैं, उसका गम कम हो जाता है (दुःख कुछ हल्का हो जाता है)। यही बात सुभाष के साथ भी हुई, उसने अपने दुख को जब अपनी बहन, बेबी (वीणा) से कह दिया तो वह कुछ अपने आपको हल्का महसूस करने लगा।

समय के साथ बड़े-बड़े जख्म पुर (भर) जाते हैं, फिर यह तो एक ऐसा जख्म था जिसके विषय में सुभाष का कहना था कि शायद यह कभी नहीं भरेगा। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। वीणा से बहन का नैसर्गिक स्नेह पाकर उसका मन मयूर नाच उठा और वह करीब-करीब अपने गम को भूल भी गया। वीणा भी जब कभी उसे प्रसन्न देखती तो वह प्रसन्नता से झूम उठती कि उसने अपने भाई का, उसकी जिन्दगी को, डूबने से बचा लिया, नहीं तो उसकी जिन्दगी न जाने किस राह पर भटक जाती। लेकिन वाह रे समाज ! तू भाई बहन के शुद्ध प्यार को भी नहीं देख सकता ? तुझे अब भाई-बहन के पवित्र रिश्ते पर शंका होने लगी ? तूने उन्हें भी अपनी गंदी दृष्टि से अछूता न छोड़ा ? तू अब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भाई-बहन को भी.........उफ ! वाहरे समाज, धिक्कार है तेरे ऐसे कलंकित विचारों पर।

आजकल के समाज का यह नियम है कि यदि दो भाई-बहन जवान हैं तो उसकी नजर में वह दोनों भी अपवित्र हैं। यही केस सुभाष के साथ भी हुआ और दुनिया वाले उसके तथा बेबी के मध्य स्थापित पवित्र रिश्ते को शक की निगाह से देखने लगे और उनपर उँगलियाँ उठाने लगे। एक दिन सुभाष ने वीणा से कहा—

"बहन, तुमने मुझे जो स्नेह दिया है वह मेरे अप्राप्य था और शायद कभी भी न प्राप्त होता। न जाने यह मेरे किन पूर्व जन्म के कर्मों का फल है कि मुझे तुम जैसी देवी से भ्रातृ-स्नेह मिला।"

"अच्छा तो अब आप कवि भी हो गये हैं ?" बेबी की वाणी में व्यंग का पुट था।

"जो चाहे कह लो। लेकिन बेबी मेरे लिए यह असह्य है कि कोई व्यक्ति मेरी वजह से तुम्हारी तरफ उँगली उठाये। ऐसे काम पर मैं उसका खून तक कर सकता हूँ, लेकिन तुम्हीं बताओ मैं किस-किस को रोकूँ। हर आदमी तुम्हारे और मेरे संबंध पर लाँछन लगाता है।"

.........." वीणा चुप ही रही। उसकी आँखों में आँसू आ गये।

"मेरी यही कामना है कि तुम सदा सुखी रहो और फूलो-फलो। काश ? मैं इस निर्मम समाज को अपना हृदय चीर कर दिखा सकती। इसके अलावा और करूँ भी क्या ?"

"भाई साहब, आज आपको हो क्या गया है ?" वीणा की आवाज भर्रा रही थी।

"कुछ भी नहीं बहन, पुराना घाव फिर से हरा हो गया। यह समाज वाले किसी को सुखी नहीं देख सकते, क्योंकि वह खुद सुखी नही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हैं। ……अच्छा बहन, अब आज्ञा दो, अगर जीवन रहा तो फिर मिलूँगा।"

कहकर सुभाष उठ खड़ा हुआ। वीणा के चरणों की धूल माथे से लगा कर बोला—"बहन, अगर हो सके तो कभी इस अभागे भाई को याद कर लेना।"

……और वह मकान से निकल कर एक ओर चल दिया। वीणा भी उसे दरवाजे तक छोड़ने आई थी। वह भरी आँखों से अपने उस भाई को जाते हुये देखती रही जिसके ऊपर उसने अपने हृदय का समस्त संचित स्नेह उन्डेल दिया था। लेकिन वाह रे समाज, अजब है तेरी माया!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बेबी मंजू को श्रद्धान्जलि

दीप मेरा बुझ गया है खो गया है प्राण मेरा ।
व्याकुल श्रमित जीवन पथिक का खो गया हो रत्न प्यारा ।।

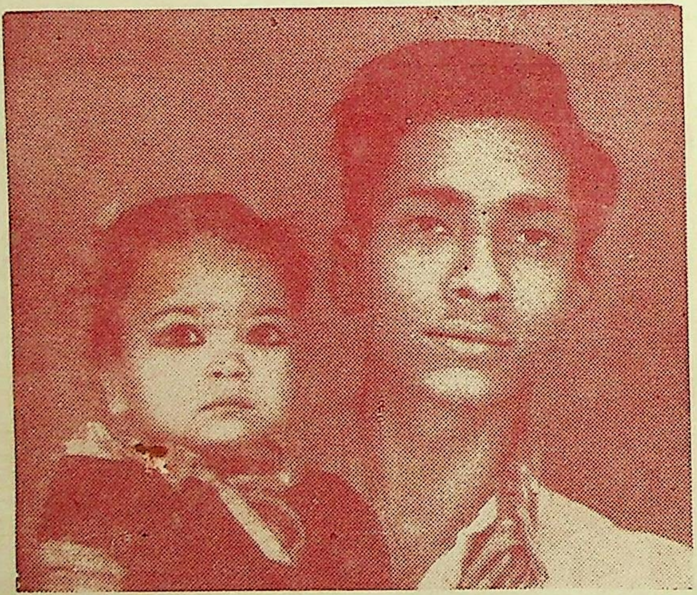

जन्म २० मई १९६० मृत्यु ४ जनवरी १९६४

यह वही मजू है जिसके जन्म से प्रकाशन का नाम क[illegible]ग हुआ है । और मृत्यु में प्रकाशन को जो ठेस लगी है । जिसके कारण हम (वेबी मंजू) को जीवन भर भुला नहीं सकते । नाम अमर करने का साथ ही दावा रखते हैं व्यवस्थापक रमा कान्त त्रिपाठी ।

मंजु प्रकाशन
चौपटियाँ रोड, लखनऊ ।

सरकार प्रिंटिंग प्रेस, ९२ अमीनाबाद पार्क, लखनऊ ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बेबी मंजू को श्रद्धान्जलि

दीप मेरा बुझ गया है खो गया है प्राण मेरा।
व्याकुल श्रमित जीवन पथिक का खो गया हो रत्न प्यारा ।।

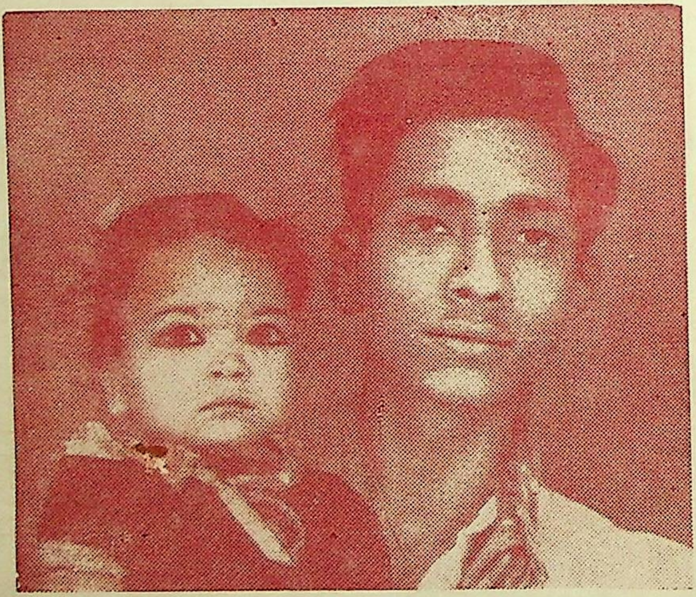

जन्म २० मई १९६०　　　　मृत्यु ४ जनवरी १९६४

यह वही मजू है जिसके जन्म से प्रकाशन का नाम क[illegible]ग हुआ है। और मृत्यु में प्रकाशन को जो ठेस लगी है। जिसके कारण हम (बेबी मंजू) को जीवन भर भुला नहीं सकते। नाम अमर करने का साथ ही दावा रखते हैं व्यवस्थापक रमा कान्त त्रिपाठी।

मंजु प्रकाशन
चौपटियाँ रोड, लखनऊ।

सरकार प्रिंटिंग प्रेस, ९२ अमीनाबाद पार्क, लखनऊ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE